

आराधना

(कश्मीरी, हिन्दी तथा बंगला भक्ति - गीतों सहित)

ARADANA



श्री रामकृष्ण आश्रम

शिवालय, श्रीनगर (कश्मीर)

जून 2, 1983

मूल्य

आराधना

(कश्मीरी, हिन्दी तथा बंगला भक्ति - गीतों सहित)



श्री रामकृष्ण आश्रम
शिवालय, श्रीनगर (कश्मीर)

190010

जून 2, 1983

मूल्य रु० १२/-

प्रकाशक

~~ब्रह्मनाथ कौल~~

मन्त्री, श्री रामकृष्ण आश्रम,
श्रीनगर (कश्मीर)

~~सम्पादक~~

~~अनुमम कौल~~

~~मुख्य~~

~~बन्दी प्रार्थना~~

पुथम संस्कृत 1983
12 वीय संस्कृत 2001

हमारे प्रकाशन

ISBN 81-900842

- 1 मुकुन्दमाला एवं अन्य स्तोत्र रत्न (मूल्य रु० ३/-)
सम्पादक एवं टीकाकार श्री जानकीनाथ कौल 'कमल'
[अन्य स्तोत्रों में उत्पलदेव का संग्रहस्तोत्र, देवीस्तुतिः,
गौरीस्तुतिः (लीलारब्ध०) जयस्तुतिः (जय नारायण०)
शिवस्तुतिः (व्याप्तचराचर०), चामरार्थ शिवस्तुतिः
(अतिभीषण०) आदि अनुवाद सहित हैं।]
- 2 ब्राह्मी विद्या (हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य रु० १/-
- 3 SARADA (Souvenir - 1982) Price Rs. 10/-
- 4 AMBASTAVAH — Hymn to Mother of uni-
verse by Shri Jankinath Kaul (In Press)

प्राप्ति स्थान :—

SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA
SHIVALAYA

P. o. Karan Nagar, Srinagar - 190010 (Kmr.)

मुख्य

दो शब्द

लोकोपकार में लगे देवर्षि नारद के भक्ति-सूत्र के अनुसार 'ईश्वर का भजन' करने को ही भजन अथवा आराधना कहते हैं — 'भक्तिभजनम्' । जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य 'ईश्वर-चिन्तन' को ही भक्ति कहते हैं । स्वयं भगवान् श्री कृष्ण ने अपने सखा उद्धव जी से कहा कि ईश्वर के प्रति प्रेमा-माद को ही भक्ति कहते हैं । ऐसा भक्त त्रिभुवन को पावन करता है :—

वाग्गदगदा द्रवते यस्य चित्तं

रुदत्यभीक्षणं हसति क्वचिच्च ।

विलज्ज उदगायति नृत्यते च

मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति ॥

'ईश्वर-प्रेम से जिसकी वाणी गद्गद होती है, चित्त ईश्वर प्रेम से द्रवित होता है जिसके उद्रेक से वह कभी रो उठता है और कभी हंस पड़ता है ; इस कारण लाज को बिल्कुल ही भूल कर कभी ईश्वर-प्रेम में गाने तथा नाचने लगता है । ऐसा वह मेरा भक्त, तीन भुवनों को पवित्र करता है ।'

सच्चे भक्त के लिए कोई कड़े शर्त नहीं हैं । भगवान् स्वयं कहते हैं—

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।

तदहं भक्त्युपहतमश्नामि प्रियतात्मनः ॥

भगवान् केवल भाव का भूका है । एक आर्तनाद से, एक दिल की पुकार से, एकतान मन के चिन्तन से भगवान् का कोमल से भी कोमल हृदय पसीजता है । ऐसे भक्त को वह सर्वस्व अर्पण करता है । बस भक्त और भगवान् एक (अद्वैत) हो जाते हैं ।

इसी भाव - भक्ति को जगाने वाले पद्य इस 'आराधना' में विशेष ध्यान से चयन करके दिए गये हैं। वैदिक पाठ तथा संस्कृत भाषा में सुन्दर स्तुति - पाठ के अतिरिक्त इस में कश्मीरी, हिन्दी एवं बंगला भाषाओं में भी भजन दिए हैं ताकि भक्तजन इस से लाभान्वित हों।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ॐ तीन लोकों का स्वामी, स्वयं प्रकाश चित्सूर्य, जो वर्णन करने योग्य है, हमें निमल बुद्धि दे जिससे हम कल्याण को प्राप्त हों ॥

तू ने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।

तुझ से ही पाते प्राण हम, दुःख और कष्ट हरता तू।

तेरा महान् तेज है, फैल रहा सभी स्थान।

सृष्टि की वस्तु - वस्तु में, हो रहा है विद्यमान।

तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते हैं यही दया।

ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला।

अनुक्रमणिका

सं०	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक शान्तिः मन्त्रः (वेद)	1
2.	मंगलाचरण	2
3.	पुरुषसूक्तम् (ऋग्वेद)	3
4.	गुरुस्तोत्रम् (विश्वसारतंत्र)	5
5.	प्रातः स्मरणम्	6
6.	स्थितज्ञ लक्षणानि (श्रीमद्भगवद्गीता)	9
7.	उपनिषत् पाठ शिव संगीत	11
8.	श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् (शंकराचार्य)	16
9.	निर्वाणषट्कम् (, ,)	17
10.	श्री काशी विश्वनाथ की आरती	19
11.	भजन	22
12.	लीला अमरनाथऽच—कश्मीरी (परमानन्द)	23
13.	स्वक्त कनि तारख० (कृष्ण जू राजदान)	31
14.	व्यल तय मादल० (, ,)	33
15.	शिवनाथ आनन्द अमरयथ० (, ,)	”
16.	सन्यासय हा गोसाने०	36
17.	मन स्थिर कर मन्त० (ज. न. क. कमल)	37
	मातृ संगीत	
18.	श्रीमहिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्	38
19.	जगजननी जय जय मा० (आरती संग्रह)	41
20.	ॐ श्रीमत् ही भवन्ती० (कश्मीरी)	43
21.	पादि कमलन तल ब आसय०	44
22.	दासस दया म्य करतम०	45

23.	माऽज्य शारिकाय कर दया (त्रिलोकीनाथ)	45
24.	बंगला भजन	47
25.	श्री रामनामसंकीर्तनम्	48
26.	राम भजन (हिन्दी)	58
	श्रीकृष्ण संगीत	
27.	अच्युताष्टकम् (शंकराचार्य)	61
28.	गूकल हृदय म्योन० - कश्मीरी (परमानन्द)	62
29.	गूरें - गूरें करयो० (परमानन्द)	64
30.	बोजि बोजि जसदाय० (नीलकण्ठ शर्मा)	65
31.	जगि अन्धकार चानियिन० ,	67
32.	गूकल तें बिन्दैराबन० (ज. न. क. कमल)	69
33.	हिन्दी कृष्ण भजन	71
	श्री श्री रामकृष्ण संगीत	
34.	खण्डन भव बन्धन० (विवेकानन्द)	74
35.	ॐ ह्रीं ऋतं त्वमचलो० ,,	75
36.	श्रीनारायणी स्तोत्रम्	76
37.	श्रीरामकृष्ण स्तोत्रम् (विवेकानन्द)	77
38.	ॐकारवेद्यः पुरुषः पुराणो (अभेदानन्द)	78
39.	विश्वस्य घाता पुरुषस्त्वमाद्यो० ,,	80
40.	ब्रह्मरूपमादि मध्य-शेष सर्व भासक० (विरजानन्द)	82
41.	हृदयकमलमध्ये राजित० (अभेदानन्द)	84
42.	विशुद्धविज्ञानमगाधसौख्य० (प्रमददास मित्रा)	84
43.	श्रीरामकृष्ण शरणं०	85
44.	भव सागर तारण कारण हे०	86
45.	भव भय भजन पुरुष निरञ्जन०	86
46.	आयस बै लोल चाने० (कश्मीरी)	87
47.	कृष्ण भगवान रामकृष्ण भगवान ,,	89

48.	विष्णु रूपय गदाधरय० (कश्मीरी)	91
49.	रामकृष्ण कर दया वोऽत्र० „	93
50.	आकाशि सिर्य प्रकाश नोऽन० „	94
51.	युथ ना छचनं गछख० „	95
52.	बंगला भजन	96
53.	श्री शारदा स्तोत्रम्	97
54.	अनन्तरूपिणि अनन्तगुणवति०	99
55.	बंगला भजन	99
56.	विवेकानन्दगीतिस्तोत्रम् (शरत् चन्द्र चक्रवर्ती)	100
57.	विवेकानन्द पंचकम् (रामकृष्णानन्द)	100
	विविध संकलन (कश्मीरी)	
58.	लल वाख (ललें द्यद्)	101
59.	गिन्दुनाह छा जिन्दें मरुन० (परमानन्द)	106
60.	वेलें वोत मेलनुक० (कृष्ण जू)	109
61.	टोठान चयें छुख भक्तिभावस० („)	111
62.	भयें रोस्त थावतम जय सानो० („)	113
63.	सज्जन बन मन कर कैलासय० (कृष्ण जू)	114
64.	होश दिम लगयो पंपोश पादन० („)	114
65.	प्रबाथ हो आव अछि मुचराव० („)	115
66.	मनं पोश लागय शेरे० (ज०न०क० कमल)	118
67.	संसार छुय मुहें जजाल० (शारिका देवी)	119
68.	जाँफर्य पोशस छु लक्ष्मी०	120
69.	क्याह ह्यक वनिथ० (गोविन्द कौल)	121
70.	आहमो रोगे रोगे० („)	121
71.	दय नो बुछान० („)	122
72.	रंध मो दि अथ गंध पानस०	123
73.	कष्टें कास्तम म्य भगवान० (लक्ष्मण बुलबुल)	124
74.	घरि घरि पूज कर० („)	125

75.	यस निश सु प्रकाश द्वाव० (वासुदेव)	126
76.	सोऽख शब्द दर्शन चाने० (ठाकुर जू मनवटी)	127
77.	शोकरो डुंग लाय सोदँरस०	128
78.	शरीर ज़ोलनम अम्य हा लोलें नारन (रहीम साँब)	129
79.	अज वाति बूजुम मोलें म्योन० (ज़िन्दा कौल)	130
80.	वछिम गथ चाऽअ दैवागथ० (,)	131
81.	स्मरण पनँअ दिचऽनम० (,)	131
82.	पानय म्य पान हाऽविथ० (,)	132
83.	आमँच मनस रँच वासना०	133
84.	पांछ दोह यावनँनि श्रावणनि सूरी० (कृष्ण जू)	134
85.	हे दय ! बोज़ कनय चयय रोस्त० (विष्णु जी)	135
86.	यियि कति भक्तिस मनि मंज्र भाव० (परमानन्द)	136
87.	रामकृष्ण मनँसँय मन्ज्र वथँरावय०	137
88.	कर्मभूमिकायि दिजि धमुँक बल० (परमानन्द)	138
89.	पांच त्रे भागलिस करारदादस० (,)	141
90.	अर्घरातन गुल्य गण्डिय बोजि ज़ार०	142
91.	ईकुत म्य भास्योम० (ज. न. क. कमल)	143
92.	च शमा छख बँ छस परवान चोनय०	145
93.	जीवो संसार सोरुय भ्रम छुय० (जीवन साँब)	145
94.	द्वैत वृपशम शान्त शिव शाय० (ज.न.क. कमल)	147
95.	पोऽत जूने मोऽत वूजनोवुम० (आफतावजी)	148
96.	लगय पादन बँ पऽरी राजिर्यनि रानिब्रँरी०	150
97.	माऽज भवाँअ सँहस प्यठ सवार (ज. ल. सराफ)	151
98.	सध्यासमय दीप / चोंग / ज़ालिथ	154



वैदिक शान्तिः मन्त्राः

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता, मनो मे वाचि प्रति-
ष्ठितम्, आविरावीर्म एधि, वेदस्य म आणीस्थः, श्रुतं मे
मा प्रहासीरनेनाधीतेनाहोरात्रान् संदधामि, ऋतं वदिष्यामि,
सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतु माम्, अवतु
वक्तारम् ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष-
भिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि, वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथ
बलमन्द्रियाणि च सर्वाणि । सर्वं ब्रह्मोपनिषदं । माऽहं ब्रह्म
निराकुर्यां, मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्तु, अनिराकरण-
मेऽस्तु । तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि संतु
ते मयि संतु । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वयमा ।
शं नो इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे ।

नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म
वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु ।
तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । ॐ शान्तिः
शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ सह नावतु । सह नौ भूनक्तु । सह वीर्यं कर-
वावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै । ॐ शान्तिः
शान्तिः शान्तिः ।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

मंगलाचरण

(हस्तरे वक्राक्षरीय प्रातः संस्य को प्रार्थना)

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति

द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूत

भावातीतं त्रिगुणरहितं सत्गुरुं तं नमामि ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।

तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं

शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च ।

व्यासं शुक्रं गौडपदं महान्तं

गोविन्दयोगीन्द्रमथास्यशिष्यम् ।

श्री शंकराचार्यमथास्यपद्म-

पादं च हस्तामलकं च शिष्यम् ।

तं तोटकं वार्तिककारमन्यान्

अस्मद् गुरुणसन्ततमानतोऽस्मि ॥

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वर्यमा । शं

न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे ।

नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं

ब्रह्मवदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि ।

तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ओं सह नाववतु सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यकरवावहै ।

तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै । ओं शान्तिः शान्तिः

शान्तिः ॥



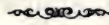
पुरुषसूक्तम्

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम् ॥

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
 उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥
 एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः ।
 पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥
 त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
 ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥
 तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पुरुषः ।
 स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥
 यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
 वसतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्विः ॥
 तं यज्ञं बर्हिषि प्रीक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
 तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥
 तस्माद्यज्ञात् सर्वद्भुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
 छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद यजुस्तस्मादजायत ॥
 तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
 गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः ॥
 यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
 मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥
 ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः ।
 ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥
 चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
 मुस्तादिद्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥
 नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
 पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकां अकल्पयन् ॥

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
 देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥
 यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
 ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या संति देवाः ॥



गुरुस्तोत्रम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
 गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
 तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
 चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 स्थावरं जंगमं व्याप्तं येन कृत्स्नं चराचरम् ।
 तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 सर्वश्रुतिशिरोरत्नसमुद्भासितमूर्तये ।
 वेदांतांबुजसूर्याय तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरजनम् ।
 बिन्दुनादकलातीतं तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 ज्ञानशक्तिसमारूढस्तत्त्वमालाविभूषितः ।
 भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥

अनेकजन्मसंप्राप्त कर्मन्धनविदाहिने ।
 आत्मज्ञानाग्निदानेन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 शोषणं भवसिधोश्च प्रापणं सारसंपदः ।
 यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
 तत्त्वज्ञानोत्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।
 मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 गुरुरादि अनादिश्च गुरुः परमदेवतम् ।
 गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
 ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
 द्वन्द्वतीतं गगनसदृशं तत्त्वं मस्यादिलक्ष्यम् ।
 एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
 भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥



प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरद् आत्म-तत्त्वम्
 सत्-चित्त-सुखं परमहंस-गतिं तुरीयम् ।
 यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
 तद् ब्रह्म निष्कलम् अहं न च भूयस्त्व-यः ॥

भूयस्त्व-यः

प्रातर भजामि मनसो वचसाम् अगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यद् अनुग्रहेण ।
यन् 'नेति नेति' वचनैर् निगमा अवोचुस
तं देव-देवम् अजम् अच्युतम् आहुर् अगरचम् ॥

प्रातर नमामि तमसः परम अर्क-वर्णम्
पूर्णं सनातन-पदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन इदं जगद् अशेषम् अशेष-मूर्तौ
रज्जवां भुजंगम् इव प्रतिभासितं वै ॥

समुद्र-वसने ! देवि ! पर्वत-स्तन-मण्डले !
विष्णु-पत्नि ! नमस् तुभ्यम्, पादस्पशं क्षमस्व मे ।
सरस्वति महाभागे विद्ये कमल लोचने ।
त्रिश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते ॥

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणा वरदण्ड-मण्डितकरा या श्वेत-पद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकर-प्रभृतिभिर् देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा ॥
वक्र-तुण्ड ! महाकाये ! सूर्य-कोटि-सम-प्रभ ! ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव ! शुभ-कार्येषु सर्वदा ॥

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्म-नाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघ-वर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मी-कान्तं कमल-नयनं योगिभिर् ध्यान-गम्यम्
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्व-लोकैक-नाथम् ॥

कर-चरण-कृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा
 श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
 विहितम् अविहितं वा सर्वम् एतत् क्षमस्व
 जय जय करुणाब्धे ! श्रीमहादेव ! शम्भो ! ॥
 न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
 कामये दुःख-तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्ति-नाशनम् ॥
 स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्

न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः ।
 गो-ब्रह्मणेभ्यः शुभं अस्तु नित्यम्
 लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥
 नमस् ते सते ते जगत्-कारणाय
 नमस् ते चिते सर्व-लोकाश्रयाय ।
 नमोऽहं त-तत्त्वाय मुक्ति-प्रदाय
 नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥
 त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं
 त्वमेकं जगत्-पालकं स्वप्रकाशम् ।
 त्वमेकं जगत् कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ
 त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्
 भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्
 गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
 महोच्चैः पदानां नियन्तु त्वमेक
 परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥
 वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो
 वयं त्वां जगत्-साक्षि-रूपं नमामः ।
 सद् एकं निधानं निरालम्बम् ईशम्
 भवाम्भोधि-पोतं शरण्यं ब्रजामः ॥

यं ब्रह्मा-वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यै-स्तवैर्
वेदैः सांग-पद-क्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

स्थितप्रज्ञ - लक्षणानि

अर्जुन उवाच :-

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ! ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत् किमासीत् ब्रजेत किम् ॥

श्री भगवान् उवाच :-

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ ! मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥
दुःखेष्वनुद्विग्न-मनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर् मुनिर् उच्यते ॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस् तत् तत् प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥

यततो ह्यपि कौन्तेय ! पुरुषस्य विपश्चितः ।
 इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥
 तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
 वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥
 ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते ।
 संगत्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
 क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति-विभ्रमः ।
 स्मृति-भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥
 राग-द्वेष-वियुक्तैस्तु विषयान् इन्द्रियैश्चरन् ।
 आत्मवश्यैरु विधेयात्मा प्रसादं अधिगच्छति ॥
 प्रसादे सर्व-दुःखानां हानिर् अस्योपजायते ।
 प्रसन्न-चेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥
 नास्ति बुद्धिर् अयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
 न चाभावयतेः शान्तिर् अशान्तस्य कुतः सुखम् ॥
 इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोनुविधीयते ।
 तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर् नावमिवाम्भसि ॥
 तस्माद् यस्य महाबाहो ! निगृहीतानि सर्वशः ।
 इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥
 या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
 यस्यां जागर्ति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥
 आपूर्यमाणं अचल-प्रतिष्ठं
 समुद्रं आपः प्रविशन्ति यद्वत् ।

तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे

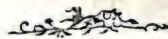
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः ।

निममो निरहंकारः स शान्तिं अधिगच्छति ॥

एषा ब्राह्मी स्थितिः पाथ ! नैनां प्राप्य विमुह्यति ।

स्थित्वाऽस्यां अन्तकालेऽपि ब्रह्म निर्वाणं ऋच्छति ॥



उपनिषत् पाठ

ॐ ईशावास्यं इदं सर्वं यत्किञ्च जगतां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम् ॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

तत् त्वं पूषन् ! अपावृणु सत्य - धर्माय दृष्टये ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्

विश्वानि देव वायुयानि विद्वान् ।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो

भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यं एतः

तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः ।

श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते

प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते ॥

सर्वे वेदा यत्पदं आमनन्ति

तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति ।

यद् इच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति

तत् ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि ॐ इत्येतत् ॥

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथ एव तु ।

बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहं एव च ॥

इन्द्रियाणि ह्यान आहुर् विषयांस् तेषु गोचरान् ।

आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर् मनीषिणः ॥

विज्ञानसारथिर् यस् तु मनः प्रग्रहवान् नरः ।

सोऽश्वनः पारम् आप्नोति तद् विष्णोः परम पदम् ॥

उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत ।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया

दुर्गं पथस् तत् कवयो वदन्ति ॥

अग्निर् यथैको भुवनं प्रविष्टो

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव ।

एकस् तथा सर्व-भूतान्तरात्मा

रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश् च ॥

वायुर् यथैको भुवनं प्रविष्टो

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव ।

एकस् तथा सर्वभूतान्तरात्मा

रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश् च ॥

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्
न लिप्यते चाक्षुषैर् बाह्यदोषैः ।
एकस् तथा सर्वभूतान्तरात्मा
न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥
एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा
एकं रूपं बहुधा यः करोति ।
तम् आत्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्
तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ॥
नित्योऽनित्यानां चेतनश् चेतनानाम्
एको बहूनां यो विदधाति कामान् ।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्
तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् ॥
न तत्र सूर्यो भातिः न चन्द्र तारकं
नेमा विद्यतो भान्ति कुतोऽयं अग्निः ?
तमेव भान्तं अनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥
तवः श्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये
शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्या चरन्तः ।
सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति
यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा ॥
परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान्
ब्राह्मणो निर्वेदं आयात् 'नास्त्यकृतः कृतेन' ।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुं एवाभिगच्छेत्
समित्-पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्म-निष्ठम् ॥

तस्मै स विद्वान् उपसन्नाय सम्यक्

प्रशान्त-चित्ताय शमाविताय ।

येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं

प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम् ॥

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तत्त्वक्ष्यं उच्यते ।

अप्रमत्तेन वेदध्वं शरवत् तन्मयो भवेत् ॥

भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥

ब्रह्मैवेदं अमृतं पुरस्ताद् ब्रह्म

पश्चाद् ब्रह्म दक्षिणतश् चोत्तरेण ।

अधश् चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं

विश्वं इदं वरिष्ठम् ॥

सत्येन लभ्यस् तपसा ह्येष आत्मा

सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् ।

अन्तःशरीरे ज्योतिरमयो हि शुभ्रो

यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ॥

सत्यमेव जयते नानृतम्

सत्येन पन्था विततो देवयानः ।

येनाक्रमन्ति ऋषयो ह्याप्तकामा

यत्र तत् सत्यस्य परमं निधानम् ॥

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो

न मेधया न बहुना श्रुतेन ।

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्

तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम् ॥

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो

न च प्रमादात् तृप्तो वाप्यलिङ्गात् ।

एतैर् उपायैर् यतते यस्तु विद्वांस्

तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम ॥

सम्प्राप्यैनं ऋषयो ज्ञान-तृप्ताः

कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः ।

ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा

युक्तात्मनः सर्वं एवाविशन्ति ॥

वेदान्त-विज्ञान-सुनिश्चितार्थाः

संन्यास-योगाद् यतयः शुद्ध-सत्त्वाः ।

ते ब्रह्म-लोकेषु परान्तकाले

परामृतः परिमुच्यन्ति सर्वे ॥

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे

अस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।

नथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः

परात्परं पुरुषं उपैति दिव्यम् ॥

स यो ह वै तत् परमं ब्रह्म वेद, ब्रह्मैव भवति

नास्याब्रह्मवित् कुले भवति ।

तरति शोकं, तरति पाप्मानं

गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति ॥

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ।

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न विभेति कुतश्चन ॥

एतं हि वाव न तपति 'किम् अहं साधु नाकरवम् ।
किम् अहं पापं अकरवम्' इति ॥

युवा स्यात् साधु युवाध्यायकः
अशिष्ठो द्रढिष्ठो बलिष्ठः ।

तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् ॥

बलं वाव विज्ञानाद् भूयः, अपि ह शतं विज्ञानवताम् एको
बलवान् आकम्पयते । स यदा बली भवति अथोत्थाता
भवति, उत्तिष्ठन् परिचरिता भवति, परिचरन् उपसत्ता
भवति, उपसीदन् द्रष्टा भवति, श्रोता भवति, मन्ता
भवति, बोद्धा भवति, कर्ता भवति, विज्ञाता भवति ॥

“शिव संगीत”

॥ श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय

भस्मांगरागाय महेश्वराय ।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय

तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥

मन्दाकिनोसलिलचन्दनचर्चिताय

नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।

मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय

तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-

सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय

तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-

मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय

तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय

पिनाकहस्ताय सनातनाय ।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय

तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥



निर्वाणषट्कम्

मनोबुद्धयहंकारचित्तानि नाहं

न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।

न च व्योमभूमी न तेजो न वायु-

श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायु-

न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोषः ।

न वाक्पाणिपाद न चोपस्थपायू

चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ

मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।

न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष-

श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं

न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः ।

अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता

चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः

पिता नैव मे नैव माता न जन्म ।

न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य-

श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो

विभुर्व्यापि, सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणि ।

सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः

चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् ॥

श्री काशी-विश्वनाथ की आरती

हरि ॐ जय गंगाधर हरशिव जय गिरिजाधीश,
शिव जय गौरीनाथ ।

त्वं मां पालय नित्यं २ कृपया जगदीश,
ॐ हर हर हर महादेव ॥१॥

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने शिव कल्पद्रुमविपिने
गुंजति मधुकरपुंजे २ कुंजवने गहने ।
कोकिलकूजति खेलति हंसावलिललिता,
शिव हंसावलिललिता ।

रचयति कलाकलापं २ नृत्यति मुदसहिता ।
ॐ हर हर हर महादेव ॥२॥

तस्मिन् ललितमुदेशे शाला मणिरचिता,
शिव शाला मणिरचिता ।

तन्मध्ये हरनिकटे २ गौरी मुदसहिता ।
क्रीडां रचयति भूषारंजित निजमीशं,
शिव रंजितनिजमीशम् ।

इन्द्रादिकसुरसेवित-ब्रह्मादिकं मुनिसेवित-
प्रणमति ते शीर्षम् ।
ॐ हर हर हर महादेव ॥३॥

विबुधवधूर्बहुनृत्यन्ते हृदये मुदसहिता,
शिव हृदये मुदसहिता ।

किन्नरगायनकुस्ते २ सप्तस्वरसहिता ।

धिनकत थै थै धिनकत मृदंग वादयते,

शिव मृदंगवादयते ।

क्वण क्वण ललिता वेणुं २ मधुरं नादयते ।

ॐ हर हर हर महादेव ॥४॥

रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलितं

शिव नूपुरमुज्ज्वलितम् ।

चक्रावर्ते भ्रमयति २ कुस्ते तां धिकतां ।

तां तां लुपचुपतालं तालं नादयते, शिव डमरूवादयते ।

अंगुष्ठांगुलिनादं २ लास्यकतां कुस्ते ।

ॐ हर हर हर महादेव ॥५॥

कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितं, शिव पञ्चाननसहितम् ।

त्रिनयनशशिधरमौलिं २ विषधरकण्ठयुतम् ।

सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालं,

शिव पावकयुतभालम् ।

डमरुत्रिशूलपिनाकं २ करधृतनृकपालम् ।

ॐ हर हर हर महादेव ॥६॥

शंखनिनादं कृत्वा भल्लरि नादयते,

शिव भल्लरि नादयते ।

नीराजयते ब्रह्मा नीराजयते विष्णुर्वेद ऋचां पठते ।

इति मृदुचरणसरोजं हृदि कमले धृत्वा,

शिव हृदि कमले धृत्वा ।

अवलोकयति महेशं, शिवलोकयतिसुरेशं ईशमभिनत्वा ।

ॐ हर हर हर महादेव ॥७॥

रुण्डे रचयति मालां पन्नगमुपवीतं, शिव पन्नगमुपवीतम्
वामविभागे गिरिजा, वामविभागे गौरी,

रूपं ह्यतिललितम् ।

सुन्दरसकलशरीरे मनसिजकृतभस्माभरणं

शिवकृतभस्माभरणम् ।

इति वृषभध्वजरूपं, हर शिवशंकररूपं,

तापत्रयहरणम् ।

ॐ हर हर हर महादेव ॥८॥

ध्यानं आरतिसमये हृदये-इतिकृत्वा, शिव हृदये इतिकृत्वा ।

रामं त्रिजटानाथं, शम्भो हर त्रिजटानाथं, ईशं अभिनत्वा ।

संगीतमेवं प्रतिदिनपठनं यः कुरुते, शिवपठनं यः कुरुते ।

शिवसायुज्यं गच्छति, हरसायुज्यं गच्छति,

भक्त्या यः शृणुते ।

ॐ हर हर हर महादेव ॥९॥

ॐ जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश

शिव जय गौरीनाथ ।

त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां पालय शम्भो, कृपया जगदीश ।

ॐ हर हर हर महादेव ॥१०॥



चंगला भजन

डमरू हर करे बाजे बाजे,
त्रिशूल धर-अंग भस्म भूषण व्याल माला गले विराजे ।
पचवदन पिनाक धर शिव, वृषभ वाहन भूतनाथ,
रुण्ड-मुण्ड गले विराजित अजर अमर दिगम्बर रे ॥

हर हर हर भूतनाथ पशुपति,
योगीश्वर महादेव शिव पिनाकपाणि ।
ऊर्ध्व जलत जटा जाल, नाचत व्योमकेश भाल,
सप्त भुवन धरत ताल टलमल अवनी ॥

ताथैया ताथैया नाचे भोला, बम् बम् बाजे गाल ।
डिमि डिमि डिमि डमरू बाजे, दुलिछे कपाल माल ॥
गरजे गंगा जटा मांके, उगरे अनल त्रिशूल राजे ।
धक् धक् धक् मौलिबन्ध ज्वले शशांक भाल ॥

तुंहि जगत गुरु तुंहि परमेश्वर,
आदि अनादि पिनाकधर शंकर ।
तुंहि भरण-पोषण कर सबको तारण,
सृजन प्रलय तुमसे होये विश्वेश्वर ॥
भाल चंद रुण्ड माल शोभित,
वृषभ वाहन और जग अध हर ।
जटाजूट मांके गंगा विराजित
घन्य घन्य महादेव तुंहि योगेश्वर ॥

“कश्मीरी भजन”

लीला अमरनाथच

—महाकवि परमानन्द

१. मन थिर कर पूजुन प्रभू
मंतर पर शिव - शम्भू
२. दीह गोफि सत-च्यथ आनन्द लिंग
मन पीठस प्यठ ब्यूठ निसंग
लूख दप्यतनस कैलास श्रंग —मन०
३. कन थव सरस्वती छय वनन
वन्य वन्य पान छुयना सनन
नाम रूप वनि भ्योन भ्योन वनन —मन०
४. लीला यि छय अमरनाथचिय
दीह-दार सान ईकान्तचिय
शम-दम गोफ प्रशान्तचिय —मन०
५. ‘त्राहि माम’ पर यात्रा च कर
हर-म्बख गननुय पान वर
गोफि मेन यि गुफ छे बराबर —मन०
६. गोड गणपतयारुक गणीश
दूर मो जान रुजिथ च निश
मूलाधार द्वारुक महीश —म०

७. ब्रह्मा युस सृष्टि करतार
स्वाधिष्ठान सुराह्यार
षट्दल शन्मुख जन कुमार —मन०
८. शिवपोरि फेर कुण्डलने
फेर वज्र प्राण तत जल कनै
सथ समुदुर सनि वोगने —मन०
९. अष्टदल सु द्राव पम्पोष डल
यूर्य फेर नोरकुन मो च डल
व्यचार अछ त संसार चल —मन०
१०. ह्यूर ह्यूर पख न्यूर न्यूर वात
दूर प्योमुत छुक कव वशात् ?
गथ प्रावनच बोझ कथ त बाथ —मन०
११. तीर्थ रोस्त मा कुनि कांह पोदा
वेदन ति उँकार विन पदा
जीवन मुक्त परमात्मा —मन०
१२. नाभिदीशि दशदल संगमस
यम्य चाऽव्य लूख सत्संग मस
कृष्णस स्थावर - जंगमस —मन०
१३. अंच अंच फेर चक्रवर सय
प्रदिक्षण कर च मन्दर सय
दीव पूज श्याम सोन्दर सय —मन०

- १४ मन्दर मुछ त वुछ त चन्द्रयार
सांपनिय तति हर चन्द्रयार
विजयेश्वरी जन्म जन्म पार — मन०
- १५ कऽज त्रऽविथ वात थऽजवोर
लऽज तति शिव जटा चवपोर
अनाहत मण्डलस थाव खोर — मन०
- १६ छचफ छुड ह्यथ वात छोण्डबल
विशुद्ध चक्रच जीव थल
दीव-पूज कर जीव-भाव चल — मन०
- १७ मंज्य वात खिलनस त खेलनस
पानय जि पानस मेलनस
तील जन तेलस तेलनस — मन०
- १८ वातखय वति वति वीरसिरन
तति छिय न वातान वीर सिरन
द्वर्ज वाव सत्य बलवीर इरन — मन०
- १९ पुशराव पान परमेश्वरस
प्रदिक्षण कर तत मन्दरस
वऽतिथ रोज मामलीश्वरस — मन०
- २० मन निश दूर कर लय व्यक्षीप
नऽविथ गणीशस सऽर्य लीप
चलनय त सुय गव रत्नदीप — मन०
- २१ भर्ग तीर्थ प्यठ छुय स्वर्गद्वार
वर्ग निश मशिरिथ मो च प्रार
भाव अघ-पुष्प पूजा छे सार — मन०

- २२ रेन्जल त्रऽविथ रीन्ज्य पल
वऽतिथ निशानस मो च डल
कर्मस त धर्मस सूर फल —मन०
- २३ कण्ठ दीश युस च्वदाह भवन
नील गंगि प्यठ बोज वावजन
तति तोर पवनय ओत दवन —मन०
- २४ मन्जिल छु मंज्य मज्य वारयाह
छोट वनून मोट बोज वारयाह
अक्रिया द्वारच यिय क्रिया —मन०
- २५ लऽजिम छु यिय यिय तिय वनव
नन वऽर्य वातव कोर वनव
थकि युस त दपि पगाह वनव —मन०
- २६ ईश-दीश उत्तम शोषनाग
ह्यकखय त तत्य द्यन-राथ जांग
राग त्राव प्राव महा वैराग —मन०
- २७ त्याग पंचकृत पंचतरंग
सत-समुद्रकिय च्यथ-तरंग
पद्म-नाभस छिम यिम ति रंग —मन०
- २८ खस्त अस्त अस्त पंचालसय
सोऽहं भैरव-बालसय
टख युथ न लगि अति लालसय —मन०
- २९ जिन्द रोज बोज जिन्दय मरुन
गर्भ-यात्रायि अपोर तरुन
सतिये छु ततिये शिव वरुन —मन०

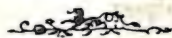
- ३० शोज्रिथ संकल्प निशि मन
रशि-राग रोस्त काल-दीश मन
शिहलिथ ईश अनीश मन —मन०
- ३१ छिय परा त पश्यन्ती पशन
मध्यमा त वेखरी मा पशन
यिछ अवस्था छे तप-ऋषन —मन०
- ३२ युस छु परमात्मा त वटकनाथ
यस छिय भैरव विताल साथ
यम्य कऽरख स्वयंवर वशात् —मन०
- ३३ भाव अमरावतिये च नाव
मल बभूत छल गृहस्थ भाव
शिव-पादन पान पुशिराव —मन०
- ३४ रूदमुत गुफि युस शुद्ध त बुद्ध
नव निघ अधीन तस त अष्टसिद्ध
आकाशवत् केह न घट त बड —मन०
- ३५ नंग मोत हंग तय मंग रोज
ईश्वर दर्शन शब्द बोज
लय कर त ध्यान दयि घर सोज —मन०
- ३६ गुफि मंज गुफि वात पनत्रे
त्राव दीवियि त दिक्ता अन्ये
छचनि छन यिम बभूत कत्रे —मन०
- ३७ कनि मंज लाल सुय मजि मंज
छनिरुक छोत्र छोत्र रुनि मंज
तप कर दीह अरण्य मंज —मन०

- ३८ सोऽहम्-शब्द प्रथम प्रणवय
आज्ञा शिखरस त्राव रवय
तालव कपूत आलवय —मन०
- ३९ सहस्रदल लयगत च प्राव
ब्रह्मरंध्रस छु निष्कल स्वभाव
दम चे दमाले कर त क्राव —मन०
- ४० पकवत्र छि द्वारस मथ मथान
थान गव जि यति बिहान वोथान
समाधि मंज युथ ह्यू व्युथान —मन०
- ४१ पननुय पान पानस चमुन
यिय चमुन तिय समुन तिय शमुन
अस्त्य वुहुन लोलनार अस्त्य हमुन —मन०
- ४२ युथ थान छुन प्रोवमुत यमन
तिमवय जोन ब्रून्ठच आव यिमन
परमात्मा परजऽनिथ यि मन —मन०
- ४३ जिसमें जोगी आ पडा
जाग्रत स्वप्नय पिंगला इडा
उतरा वहां कोई ना चढा —मन०
- ४४ भंवरा कमल में जब बडा
अभिनासी नाही सब कडा
और था कोई ना बडा —मन०

- ४५ तति फोरुवुन अनाहत नाद
स्वप्न-अन्त त सुषुप्तायि आद
तुर्या त तुर्यातीत समाध —मन०
- ४६ फीरिथ इडायि किन्थ संगमस
रस पूरणमय खोतमुत त वस
तति श्राद करुन छुय यस ब तस —मन०
- ४७ गोफ वल च व्रजविथ तस शिवस
यस रोस्त छु न कांछा चितस
पान पुशिरावुन छुय च्य तस —मन०
- ४८ शिव शिव ध्यान निश मो च डल
चम छय प्रकृत पुरुषस म वल
कोर यि चित्रकार मायायि छल —मन०
- ४९ यव कित्र शिव जानख च्वपश्य
रोजनय न केह पापअ भार्य
भवसर चे सार छुय शिव-तार —मन०
- ५० युन गळुन छुय चिन्मात्रा
ज्ञानियस यिय वुछुन यात्रा
पननी छे वननी वारता —मन०
- ५१ तृप्त नव द्वार वात नव दल
व्रजतिथ चलिय जन्मच बदल
दीह यात्रा गयि यिय सफल —मन०

- ५२ दीह छुय वोनमुत दीवद्वार
संसार जंगलुक देवदार
दान कर दान ज्ञान दीह उधार —मन०
- ५३ फेरुन छुयन अद त्रिभुवनस
वसतिथ तत् विष्णु-भुवनस
यमलस त कमलस त भवनस —मन०
- ५४ वुज्जनस छु जल निर्मल उजल
नित्य-नेम वस भवानि-बल
वुधि-मन वाति भवानि-बल —मन०
- ५५ भर्ग पाद पूज संसर्ग नेर
चमकिय स्वप्रकाशिय अनेर
चलनय जन्म-जन्मक्य बखेर —मन०
- ५६ भर्ग रूप नव दुर्गा च मान
स्वर्गलूकक्य छिय तस्य नमान
इष्ट दीवी छे पननी प्रमाण —मन०
- ५७ देवी सु पारवती सती
मज्ज्य यस वोनुख मीनावती
शिव तस वरणिय आव ततिय —मन०
- ५८ ही देवी मय दया करुम
हर हर हर शाप पाप हरुम
कर्मफल वुछनय वुज्ज वरुम् —मन०

५६ शिव-शक्त अख त नामरूप भ्योन
 पान बोझ मानि क्चाह नोन वनुन
 परमानन्द पानस बनून
 मन थिर कर पूजुन प्रभू ॥



म्बक्त कनि तारख छिस तापदानस
 छम ईशानस पोशि - पूजाह ॥

आकाशि पोशि - वर्षुन हनि - हनि छुस
 रथवान कनि छुस सूर्य देवता ।
 सायवान बन्योमुत छुस आसमानस ॥ छम०

डचकस प्यठ चन्द्रम प्रजलान लाल छुस
 वाव - लूकपाल छुस करान गजिगाह ।
 ब्रह्मा त विष्णु छिस सस्त्य ज पानस ॥ छम०

चित्रग्वपथ ताह छुस करान सामानस
 इन्द्राज म्वरछल - बरदार छुस ।
 धर्मराज थोवमुत प्यठ धर्म - दानस ॥ छम०

सत - ऋषि सथ जल हचथ मन्ज बानस
 अतर कोफूर छचकान छिस ।
 सतवय ग्रहदि छिस हचथ विमानस ॥ छम०

गंगासागर हचथ छस गंगा
 वुद जलान छस दीपमाला ।
 लक्ष्मी मीठच छचस दिवान दामानस ॥ छम०

नाबद आपरान महाविद्या छस
 करान जमुना छस वावजि वाव ।
 द्वद मज्ज्य सरस्वती सज्ज्य छस पानस ॥ छम०
 जंगि थाल अनवन्य छस पान सिद्धा
 व्यूग लेखान छस कर्मलेखा ।
 आत्मरूप वसवुन छु मनकिस थानस ॥ छम०
 वासुक त शेषनाग शेरि बरदार छिस
 रत्नन हुन्द मुक्त-हार छुस नज्ज्य ।
 घट चज्ज्य गाश आव सारिसय जहानस ॥ छम०
 कुवीर जी त वरुण छिस खरच - बरदारय
 सोर स्वर्गद्वारय सज्ज्य सज्ज्य ह्यथ ।
 रथ छिख गंडिमत्य मंज्र मैदानस ॥ छम०
 डचकस ^{प्यट} चन्दन टचोक छुस तीजवानस
 बुथिस छुस क्वरोर सूर्युक तीज ।
 छस दया गुल्य गंडिथ तस दयावानस ॥ छम०
 अर्घ कर मनस त पोश कर प्राणस
 कृष्ण पूजायि लाग सन्निधानस ।
 जालिय पाफ गालिय अज्ञानस
 सोय छि भगवानस पोश - पूजा ॥



व्यल तय मादल व्यन गुलाब पंपोश दस्तय
पूजायि लागय परमशिवस शिवनाथस तय ॥

जटामुकुट जट-गंगा वसान छस तय
दोवियि-देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस-वस्तय
भक्तियि-भाव जय जयकार अऽसिन तस तय ॥ पूजाय०

दयासागर लोल-विजयाय करनस मस तय
हा पोशमत्यो ! होश बल मनि थव ध्यान ह्यस तय
असोर संसार छलरावान सोर रोजि कस तय ॥ पूजायि०

पऽरच-पऽरच लगहाय शिव-शंकर शिवनावस तय
दर्शन च्यान्युक छु म्य यछ लोल यच् हावस तय
टोठतम शिवजी जगत् ईश्वर छुस बेकस तय ॥ पूजा०

पंपोश पादव सऽत्य यितम अस्तय अस्तय
चरनन वन्दय जुव त जान ह्यथ वलिजि वस तय
यिन चानि सऽतिन पोत्र बुज्यम नागरादस तय ॥ पूजा०
अमरनाथस नीलकण्ठस शेरि लागस तय
दयायि सऽतिन कृष्णस प्यठ आर यियितन तस तय
तवय कृष्णो अर्पण गछ शिवनावस तय
पूजायि लागस परमशिवस शिवनाथस तय ॥



शिवनाथ आनन्द अमर्यथ चावतम
सत्गुरु हावतम गटि - मंज गाश ॥
यति छुख छारथ कथ वो मकानस
गोमुत छुस अज्ञानस मंज
ओन छुस जऽज हंज वथ वुछनावतम ॥ सत्गुरु०

वोलनस संसारचि मायायि
 मोकलय चानिय वोपाय सज्य
 दयायि हंजय नजराह वावतम ॥ सत्गुरु०
 छुय काम - क्रूध - लूभ - मुह - अन्धकारय
 ममताय सज्य व्यस्तार म्योन
 समतायि सज्य यमि मंज मोकलावतम ॥ सत्गुरु०
 सन्तोष व्यचार सत्संग धमंय
 खटनय आयम क्वकमंय सज्य
 अनिच्छायि परम - गथ प्रावनावतम ॥ सत्गुरु०
 अन्दरय युस छुम आनन्द - मन्दरय
 तथ्य मन्ज करयो यूग - पूजा
 वोपनिषदन हन्ध सिर म्यति वावतम ॥ सत्गुरु०
 लोकचार अन्ध गोम घरके क्षूभय
 जवान छुस रछतम लूभय - निश
 बुजर छु नजदीख मत मन्दछावतम ॥ सत्गुरु०
 ब्रह्मण जन्म दिथ मत मन्दछावतम
 नब - प्यठ बोन मत दावतम दब
 अमरनाथो अमर बनावतम ॥ सत्गुरु०
 दासन हुन्द दासाह गन्जरावतम
 मत मशरावतम पनज ज्ञान
 यति छुख पानय तोत वातनावतम ॥ सत्गुरु०
 अजपा - जप यज्ञ ज्योत प्रजलावतम
 होत - शेष ज्ञन मचरावतम मे
 हे महेश दीश दीश मत दशरावतम ॥ सत्गुरु०

सथ - च्यथ - आनन्द अमर्यथ चावतम
 न्यथ भासनावतम सोऽहं - सो
 ॐ शिव शम्भू शब्द शमरावतम ॥ सत्गुरु०
 मन - नागस प्रेम - पोत्र वुजनावतम
 सुलि वुजनावतम त हावतम रूप
 मंजु प्रभातस सातस म सावतम ॥ सत्गुरु०
 मोह - मायायि सऽत्य मत तम्बलावतम
 सतचिय कथ पावनावतम याद
 च्यतकुय चेतुन न्यथ चेतनावतम ॥ सत्गुरु०
 सतकि निर्णय पय पकनावतम
 दय पननिय नयि हावतम वथ
 नाव छुम कृष्ण शिव - भाव वडरावतम
 स्वदि वानिनि पऽठच हावतम रूप ॥ सत्गुरु०
 वोपदीश सऽतिन वुछथय त्रावतम
 सऽत्य मा आस्यम कुनि केह लीफ
 ब्रह्मानन्दसय प्यठ वार थावतम ॥ सत्गुरु०
 ध्यानच नदियाह निर्मल करिथय
 योग - पानि सऽत्यन बरिथय छह
 वय तन नावय चय मन नावतम ॥ सत्गुरु०
 ज्ञानकि न्यथरय वार मुचरावतम
 पंपोश जन फोलरावतम मन
 अद्वैत - भाव सऽत्य पानस छावतम ॥ सत्गुरु०
 मूल - तल ओसुस निर्मल पोन्युय
 व्यवहार प्रक्रच कोरनम यख
 निर्णय गर्मिय सऽत्य व्यगलावतम ॥ सत्गुरु०

नाव छुम कृष्ण छम चऽनिय आशय
 हावतम सत् चित्त आकाशय
 संसारस मंज पुश मत पावतम
 सत्पुरु हावतम गटि मंज गाश ॥

—५२—

सन्यासय हा गोसाने
 कुनि कने यिखना वने ॥

जटि मंज छय गंगा जारी
 जन छि वसान अमृत धारी ।
 सूर - भस्मा वलिथ छु तने ॥ कुनि०
 डचकस प्यठ छिय यिम अय न्यथरय
 शुभवज्र छिय पम्पोश वथरय
 वासुक नाग छुय योनि कने ॥ कुनि०
 जाय च्य रटथम शिन्याशयन
 छोप छायि हचथ रूदुख नयन
 सर्वव्यापक छुख हनि हने ॥ कुनि०
 खास वृषभा छुय वाहने
 सऽर करान छुख त्रिभुवने
 छय च्य उमा खोहवुरि कत्रे ॥ कुनि०
 पान म्यान्यो मो नाज तने
 काल वृथ यथ सूर बने
 शिव च गारुन मंजबाग मने ॥ कुनि०
 अर्जतिस कास्तम अर्चरय
 गट कास्तम अमरीश्वरय
 मोख च हावतम हरमोख कने ॥ कुनि०

शिव शंकर

मन स्थिर कर मन्तर पर—

शिव-शंकर शम्भो !

मन शु'द बनि साक्षात् ननि-
हनि हनि गटि मंज गाश
सुविचार ब्ययि श्रद्धायि पर—शिव०

प्रभातस अच्छ मन्दिरस
गंग-जल तन न विथ
ध्यान-धारणायि मनि मंज सुर—शिव०

शिवनाथस गोंड दि अशि-जल
शेरि लागुस भाव पोष
मन-प्राण वार, तुता कर—शिव०

इन्द्रिय नैवेद्य सोम्बराव
मन-त्रामरि मन्ज थाव,
देह-दीप जा'लिथ वार, पर—शिव०

वासनायि धूप थव दज्जवुन
विज्ञान-दीप व्रज्जवुन
व्यज्ज-पूर्वक व्यज्जना कर—शिव०

सहस्रदल 'कमल' फोलराव
शिव-अनुग्रह यिथ प्राव,
शिव नित सु'र चलि ज्य त, मर,—शिव०

मातृ संगीत

श्रीमहिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते । १।

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनगोषिणि शंकरतोषिणि कित्विषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते । २।

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणि तुङ्गहिमालय शृङ्गनिजालय मध्यगते ।
मधु मधुरे मधुकैटभगंजिनि कैटभभंजिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते । ३।

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशृङ्गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते ।
निजभुजदण्ड निपातितखण्ड विपातितमण्ड भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते । ४।

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभूते
चतुरविचार घुरीण महाशिवदूतकृत प्रमथाधिपते ।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूतकृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते । ५।

अयि शरणागत वैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे ।
दुमिदुमितामर दूंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पादिनि शैलसुते ।६।

अयि निजहं कृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते ।

शिव शिव शुम्भ निशुम्भमहाहव तपित भूत पिशाचरते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पादिनि शैलसुते ।७।

धनुरनुसंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटकटके

कनक पिशंगपृषत्कनिषगरसद्भटशृंग हतावटुके ।

कृतचतुरंग बलक्षितिरंग घटद्वहुरंग रटद्वटुके

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पादिनि शैलसुते ।८।

जय जय जप्यजये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते

भ्रण भ्रणभिक्षिभिमि भिक्षितनूपुर सिजितमोहित भूतपते ।

नटितनटार्थ नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पादिनि शैलसुते ।९।

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते

श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते ।

सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पादिनि शैलसुते ।१०।

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते ।

विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक भिल्लिकभिल्लिक वगंवृते ।

सितकृतफुल्लि समुल्लसित कृणतल्लजपल्लव सल्ललिते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पादिनि शैलसुते ।११।

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतंगज राजपते

त्रिभुवनभूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते ।

अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते । १२।

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते

सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले ।

अलिकुलसंकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्वकुलालिकुले

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते । १३।

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मंजुमते

मिलितपुलिंद मनोहरगुंजित रंजितशैल निकुंजगते ।

निजगुणभूत महाशबरोगण सद्गुणसंभूत केलिलते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते । १४।

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे

प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चन्द्ररुचे ।

जितकनकाचल मौलिपदोजित निर्भरकुंजर कुम्भकुचे

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते । १५।

विजितसहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते

कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुसुते ।

सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते । १६।

पदकमलं कहरानिलये वरिवस्यति योज्जुदिनं स शिवे

अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।

तवपदमेव परंपदमेवनुशीलयतो मम किं न शिवे

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते । १७।

कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनुसिचिनुते गुणारंगभुवं

भजति स किं न शचीकुचकुंभ तटीपरिरंभ सुखानुभवम् ।

तवचरणां शरणां करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवम्

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते ।१८।

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकल ननु कूलयते

किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।

मम तु मतं शिवनामधने भवति कृपया किमुत क्रियते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते ।१९।

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे

अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिस्ते ।

यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पदिनि शैलसुते ।२०।

श्री दुर्गा जी

जगजननी जय ! जय !! मा ! जगजननी जय ! जय !!

भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय ।०।

तू ही सत - चित - सुखमय - शुद्ध ब्रह्म - रूपा ।

सत्य सनातन सुन्दर पर - शिव सुर - भूषा ।१।

आदि अनादि अनामय अविन्नल अविनाशी ।

अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी ।२।

अतिकारो, अधहारी, अकल, कलाधारी ।
 कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहारकारी ।३।
 तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया ।
 मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी, जाया ।४।
 राम कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा ।
 तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ।५।
 दश विद्या, नव - दुर्गा, नाना शस्त्रकरा ।
 अष्टमातृका, योगिनी, नव - नव - रूप - धरा ६।
 तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू ।
 तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू ।७।
 सुर - मुनि - मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा ।
 विवसन विकट - सरूपा, प्रलयमयी धारा ।८।
 तू ही स्नेहसुधामयि. तू अति गरलमना ।
 रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि - तना ।९।
 मूलाधारनिवासिनि, इह - पर - सिद्धिप्रदे ।
 कालातीता काली, कमला तू वरदे ।१०।
 शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी ।
 भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले ! वेदत्रयी ।११।
 हम अति दीन दुखी मां विपत - जाल घेरे ।
 हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।१२।
 निज स्वभाववश जननी ! दयादृष्टि कीजै ।
 करुणा कर करुणामयि, चरण - शरण दीजै ।१३।

कश्मीरी भजन

ॐ श्रीमत् ही भवऽनी छयम म्य आशा वऽनी
 क्षणसय मंज दुःख त संकट दूर करतय सऽनी ।
 छख च अरदाह भुज भवऽनी छख सहस प्यठ चय सवार
 अन्ध अन्ध च्य देवता सऽरो छिय करान च्यय जारपार
 अष्टसिद्धि अऽधीन छय पाद चऽन्य न्यथ छलऽनी ।०।
 सिरिय तय व्ययि चन्द्रम छुय प्रारान च्यय हुकमस
 कर मऽज्य भवऽज करि आज्ञा प्रकाश बनि जगतस
 चानि प्रकाशि किन्य छु सन्तुष्ट त्रिभुवन रोजऽनी ।०।
 यलि इन्द्राज व्ययि दीव अन्य तंग महिषासुरनय
 इन्द्राज आव च्यय शरणय पादन च्य प्योय परनय
 पत पत तस देवता आयि फकहत्य त दोरऽनी ।०।
 भूजिथ तिहुन्द हाल अहवाल अद महिषासुर च्यय
 वातनोवथन पाताल त्यलि जीर दिवथस खुर सऽत्य
 मोकलऽविथख भय निशि दीव करथक मेहरबानी ।०।
 ॐ शब्द छख सर्वशक्तिमान महामाया च्यय वनान
 काम क्रोध लोभ व्ययि अन्धकार भूत्यन छख च कासान
 वऽनी भूत्य शिवशक्तिरूप ध्यान चोन धारऽनी ।०।
 बोजान छख विनती चय यति चोनुय छु दरबार
 चानि हुकम सऽत्य सारि जगतुक छु चलान अद कारबार
 अस्यति आमत्य अर्ज करने दोरान त लारऽनी ।०।
 मऽज्य वोजतम छय म्य हाजथ अख भक्ती वऽनिय
 घरि घरि रोजतम च सन्मोख हृदयस मंज भवऽनी
 सरस्वती हुन्द प्रसाद युथ म्य बनि नेर्यम अमृत वऽणी ।०।

पादि कमलन तल ब आसय, करनि चऽनिय अस्तुती
 मोक्ष दिम बोड वर म्य दिम माज्य भर्ग-शाखा भगवती ।
 गोम न्यत्रन खून जऽरी छुस च्यकुन जऽरी करान
 भास प्रत्यक्ष कास खऽरी अस्य छि पापव बलिमऽती ।०।
 चानि आशायि योत ब आसय नावोमेद नेरय न जांह
 या म्य वर दिम मोक्ष दामुक नत छुसय प्रारान यतिय ।०।
 लोल बागस पोश फोलिमत्य वेरि चाने चार्य चार्य
 शेरि लागय भाव कोसम शोलवनि कारे पती ।०।
 क्याह वनव अस्य मन्दछेमऽत्य चन्द छयनि सौदा करान
 कर दया वज्र वुछ म तथ कुन शमि सऽत्य अस्य गलिमती ।०।
 चऽन्य ग्वण व्यस्तारनुक ताकत अनि कुस कस बनिय
 छुय च्य जय जय श्याम सोन्दरी जाम शूमान छिय छतिय ।०।
 ज्ञान दाता मोक्ष दाता छख जगथ माता च छख
 ही भवऽनी कर म्य वऽणी स्यद्ध मोखस दिम सरस्वती ।०।
 पज्जि मन युस भस्त्य चऽनी करि निष्कल रात दिन
 क्या छु संशय तसन्दि बापथ मोक्ष दामकि बर वथिय ।०।
 च्यऽन्य ग्वण छुस बो व्यचारान पन ओमकि खारान ब छुस
 अबसनऽकि वर दोन कुनुय कर नत छु आछुर कऽत्य कती ।०।
 सर्वव्यापक छख च्वपऽरी अस्य छि चऽरी क्या वुछव
 वन च्य रोस्त कुस बोज्जि जऽरी हाव मोख प्यठ परबती ।०।
 कर्महीनन धर्महीनन कर्त्तव्यन सान्यन म वुछ
 डाल स्योद अथ कर्म लान्यन प्रक्रमस चऽनिस खतिय ।०।
 वीलजऽरी बोज्ज दासस रोज्ज सन्तुष्ट सर्वदा
 छुय च्य रोशन छुस ब तोषण चऽय म्य बखचुम थज्ज गती ।०।

दासस दया म्य करतम, छखय निर्विकार दीवी ।

चरणन तल म्य वरतम, करतम उदार दीवी ॥

छखय सृष्टि-स्थिति कर्त्ता, भक्त्यन च पान भर्त्ता
विश्वरूप ही अकर्त्ता, छखय उँकार दीवी ।

सन्तुष्ट न्यथ म्य आसुम, मंज ध्यानसय म्य भासुम
च्यथ शायि चय विकासुम, दिमि सत्विचार दीवी ।०।

त्र्यन कारण च शक्ती, दिमि म्य पनज भक्ती
बनिहे म्य यूग मुक्ती, चत्यम अन्धकार दीवी ।०।

योगीश्वरन च भासान, प्रथ शायि चय विकासान
यिम सोक्त दिल छि आसान, तिमहय छिय हुशार दीवी ।०।

चय छख बन्धु-भ्राता, चय छख पिता त माता
चय छख गुरु त दाता, बोजतम म्य जार दीवी ।०।

दिमि स्मरण म्य अन्तर, भासतम अन्दर त न्यवर
सन्तापकुय छु म्य जर, ऐ च्यथ स्फार दीवी ।०।

हा दास ! गछ च अर्पण, शुद्ध कर मन दर्पण
आनन्द बनिय विलक्षण, साक्षात्कार दीवी ।



मऽज्य शारिकाय कर दया वर दया ही भवानी ।
कर दयायि हंज दृष्टि सोय छम बऽड मेहरबानी ।

अस्य हय आमत्य अज च्य निश योर कर्म - बुर्य भावऽनी ।
मतय वुछत कर्मस कुन अस्य छि सऽरिय पशेमऽनी ।

कोत तान्य रोजि युन त गछून कोत तान्य रोजि क्रेशुन वदुन ।
तार दिवान सारिनय छख असि ति रोज तारऽनी ।

ओश वसान दारि - दारे मऽज्य भवऽअ हावि दर्शन ।
केंहनय छम तगान बोजुन केंहनय छुस ब जानऽनी ।

नख छल्य डख छल्य चय न्य सिवा काहनय म्योनय ।
 दोह त रात चोनय फिरान अख सदा यि रूहा'नी ।
 कुपुत्र छि माजि आसान, मज्ज्य छ न जाँह ति रोशान ।
 अस्य मंगान चरनिय दया जगतच राजि रज्जी ॥
 अष्टादशभुजा छल जगतस बजरज्जी ।
 अस्य हय आमत्य छि डेडि तल अनुग्रह छिय मंगज्जी ॥
 पाप-शाप कास्तम चय वालतम भाज्य पापज्ज ।
 गौर कोरहस ब पापव केहनय छुम न तगज्जी ।
 दास आव चोन दरबार दारि ओश छूम वसज्जी ।
 कन थव बोज फरियाद नाद छुसय दिवज्जी ॥
 लोकचारस मशिय गोम बुजरस छस स्वरान दय ।
 काँह गाफिला न म्य हयुव कजिलि पाज सारज्जी ॥
 भक्तिस ~~द्विज~~ हाव सन्मुख रोजि जगतस । यक्षि
 लोल चानि दोह तय राथ नाले छुसय दिवज्जी ॥
 वज्रमुत छ हलि मुश्किल वन्य तवय अस्य आयि योर ।
 अख रछा करत वज्र गौर हिमालच राजिरानी ॥
 दास छम दर इन्तिजार भवसागरस दिमि तार ।
 ल्यम्बि मंज पम्पोश खार बोजतय च म्यज्ज जसरी ॥



बंगला भजन

श्यामा मा कि अमार काल रे ।

लाके बले काली कालो, आमार मन तो बले ना कालो रे ॥

कखनओ श्वेत कखनओ पीत कखनओ नील लोहित रे,
(आमि) आगे नाहि जानि केमन जननी, भाविये जनम गे लो रे,

कखनओ पुरुष कखनओ प्रकृति कखनओ शून्यरूपा रे,
(माथेर) ए भाव भाविये कमलाकान्त सहजे पागल होलरे,

मजलो आमार मन-भ्रमरा श्यामपद नील कमले ।

(श्यामपद नील कमले, कालीपद नील कमले)

यत विषय मधु तुच्छ हल कामादि कुसुम सकले ॥

चरण कालो भ्रमर कालो कालोय कालो मिशे गेले,

पंचतत्त्व प्रधान मत्त रंग देखे भंग दिले ॥

कमलाकान्तेर मने, आशापूर्ण एतो दिने ॥

(ताय) सुख दुख समान् हल आनन्द-सागर उथले ॥

मा त्वं हि तारा, तुमि त्रिगुण घरा परात्परा ।

आमि जानि ओ जो दीन दयामयी, दुर्गमेते दुखहरा ॥

तुमि जेले तुमि स्थले, तुमि आद्यमूले गो मा,

आद्य सर्वघटे अक्षपुटे, साकार आकार निराकारा ॥

तुमि संध्या तुमि गायत्री, तुमि जगद्धात्री गो मा,

(तुमि) अकुलेर आणकत्री, सदा शिवेर मनोहरा ॥

मदानन्दमयी काली, महाकालेर मनमोहिनी ।
(तुमि) आपनि नाच, आपनि गाओ मा आपनि दाओ मा
करतालि ।

आदिभूता सनातनी शून्यरूपा शशी - भाली ।
ब्रह्माण्ड छिल ना जखन, मुण्डमाला कोथाय पेलि ॥
सबे मात्र तुमि यंत्रो आमरा तोमार तन्त्रे चलि ।
(तुमि) जेमनि नाचाओ तेमनि नाचि, जेमनि बलाओ
तेमनि बलि ॥

अशान्त कमलाकान्त दिये बले मा गालागालि ।
(एवार) सर्वनाशी धरे असि धर्माधर्म दुटो खेलि ॥

श्रीरामनामसंकीर्तनम्

प्रणाम :

श्रीनाथे जानकीनाथे अभेदः परमात्मनि ।
तथापि मम सर्वस्वः रामः कमललोचनः ॥

ॐ श्रीरामचन्द्राय नमः ॥

स्तव :

वर्णानामर्थसंधाना रसानां छन्दसामपि ।
मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥१॥
भवानीशंकरो वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणी ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम् ॥२॥
वन्दे बोधमय-नित्यं-गुरुं शंकररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥३॥
सीतारामगुणग्राम - पुण्यारण्यविहारिणी ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानी कवीश्वरकपीश्वरौ ॥४॥

उद्धवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
 सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥५॥
 यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः
 यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।
 यत्पादः प्लवमेव भाति हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावताम् ।
 वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥६॥

प्रसन्नतां यो न गताभिषेकत
 स्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः ।

मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे
 सदास्तु सा मञ्जुमंगलप्रदा ॥७॥ *ins*

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं
 सीतासमारोपितवामभागम् ।

पाणौ महासायकचारुचापं
 नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥८॥

मूलं धर्मतरोविवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददम्
 वैराग्याम्बुजभास्करं त्वघहर ध्वान्तापहं तापहम् ।
 मोहाम्भोधर पुञ्जपाटनविधौ खे संभवं शंकरम्
 वन्दे ब्रह्मकुले कलंकशमनं श्रीरामभूप्रियम् ॥९॥

सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरम्
 पाणौ बाणशरासनं कटिलसत् तूणीरभारं वरम् ।
 राजीवायतलोचनं धृतजटा जूटेन संशोभितम्
 सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥१०॥

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
 शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।

मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवन्तौ हि तौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥११॥

ब्रह्माश्रमोधिसमुद्भवं कलिमलंप्रध्वंसनं चाव्ययम्
श्रीमच्छंभुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सवदा ।
संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनम्
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥१२॥

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माश्रमभुक्कणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिम्
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥१३॥
केकिकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नम्
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानम्
नौमीढ्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥१४॥
आर्तनामार्तिहन्तारं भीतानां भयनाशनम् ।
द्विषतां कालदण्डं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम् ॥१५॥

श्रीराधवं दशरथात्मजमप्रमेयं

सीतापतिं रघुकुलान्वयरलीदीपम् ।

आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं

रामं निशाचरविनाशकरं नमामि ॥१६॥

वैदेहीसहितं सुरद्रमतले हैमे महामण्डपे

मध्ये पुष्पक आसने मणिमये वीरासने संस्थितम् ।

अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनीन्द्रैः परम्

व्याख्यातं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥१७॥

प्रार्थना

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ।

संकीर्तनम्

ॐ श्रीसीता - लक्ष्मण - भरत - शत्रुघ्न - हनुमत् - समेत

श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीनामरामायणम्

बालकाण्डम्

१.	शुद्धब्रह्मपरात्पर	राम
२.	कालात्मकपरमेश्वर	राम
३.	शेषतल्पसुखनिद्रित	राम
४.	ब्रह्माद्यमरप्रार्थित	राम
५.	चण्डकिरणकुलमण्डन	राम
६.	श्रीमद्दशरथनन्दन	राम
७.	कौशल्यासुखवर्द्धन	राम
८.	विश्वामित्रप्रियधन	राम
९.	घोरताटकाघातक	राम
१०.	मारीचादिनिपातक	राम
११.	कौशिकमखसंरक्षक	राम
१२.	श्रीमद् अहल्योद्धारक	राम
१३.	गौतममुनिसंपूजित	राम
१४.	सुरमुनिवरगणसंस्तुत	राम

१५.	नाविकधावितमृदुपद	राम
१६.	मिथिलापुरजनमोहक	राम
१७.	विदेहमानसरञ्जक	राम
१८.	त्र्यम्बककार्मु कभञ्जक	राम
१९.	सीतापितवरमालिक	राम
२०.	कृतवैवाहिककौतुक	राम
२१.	भार्गवदर्पविनाशक	राम
२२.	श्रीमद् अयोध्यापालक	राम
	अयोध्याकाण्डम्	
२३.	अगणितगुणगणभूषित	राम
२४.	अवनीतनयाकामित	राम
२५.	राकाचन्द्रसमानन	राम
२६.	पितृवाक्याश्रितकानन	राम
२७.	प्रियगुहविनिवेदितपद	राम
२८.	तत्क्षालितनिजमृदुपद	राम
२९.	भरद्वाजमुखानन्दक	राम
३०.	चित्रकूटाद्रिनिकेतन	राम
३१.	दशरथसंततचितित	राम
३२.	कैकेयीतनयार्थित	राम
३३.	विरचितनिजपितृकर्मक	राम
३४.	भरतापितनिजपादुक	राम
	अरण्यकाण्डम्	
३५.	दण्डकवनजनपावन	राम
३६.	दुष्टविराधविनाशक	राम
३७.	शरभंगसुतीक्ष्णाचित	राम
३८.	अगस्त्यानुग्रहवर्धित	राम

३६.	गृध्राधिपसंसेवित	राम
४०.	पंचवटीतटसुस्थित	राम
४१.	शूर्पणखातिविधायक	राम
४२.	खरदूषणमुखसूदक	राम
४३.	सीताप्रियहरिणानुग	राम
४४.	मारीचातिकृदाशुग	राम
४५.	विनष्टसीतान्वेषक	राम
४६.	गृध्राधिपगतिदायक	राम
४७.	शबरीदत्तफलाशन	राम
४८.	कबन्धबाहुच्छेदन	राम

किष्किन्धाकाण्डम्

४९.	हनुमतसेवितनिजपद	राम
५०.	नत्सुग्रीवाभीष्टद	राम
५१.	गवितबालिसंहारक	राम
५२.	वानरदूतप्रेषक	राम
५३.	हितकरलक्ष्मणसंयुत	राम

सुन्दरकाण्डम्

५४.	कपिवरसंततसंस्मृत	राम
५५.	तद्गतिविघ्नध्वंसक	राम
५६.	सीताप्राणाधारक	राम
५७.	दुष्टदशाननदूषित	राम
५८.	शिष्टहनुमद्भूषित	राम
५९.	सीतावेदितकाकावन	राम
६०.	कृतचूडामणिदर्शन	राम
६१.	कपिवरवचनाश्वासित	राम

६२.	रावणनिधनप्रस्थित	राम
६३.	वानरसैन्यसमावृत	राम
६४.	शोषितसरिदीर्घार्थित	राम
६५.	विभीषणाभयदायक	राम
६६.	पर्वतसेतुनिबन्धक	राम
६७.	कुम्भकणशिरच्छेदक	राम
६८.	राक्षससंघविमदंक	राम
६९.	अहिमहिरावणचारण	राम
७०.	सहतदशमुखरावण	राम
७१.	विधिभवमुखसुरसंस्तुत	राम
७२.	खस्थितदशस्थवोक्षित	राम
७३.	सीतादर्शनमोदित	राम
७४.	अभिषिक्तविभीषणनत	राम
७५.	पुष्पकयानारोहण	राम
७६.	भरद्वाजाभिनिषेवण	राम
७७.	भरतप्राणप्रियकर	राम
७८.	साकेतपुरीभूषण	राम
७९.	सकलस्वीयसमानत	राम
८०.	रत्नलसत्पीठास्थित	राम
८१.	पट्टाभिषेकालंकृत	राम
८२.	पार्थिवकुलसम्मानित	राम
८३.	विभीषणापितरंगक	राम
८४.	कीशकुलानुग्रहकर	राम
८५.	सकलजीवसंरक्षक	राम
८६.	समस्तलोकाधारक	राम

उत्तरकाण्डम्

८७.	आगतमुनिगणसंस्तुत	राम
८८.	विश्रुतदशकण्ठोद्भव	राम
८९.	सीतालिंगननिर्वृत	राम
९०.	नीतिसुरक्षितजनपद	राम
९१.	विपिनत्याजितजनकज	राम
९२.	कारितलवणासुरवध	राम
९३.	स्वगतशम्बुकसंस्तुत	राम
९४.	स्वतनयकुशलवनन्दित	राम
९५.	अश्वमेधक्रतुदीक्षित	राम
९६.	कालावेदितसुरपद	राम
९७.	आयोध्यकजनमुक्तिद	राम
९८.	विधिमुखविबुधानन्दक	राम
९९.	तेजोमयनिरूपक	राम
१००.	संसृतिबन्धविमोचक	राम
१०१.	धर्मस्थापनतत्पर	राम
१०२.	भक्तिपरायणमुक्तिद	राम
१०३.	सर्वचराचरपालक	राम
१०४.	सर्वभवाभयवारक	राम
१०५.	वैकुण्ठालयसंस्थित	राम
१०६.	नित्यानन्दपदस्थित	राम
१०७.	राम राम जय राजा	राम
१०८.	राम राम जय सीता	राम

प्रार्थना

भयहर मंगल दशरथ	राम
जय जय मंगल सीता	राम

मंगल कर जय मंगल	राम
संगत शुभ विभवोदय	राम
आनन्दामृतवर्षक	राम
आश्रितवत्सल जय जय	राम
रघुपति राघव राजा	राम
पतितपावन सीता	राम

स्तवः

कनकाम्बर कमलासन-जनकाखिल	धाम
सनकादिकमुनिमानस-सदनानघ	भूम
शरणागतसुरनायक चिरकामित	काम
धरणीतल-तरण दशरथनन्दन	राम
पिशिताशन-वनितावध-जगदानन्द	राम
कुशिकात्मज-मखरक्षणा-चरिताद्भुत	राम
धनिगौतम-गृहिणीस्वजदध-मोचन	राम
मुनिमण्डल-बहुमानित-पदपावन	राम
स्मरशासन-सुशरासन-लघुभञ्जन	राम
नरनिर्जर-जनरंजन सीतापति	राम
कुसुमायुध-तनुसुन्दर कमलानन	राम
वसुमानितभृगुसंभव-मदमर्दन	राम
करुणारस-वरुणालय नतवत्सल	राम
शरणं तव चरणं भवहरणं मम	राम

श्रीराम प्रणामः

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥१॥

रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे ।

रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२॥

श्रीहनुमत् प्रणामः

अतुलितबलधामं स्वर्गशैलाभदेहम् ।

दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।

सकलगुणनिधानं वानरानामधीशम्

रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥१॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।

रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥२॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।

कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लकाभयंकरम् ॥३॥

उल्लङ्घ्य सिन्धो सलिलं सलीलं

यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।

आदाय तेनैव ददाह लंकां

नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥४॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं

जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरग्रथमुख्यं

श्रीरामदूतं शिरसा नमामि । ५॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं

काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्

पारिजाततरुमूलवासिनं

भावयामि पवमाननन्दनम् ॥६॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं

तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।

वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं

मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥७१॥

इति अष्टोत्तरशतनामरामायणं समाप्तम् ।



जय श्रीरामचन्द्रजी की जय ।

जय श्रीसीतामाई जी की जय ।

जय श्री हनुमानजी की जय ।



राम — भजन

इतनी विनती रघुनन्दन से,

दुःख-द्वन्द्व हमारो मिटाओ जी ॥

निज पद-पंकज-पिंजर में,

चित्त हंस हमारो बिठाओ जी ।

तुलसीदास कहै कर जोड़ी,

भवसागर पार उतारो जी ।



मेरी मन रामहि राम रटै रे ।

राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ।

जनम जनम के खत जो पुराने, नामहि लेत फटै रे ।

कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे ।

मीरा कहे प्रभु हरि अविनाशी, तन मैन ताहि पटै रे ॥



ठमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनिया ॥
 किलकिलाइ उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय ।
 धाइ मातु गोद लेत दशरथ की रानियां ॥
 अंग रज अंग लाइ, विविध भाति सों दुलार ।
 तन मन धन बारि बारि कहत मृदु बानियां ॥
 तुलसीदास अति आनन्द, हेरत मुखारविन्द ।
 रघुवर की छवि समान रघुवर छवि बानियां ॥



प्रेम मुदित मन से कहो, राम राम राम ।
 श्री राम राम राम, श्री राम राम राम ॥
 पाप कटे दुःख मिटे, लेत राम - नाम ।
 भव-समुद्र सुखद नाव एक राम-नाम ॥
 परम-शान्ति - सुख - निधान नित्य राम-नाम ॥
 निराधार को आधार एक राम-नाम ।
 परम गोप्य, परम इष्ट मंत्र राम - नाम ।
 संत - हृदय सदा बसत एक राम - नाम ॥
 महादेव सतत जपत दिव्य राम - नाम ।
 काशि मरत मुक्त करत कहत राम - नाम ।
 माता - पिता, बंधु - सखा, सबहि राम - नाम ॥
 भक्त - जनन - जीवन - धन एक राम - नाम ॥



श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम् ।
 नवकंजलोचन, कंज - मुख, कर-कंज, पद-कंजारुणम् ॥

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद - सुन्दरम् ।
 पट पीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनक-सुता-वरम् ॥
 भजु दोनबंधु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकंदनम् ।
 रघुनंद आनन्दकंद कौसलचंद दशरथ - नंदनम् ॥
 सिर मुकुट कुडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।
 आजानुभज शर - चाप-धर संग्राम-जित-खर - दूषणम् ॥
 इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम् ।
 मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनम् ॥



जिनके हृदय में श्रीराम बसे,
 उन-साधन और किये न किये ।
 जिन सन्त - चरण रज को परसा
 उन तीरथ - नीर पिये न पिये ॥
 सब भूत दया जिनके चित्त में
 उन कोटन दान दिये न दिये ।
 जिन राम रूप का ध्यान धरे
 उन राम - नाम लिये न लिये ॥



मन लागे मेरो यार फकीरी में ॥
 जो सुख पावो राम भजन में, सो सुख नाहि अमीरी में ॥
 भला बुरा सबका सुनि लीजै, कर गुजरान गरीबी में ॥
 प्रेम-नगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में ॥
 हाथ में कूडी, बगल में सोटा, चारों दिसि जागीरी में ॥
 आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहा फिरत मगरूरी में? ॥
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरी में ॥



पायो जी मैंने राम - रतन धन पायो ॥

वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु

किरपा कर अपनायो ॥

जनम जनम की पूजी पाई,

जगमें सभी खोवायो ॥

खरचै न खूटै, वाको चोर न लूटै,

दिन दिन बढ़त सवायो ॥

सतकी नाव, खेवटिया सतगुरु,

भवसागर तर आयो ॥

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर

हरख हरख जस गायो ॥

—०—

श्री कृष्ण संगीत

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।

श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् ।

इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं संदधे ॥

विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये ।

वल्लबीवल्लभायार्चितायात्मने कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।

अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः ।

लक्ष्मणो नान्वितो वानरैः सेवितोऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम् ॥

धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा केशिहा कंमहृद्वंशिकावादकः ।
 पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ॥
 विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
 वन्यया मालया शोभितोरः स्थल लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ।
 कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः ।
 हारकेयूरकं कंकणप्रोज्ज्वलं किकिरीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥
 अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिठटदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।
 वन्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरस्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥



गूकल हृदय म्योन तस्त्य चोन गूर्य - वान ।

च्यथ - व्यमर्शं दिप्तिमान भगवानो ॥

व्रच म्यानि गूपियि च्येय पत लारान

वंसुरी - नाद वाद मतानो ।

नशिरिथ ह्यस त होश मशिरिथ पर त पान ॥०॥

अथवास च्यय सस्त्यन त रास गिन्दान

व्यास - नाहद ति तस्त्य आसानो ।

दास - भाव राधा - कृष्ण कृष्ण जपान ॥०॥

दीवियि त देवता सीव च्येय करान

भव - सर तव तार लभानो ।

ग्यवान - रिवान ज्यव ह्यस न लोसान ॥०॥

असवनि कोसम मुख चानि फोलान

कुसु तव नजि आसि शहलानो ।

कुस्तभ त्र्यटि त माल आसहोय पैरान ॥०॥

मायायि सऽतिन च शायि - शायि आसान
कायायि - मंज त भ्योन रोजानो ।
सूयके आसन छाया छि भासान ॥०॥

ॐ शब्द गायत्री शक्त चय जपान
होम - यज्ञ जप - तप जग - सानो ।
शम - दम यम - नेम ध्यान - धारणायि दान ॥०॥

आकाश म्वख छुख आकाश भासान
ततसत प्रकाश नित आसानो ।
देवन - हंदि देव प्राणियन हदि प्राण ॥०॥

युस युथ स्वरिय तस त्युथ छुख हावान
म्वख हाव म्यति श्री नाराणो ।
प्रारनच फुरसत छम न रुजमच पान ॥०॥

तप - जप भाव - भावनायि चय साधान
साधन तोरय च साधानो ।
दर्शन चानि छुक अमृत वर्षनि ॥०॥

तप ऋष्य बाडि अभिमान आय तोषान
आय सूर्य - सूर्य आय केशानो ।
न्याय नय अन्दनक वुन्द छिय मन्दान ॥०॥

गारहन कूछ त हावहस पान पान
लबि रोजि पान लभि पऽन्य - पानो ।
सोर्यस बंध - मुक्त सोरि सुख प्रावान ॥०॥

रात - दोह परमानन्द छुय कांछान
परम - आनन्द युद छु पऽन्य - पानो ।

वन्य - वन्य वनन्य वन्य चे दिवान ॥०॥

भक्तयन चान्यन छु अस्तुत करान

स्वस्थित तिहंदि - म्वख आसानो ।

बुजिरस हत - हत अथ - रोट काँछान ॥०॥



गूर - गूर करयो गोवर्धन लालो वे

आनन्दवन म्यानि कन्द बरयो थालो वे ॥

हंसो सोऽहं ॐ कन्द नन्दलालो वे

पम फोलि ॐ सऽत्य हम गलि सोखालो वे ॥

शम - दम अन्दरिमि ॐ चियि करु मालो वे

दीप अद प्रजलिय अथि पुर मालो वे ॥

धर्मुक सोऽथ गच्छि कर्म खेति सम्भालो वे

जायि नो सांपनिय हायि कडिय निहालो वे ॥

मन चिय बुतराच पवनुक दू आलो वे

यछि हंज दांद - जूर्य पछि हुन्द अलफालो वे ॥

गुरु - शब्द व्याल वव कव गोख मतवालो वे

सोय कल जल सऽत्य सुरनावुन थालो वे ॥

भखच हंजि न्यन्दि वस सूर्य प्रचण्ड चालो वे

रावचि फेरुस कहवचि सौन खालो वे ॥

ह्यलि येलि नेरिय त्यलि मेलिय गुपालो वे

बालगोपालस नऽत्य मोखत तय मालो वे ॥

सुफल सांपनिय श्रुफल पुर मालो वे

आकार हेरि खस निराकार हीमालो वे ॥

वैराग्य द्राति लोन होस्त गण्ड मसवालो वे

काम क्रोध लोभ मोह मद मनकलि जालो वे ॥
 लावि लावि सोम्बरिथ सन्तोष रजि खालो वे
 गुनि लद लोलऽच निर्गुण यियि सालो वे ॥
 दास व्यहनाव निर्वास चठ जालो वे
 प्रभवास मेलिय ज्ञानुक चोंग जालो वे ॥
 याछ पछि मुनिथ अर्घ वरतन थालो वे
 पूजि लाग ईश्वरस मनि पम्पोश मालो वे ॥
 मन किस सोदरस लाग डूगल जालो वे
 तव मज्ज लवहन लाल मोलुल लालो वे ॥
 योग शक्त प्रावख परमानन्द लालो वे
 निष्कल अरनिय चावनय शष्कालो वे ॥
 गूर गूर करयो गोवर्धन लालो वे
 आनन्द घन म्यानि कन्द भरयो थालो वे ॥

बोजि बोजि जसदाय फरियाद सोन
 चूर हय छु नन्दलाल चोनुये ॥
 यि छु दोऽध वछिनय यल त्रावान
 गऽवन छु असि दोऽध चावनावान
 पास चोन असि नत बन्द करहोन । ०
 योर छिस अस्य कूत भय हावान
 ओर हय छु जोर असुनाह त्रावान
 ति वुछिथ अस्य दपान खोनि ललवोन ॥ ०
 चूर करनस मज्ज छुय वोस्ताद
 बडच - बडच तदवीर छि अमिसय याद
 यिम छल नय ज्ञानि प्राणि खोत प्रोद ॥ ०

थऽअ त दोऽध असि केंह छुन जरवान
 कति किअ छु यिवान छिस न डेशान
 छु ख्यवान चूरि - चूरि पान वुछितोन ॥०
 ख्ययि हे पानस ति गयोव जान
 वान्दरन त पान्जनय अथि छु ख्यावान
 चऽडय कऽत्य फुटरान सऽत्य हयथ दोन ॥०
 कुनि यलि अथि छुस न केंह यिवान
 घरवालयन सऽत्य हर छु करान
 छुख वनान क्याह तुहुन्द सोरुय छु म्योन - ॥०

सान्यन बालकन छु कडान कल
 सऽत्य निथ हयछिनावान छुख छल
 तिम ति गयि खोगर पाय क्याह सोन ॥०

पोस्त छस यि खबर बोझ सोनुय
 कथ बानस मन्ज क्याह सना छुय
 सथ बोझ प्रथ जायि छुय वातवोन ॥०

शिखरिस यलि छुस न अथ वातान
 गूर्य बालकन तलऽ छुय थावान
 जऽदय करान बानन कति डेशोन ॥०

अनिघटि मंज अस्य चीज थावान
 आश्चर छु तोतनस छुय वातान
 लाल अथि नऽत्य छिसना प्रजल्वोन ॥०

युथ न वोऽअ लाल अथि नाल कडहस
 जानख तमिय गाशि लूख वुछिनस
 छय शरीर अमिसुन्द ति गाश आनवोन ॥०

नीलकण्ठ ! लीला आश्चर्यमय
 भगवान सँजय कँचाह छय
 आदि अन्त तमिसुन्द कांसि नो जोऽन ॥०



जगि अन्धकार चानि यिन चोलये
 लाल अलरय रोनि मञ्जूलये ॥

दीन - पाल सीनस सऽत्य थावथ
 मधुसूदन दोऽघ हो चावथ
 हो हो करय चत गोल गोलये ॥०

जसदायि हन्दि नेत्र प्रकाशे
 रोज भोजनावतम सुर्य बाशे
 दुःख त गम मयजि सोरुय चोलये ॥०

आनन्द - कन्द म्यानि नन्दलालो
 मन मोहन दीन - दयालो
 मार्यमन्दि अज वोन्द म्योन फोलये ॥०

मुश्कि अम्बर तन हो नावय
 श्याम - जामन जरियि हो छावय
 नाऽत्य त्रावय हार मोलुलये ॥०

उयवि सऽत्य क्षण - क्षण वुश्चारथ
 खोनि ललवथ मन हो धारथ
 चानि ध्यान - जल मनि - मल म्य छोलये ॥०

मछ - गोडनय गंजिमय रोजे
 कन म्य शुद्ध गयि तमि छुनि - छुजे
 मन म्य आनन्दस सऽत्य रोलये ॥०

कमितात्र तपके बल जाहम
भूमिकायि भोर कासऽनि आहम
बडहम कर चँय अड कोऽलये ॥०

नेत्र - कमल वुठचे रऽवफलय जन
मन - मोहन क्याह रऽत्य शुभन
छिय हृषीकेश ! केश रम्भोलये ॥०

मथि शुभान टचोक छुय - चन्दनुक
मथ म्य गछान जुव - जान वन्दनुक
ड्यक फोलवुन च्य वार, प्रजल्वनुये ॥०

मन छ निवान चूरि नस्त - खञ्जर
बुम - वन्जर क्याह छुय सोन्दर
लोल यमनय करय कजुलये ॥०

ही निद्वन्द ! मोक्तफऽत्य छिय दन्द
मछनय छिय प्रयिवत्र मछ - बन्द
मुख च्ये कमलस ह्य बिल्कुलये ॥०
क्याह छे होंगत्र चाऽनी मनोहर
मनि प्रयवुन होंजि हुन्द सन्यर
बूल्य - बोलान जन त, बुलबुलये ॥०

शुभान क्याह छुय चोनुय होटये
प्रजलवत्र च्य नाऽत्य लाल त्रटिये
तमि गाशि गोऽट सिरियि मण्डलये ॥०
लोल पुछे बडि अनुरागय
स्वजन कन्दूर कननय लागय
लोल - बोलऽव्य जरय मोक्तफोलये ॥०

अयन भुवनन हुन्दे चय राजे
 नादे - व्यन्दे म्यानि आदन वाजे
 बेमार मन म्य यिने चानि बोलये ॥०
 अतलास ते किमखाव वथेरावय
 तोसे - पोम्बरे प्यठ हो चावय
 शूभान छुस पाऽटय अंजुलये ॥०
 पूतनायि दाँध द्युतनय शामय
 प्राण कडिथस चयय अकि दामय
 सूक्ष प्रोवून पाप तस गोलये ॥०
 ज्यवुन चोन वूज कम्सासुरनेय
 थरे चाऽनिनस मरनेकि जरनेय
 मोठुस तोषुन होशि सुय डोलये ॥०
 अथ कमलव ते व्ययि पादि कमलव
 छुख च पकान आनन्द म्य वोपेच्चव
 कुनि स्योद छुख पकान कुनि होलये ॥०
 च तिथय पाऽठ्य बालकृष्ण यिखना
 नीलकण्ठस दर्शन दिखना
 पायि थदि ! सुति मायि चानि बोलये
 लाल अल्लेरय रोनि मन्जुलये ॥

मूकल ते विन्देरावन हय लो लो
 वलय वेस्य समिवे गिन्दव लो लो ॥०
 श्याम सुन्दुर द्राव खेलनि रास
 पते पते द्रायस गुराहवय सास
 मुर्ली शब्दस मच लो लो ॥०

चोक्रव मन्ज द्रायि चूल आविथ

ग्रोकंमुत बत अडँछोव थाँवित
अजि द्रायि न्यन्दरे हच लो लो ॥०

गूपियन साँमियन हुन्द न परवाय

रासस मन्ज युथ न कांह रटि जाय
लारान मंज वन खच लो लो ॥०

कँह तिम आसँ मंज सीवाये

गरँनय मंज प्रयम तँ माये
मुली नादँ तिम नच लो लो ॥०

कँह आसँ लायान कृष्णस नाद

हा कृष्ण ! असि वज्र करतँ प्रसाद
अख अकिस आवान प्रच लो लो ॥०

कामँ दीनँ सायेय लारेयि वन

गूर्य द्रायि छाण्डँनि अडरातन
अन्ध कृष्णस त्रेशिहच लो लो ॥०

वनचे कुकिलँ तँ तोतँ समिथयँ

अन्ध अन्ध रासस मन्ज अमिथयँ
मुचरिथ अँछ लोलँ हच लो लो ॥०

राधायि ज्यवि प्यठ कृष्ण कृष्णय

गोपियि वखनान गोविन्दय

जयगोविन्द जयगोपाल करच लो लो ॥०

भाग्यवान क्याह तिम गोपियि जान

रास आसँ खेलान कृष्णस सान
श्रीकृष्ण प्रयमस मच लो लो ॥

कृष्ण 'कमल' फोल हत्सरसँय
 गोपियि हंसनियि आश्वरसँय
 मुर्ली आह्लाद हच लो लो ॥०



हिन्दी भजन

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई ।
 दूसरा न कोई, साधो सकल लोक जोई ॥
 भाई छोड्या, बंधु छोड्या छोड्या सगा सोई ।
 साधु संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥
 भगत देखि राजी हुई जगत देख रोई ।
 अंसुवन जल सींच सींच प्रेम - बेलि बोई ॥
 दधि मथ घृत काढि लियो, डार दई छोई ।
 राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई ॥
 अब तो बात फैल पडी, जाणे सब कोई ।
 मीरा एम लगण लागी, होनी होय सो होई ॥



म्हाने चाकर राखो जी ।
 गिरिधारी लला ! चाकर राखो जी ॥०॥
 चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरसन पासूँ ।
 वृन्दावन की कुंज गलिन में, गोविन्द लीला गासूँ ।
 चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊ खरची ।
 भाव - भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बाता सरसी ॥
 मोर - मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजंती माला ।
 वृण्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला ॥

ऊँवे ऊँवे महल बनाऊं, बिच बिच राखूं बारी ।
 सांवरियाके दरसन पाऊं, पहिर कुसुम्बी सारी ॥
 जोगी आया जोग करनकू, तप करने सन्यासी ।
 हरी - भजनकू साधू आये, वृन्दावन के वासी ॥
 मीरा के प्रभु गहिर गुंभीरा, हृदय रहो जो धीरा ।
 आधी रात प्रभु दरसन दीन्हों, जमुनाजी के तीरा ॥



प्रभु ! मोरे अवगुण चित न धरो ।
 समदरशी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥
 एक नदिया एक नार कहावत मैलो ही नीर भरो ।
 जब मिलकरके एक बरन भये सुरसरि नाम पर्यो ॥
 इक लोहो पूजा में राखत, इक घर बधिक पर्यो ।
 पारस गुण अवगुण नहि चितवत, कंचन करत खरो ॥
 यह माया भ्रम जाल कहावत सूरदास सगरो ।
 अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहि प्रन जात टरो ॥



तुम मेरी राखो लाज हरी ।
 तुम जानत सब अन्तरयामी
 करनी कछ न करी ॥

औगुन मोसे बिसरत नाहि
 पल छिन धरी धरी ।
 सब प्रपंच की पोट बांध करि
 अपने सीस धरी ॥

दारा सुत धन मोह लिये हों
 सुधि - बुधि सब बिसरी ।
 सूर पतित को बेग उधारो,
 अब मेरी नाव भरी ॥



प्यारे दर्शन दीज्यो आय
 तुम बिन रह्यो न जाय ॥
 जल बिन कमल. चन्द बिन रजनी
 ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी
 आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन
 विरह कलेजो खाय ॥ — प्यारे ०
 दिवस ना भूख नींद नहि रैना
 मुख सूं कथत न आवे बैना
 कहा कहूं कछु कहत न आवे
 मिलकर तपत बुझाय ॥ — प्यारे ०
 क्यों तरसावो अन्तरयामी
 आय मिलो कृपा कर स्वामी
 'मीरा' दासी जनम - जनम की
 पडी तुम्हारे पाय ॥ — प्यारे ०



जोगी मत जा, मत जा, मत जा
 पांव पडूं मैं तेरे ॥
 प्रेम भक्ति को पंथ ही न्यारो
 हमको गैल बता जा ॥०

अगर चन्दन की चित्ता बनाऊँ

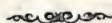
अपने हाथ जला जा ॥०

जल जल भई भस्म की ढेरी

अपने अंग लगा जा ॥०

मीरा कहे प्रभु हरि अविनाशी

ज्योति में ज्योति मिला जा ॥०



ॐ

श्री श्री रामकृष्ण संगीत'



आरत्रिक भजन

खण्डन भवबन्धन जगवन्दन वन्दि तोमाय ।

निरंजन नररूपधर निगुण गुणमय ॥ निगुण

मोचन - अघदूषण जगभूषण चिद्घनकाय ।

ज्ञानांजन विमलनयन वीक्षणो मोह जाय ॥

भास्वर भावसागर चिर उन्मद प्रेमपाथार ।

भक्तार्जन - युगलचरण तारण भवपार ॥

जृम्भित युग - ईश्वर जगदीश्वर योगसहाय ।

निरोधन समाहितमन निरखि तव कृपाय ॥

भजन दुःखगंजन करुणाघन कर्मकठोर ।

प्राणार्पण जगततारण कुन्तन कलिडोर ॥

वंचन काम - कांचन अतिनिन्दित इन्द्रियराग ।
 त्यागीश्वर, हे नरवर, देह पदे अनुराग ॥
 निर्भय गतसंशय दृढनिश्चयमानसवान् ।
 निष्कारण भक्तशरण त्यजि जातिकुलमान ॥
 सम्पद तव श्रीपद भवगोष्पद - वारि यथाय ।
 प्रेमार्पण, समदर्शन जगजन - दुःखजाय ॥
 नमो नमो प्रभु वाक्यमनातीत मनोवचनैकाधार ।
 ज्योतिर ज्योति उजल हृदिकन्दर तुमि तम भंजन हार ॥
 धे धे धे लंग रंग भंग बाजे अंग संग मृदंग ।
 गायिछे छंद भक्तवृन्द आरती तोमार ॥

जय जय आरती तोमार ।

हर हर आरती तोमार ।

शिव शिव आरती तोमार ।

खण्डन भव - बन्धन जग - वन्दन वन्दि तोमाय ॥

॥ जय श्री गुरु महाराज जी की जय ॥



श्री रामकृष्ण स्तोत्रम्

ॐ ह्रीं नमो त्वमचलो गुणजित् गुणोद्धतः
 नक्तन्दिवं सकरुणं तव पादपद्मम् ।
 मोहकषं बहुकृतं न भजे यतोऽहम्
 तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥
 भक्तिर्भगश्च भजनं भवभेदकारि
 गच्छन्त्यलं सुविपुलं गमनाय तत्त्वम् ।

वक्त्रोद्धृतन्तु हृदि मे न च भाति किञ्चित्
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥

तेजस्तरन्ति तरसा त्वयि तृप्ततृष्णाः
रागे कृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णे ।
मर्त्यामृतं तव पदं मरणोर्भिनाशम्
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥

कृत्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि
ष्णान्तं शिवं सुविमलं तव नाम नाथ ।
यस्मात् अहं त्वशरणो जगदेकगम्य
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥

ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे ।
अवतारवरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः ॥

ॐ नमः श्री भगवते रामकृष्णाय नमो नमः ।

ॐ नमः श्री भगवते रामकृष्णाय नमो नमः ।

ॐ नमः श्री भगवते रामकृष्णाय नमो नमः ।

॥ श्री नारायणी स्तोत्रम् ॥

सर्व - मंगल - मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥
सृष्टि - स्थिति - विनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
शरणागत - दीनार्त - परित्राण - परायणे ।
सर्वस्याप्ति-हरे देवि नारायणी नमोऽस्तुते ॥

जय नारायणि नमोऽस्तु ते ।

जय नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

जय नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

जय श्री गुरु महाराज जी की जय !

जय महामायी जी की जय !

जय स्वामी जी महाराज जी की जय !

जय श्री वितस्ता माई जी की जय !

॥ श्री रामकृष्ण - स्तोत्रम् ॥

आचण्डालाप्रतिहतरयो यस्य प्रेमप्रवाहः

लोकातीतोऽप्यहह न जहौ लोककल्याणमार्गम् ।

त्रैलोक्येऽप्यप्रतिममहिमा जानकीप्राणबन्धः

भक्त्या ज्ञानं वृतवरवपुः सीतया यो हि रामः ॥

स्तब्धीकृत्य प्रलयकलितं बाहवोत्थं महान्तं

हित्वा रात्रिं प्रकृतिसहजामन्धतामिस्रमिश्राम् ।

गीतं शान्तं मधुरमपि यः सिंहनादं जगर्ज

सोऽयं जातः प्रथितपुरुषो रामकृष्णस्त्वदानीम् ॥

नरदेव देव जय जय नरदेव

शक्तिसमुद्रसमुत्थतरंगं

दर्शितप्रेमविजृम्भितरंगम् ।

संशयरक्षसनाशमहास्त्रं

यामि गुरुं शरणं भववैद्यम् ॥

नरदेव देव जय जय नरदेव

अद्वयतत्त्वसमाहितचित्तं

प्रोज्ज्वलभक्तिपटावतवृत्तम
कर्मकलेवरमऽद्भुतचेष्टं
यामि गुरुं शरणं भववैद्यम् ॥
नरदेव देव जय जय नरदेव

॥ श्रीरामकृष्णप्रणामः ॥

निरञ्जनं नित्यमनन्तरूपं
भक्तानुकम्पाघृतविग्रहं वै ।
ईशावतारं परमेशमीड्यं
तं रामकृष्णं शिरसा नमामः ॥

॥ श्री श्रीरामकृष्णस्तवराजः ॥

ॐ कावेद्यः पुरुषः पुराणो
बुद्धेश्च साक्षी निखिलस्य जन्तोः ।
यो वेत्ति सर्वं न च यस्य वेत्ता
परात्मरूपो भुवि रामकृष्णः ॥१॥
न वेदगम्यो न च योगगम्यो
ध्यानैर्न जापैर्न तपोभिरग्नैः ।
ज्ञेयः कदापीह ततोऽवतीर्णो
दयानिधे त्वं भुवि रामकृष्णः ॥२॥
मोक्षस्वरूपं तव धाम नित्यं
यथा तदाप्नोति विशुद्धचित्तः ।
तथोपदेष्टाऽखिलतत्त्ववेत्ता
त्वं विश्वधाता भुवि रामकृष्णः ॥३॥

भक्तेस्तथा शुद्धज्ञानस्य मार्गौ
प्रदर्शितौ द्वौ भवमुक्तिहेतुः ।
तयोर्गतानां ध्रुवनायकोऽसि
त्वं मोक्षसेतुर्भुवि रामकृष्णः ॥४॥

गतिस्त्वमेका जगतां जडानां
पुरा विसृष्टेश्चिदखण्डरूपः ।
तद्वल्लये स्या अघुनासि तद्वत्
त्वमादिदेवो भुवि रामकृष्णः ॥५॥

वर्णाश्रमाचारविहीनशान्ताः
संन्यासिनो ज्ञानविधूतचित्ताः ।
ध्यायन्ति यं नित्यमभेददृष्ट्या
स एव हि त्वं भुवि रामकृष्णः ॥६॥
तेजोमयं दर्शयसि स्वरूपं
कोषान्तरस्थं परमार्थतत्त्वम् ।
संस्पर्शमात्रेण नृणां समाधिं
विधाय सद्यो भुवि रामकृष्णः ॥७॥

रागादिशून्यां तव सौम्यभूर्तिं
दृष्ट्वा पुनश्चात्र न जन्मभाजः ।
स्थाने यदादाय विशुद्धसत्त्व -
मिहावतीर्णो भुवि रामकृष्णः ॥८॥

महाविचित्रं महदादिकार्यं
लब्ध्वाप्यधिष्ठानमनाद्यनन्तम् ।
करोति नित्या प्रकृतिस्तवाद्या
तद् ब्रह्म सच्चिद् भुवि रामकृष्णः ॥९॥

कृशाणुवत् तापविदग्धचित्ताः
 संसारिणः शान्तिनिकेतनं त्वाम् ।
 संप्राप्य शान्ता हि भवन्ति तेषां
 त्वं शान्तिदाता भुवि रामकृष्णः ॥१०॥
 षडंगयोगो न यतः सुसाध्यो
 ज्ञानाधिकारी सुलभो न यस्मात् ।
 गरीयसी भक्तिरतः कलौ स्यात्
 तद् ज्ञापकस्त्वं भुवि रामकृष्णः ॥११॥
 नाकादिलोकं सुखदञ्च दिव्यं
 सुरम्यमैश्वर्यमहं न याचे ।
 हृदासने त्वं कृपया सदा वै
 वसेति याचे भुवि रामकृष्णः ॥१२॥
 यं ब्रह्म विष्णु गिरिशश्च देवाः
 ध्यायन्ति गायन्ति तमन्ति नित्यम् ।
 तैः प्रार्थितस्तस्य परावतारो
 द्विबाहुधारी भुवि रामकृष्णः ॥१३॥
 वन्दे जगद्बीजमखण्डमेकं
 वन्दे सुरैः सेवितपादपीठम् ।
 वन्दे भवेशं भवरोगवैद्यं
 तमेव वन्दे भुवि रामकृष्णम् ॥१४॥
 रामकृष्णं चिदानन्दं यः स्तौति भक्तिमान् सदा ।
 तस्य चित्तं भवेत् शुद्धं तत्त्वज्ञानं स्वयं ततः ॥१५॥

॥ श्री श्री रामकृष्णोष्ठकम् ॥

विश्वस्य धाता पुरुषस्त्वमाद्यो-
 ऽन्तेन रूपेण ततं त्वयेदम् ।

हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने

कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥१॥

त्वं पासि विश्वं सृजसि त्वमेव

त्वमादिदेवो विनिर्हंसि सर्वम् ।

हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने

कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥२॥

मायां समाश्रित्य करोषि लीलां

भक्तान् समुद्धर्तमनन्तमूर्तिः ।

हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने

कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥३॥

विधृत्य रूपं नरवत्त्वया वै

विज्ञापितो धर्मं इहाति गुह्यः ।

हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने

कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥४॥

तपोऽथ ते त्यागमदृष्टपूर्वं

दृष्ट्वा नमस्यन्ति कथं न विज्ञाः ।

हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने

कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥५॥

श्रुत्वात्र ते नाम भवन्ति भक्ताः

दृष्ट्वा वयं त्वां न तु भक्तियुक्ताः ।

हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने

कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥६॥

सत्यं विभुः शान्तमहोदररूपं

प्रसादये त्वोमजमन्तशून्यम् ।

हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥७॥
 जानामि तत्त्वं न हि दैशिकेन्द्र
 किन्ते स्वरूपं किमु भावजातम् ।
 हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥८॥

॥ श्री रामकृष्ण-स्तोत्र-दशकम् ॥

ब्रह्म - रूपमादि - मध्य - शेष - सर्व - भासकं
 भाव - षट्क - हीन - रूप - नित्य - सत्यमद्वयम् ।
 वाङ्मनोऽति - गोचरञ्च नेति - नेति - भवितं
 तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥१॥
 आदितेय - भी - हरं सुरारि - दैत्य - नाशकं
 साधु - शिष्ट - कामदं मही - सुभार - हारकम् ।
 स्वात्म - रूप - तत्त्वकं युगे युगे च दर्शितं
 तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥२॥
 सर्व - भूत - सर्ग - कम - सूत्र - बन्ध - कारणं
 ज्ञान - कर्म - पाप - पुण्य - तारतम्य - साधनम् ।
 बुद्धि - वास - साक्षि - रूप - सर्व - कर्म - भासनं
 तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥३॥
 सर्व - जीव - पाप - नाश - कारणं भवैश्वरं
 स्वीकृतञ्च गर्भ - वास - देह - पाशमीलशम् ।
 यापितं स्व - लीलया च येन दिव्य - जीवनं
 तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥४॥

तुल्य - लोष्ट्र - काञ्च हेय - नेय - घी - गतं
स्त्रीषु नित्य - मातृरूप - शक्ति - भाव - भावुकम् ।
ज्ञान - भक्ति - भुक्ति - मुक्ति-शुद्ध - बुद्धि - दायकं
तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥५॥

सर्व - धर्म - गम्य - मूल - सत्य - तत्त्व - देशकं
सिद्ध - सर्व - सम्प्रदाय - साम्प्रदाय वर्जितम् ।
सर्व - शास्त्र - मर्म - दर्शि - सर्वविन्निरक्षरं
तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥६॥

चारु - दशं - कालिका - सुगीत - चारु - गायकं
कीर्तनेषु मत्तवन्च नित्य भावविह्वलम् ।
सूपदेश - दायकं हि शोक - ताप वारकं
तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥७॥

पाद - पद्म - तत्त्व - बोध - शान्ति - सौख्य - दायकं
सक्त - चित्त - भक्त - सूनु - नित्य - वित्त - वर्धकम् ।
दम्भि - दर्व - दारणान्तु - निर्भयञ्जगद्गुरुं
तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥८॥

पञ्च - वर्ष - बाल - भाव - युक्त हस - रूपिणं
सर्व - लोक - रञ्जनं भवाब्धि - संग - भञ्जनम् ।
शान्ति - सौख्य - सद्य - जीव - जन्मभीति नाशनं
तं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥९॥

धर्म - हान - हारकं त्वधर्म - कर्म - वारकं
लोक - धर्म - चारणाञ्च सर्व - धर्म - कोविदम् ।
त्यागि - मेहि - सेव्य - नित्य - पावताङ्घ्रि - पंकजं
त्वं नमामि देव - देव - रामकृष्णमीश्वरम् ॥१०॥

स्तोत्र - शून्य - सोमकं सदेश भाव - व्यञ्जकं
 नित्य पाठकस्य वै विपत्ति - पुञ्ज - नाशकम् ।
 स्यात्कदापि जाप - याग - योग - भोग - सौलभं
 दुर्लभन्तु रामकृष्ण - राग - भक्ति - भावनम् ॥११॥
 इति श्रीविरजानन्द - रचितं भक्ति - साधकम् ।
 स्तव - सारं समाप्तं वै श्रीरामकृष्ण - तूणकम् ॥१२॥

श्रीरामकृष्णध्यानम्

हृदयकमलमध्ये राजितं निर्विकल्पं
 सदसदखिलभेदातीतमेकस्वरूपम् ।
 प्रकृतिविकृतिशून्यं नित्यमानन्दमूर्ति
 विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१॥
 निरुपममतिसूक्ष्मं निष्प्रपञ्चं निरीहं
 गगनसदृशमीशं सर्वभूताधिवासम् ।
 त्रिगुणरहितसच्चिद्ब्रह्मरूपं वरेण्यं
 विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥२॥
 वितरितुमवतीर्णं ज्ञानभक्तिप्रशान्तिः
 प्रणयगलितचित्तं जीवदुःखासहिष्णुम् ।
 धृतसहजसमाधिं चिन्मयं कोमलांग
 विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥३॥

श्रीरामकृष्णषट्कम्

विशुद्धविज्ञानमगाधसौख्यं विश्वस्य बीजं करुणापयोधिः ।
 अनाद्यनन्तं प्रकृतेः परस्तात् तत्तत्त्वमेकं भुवि रामकृष्णः ॥१॥

न नेति भीत्या श्रुतयो वदन्ति वदन्ति साक्षात् न च यं कदाचित् ।
 चिदेकरूपः शिव ईश्वराणां महेश्वरोऽसौ भुवि रामकृष्णः ॥२॥
 यं नित्यमानन्दमनन्तमेकं शिवेति नाम्ना श्रुतयो गणन्ति ।
 तस्यावतारो नररूपधारी कृपासुधाब्धिर्भुवि रामकृष्णः ॥३॥
 विज्ञानपीयूषनिमग्नमूर्तिः पस्पर्श यान् यान् दयया करेण ।
 ते कामिनीकाञ्चनरिक्तचित्ताः सद्यो बभूवुर्भुवि रामकृष्णः ॥४॥
 प्रेमाब्धिगंभीरतरंगभंगैरांदोलितो यो भगवद्विलीनः ।
 भक्तिविशुद्धा स्वयमाविरासीत् पुंविग्रहोऽहो भुवि रामकृष्णः ॥५॥
 तमद्भुतं कञ्चिदचित्यशक्तिं वन्दे प्रशान्तं परिपूर्णबोधम् ।
 ज्ञानस्य भक्तेश्च विशुद्धमूर्तिं द्विमूर्तिमेकं भुवि रामकृष्णम् ॥६॥

श्री रामकृष्ण शरणं रामकृष्ण शरणम्
 रामकृष्ण शरणं शरणम् ।

कृपाहि केवलं कृपाहि केवलम्
 कृपाहि केवलं शरणम् ।

शरणागतहं शरणागतहम्
 शरणागतहं शरणम् ।

नमः श्री गुरुवे नमः श्री गुरुवे
 नमः श्री गुरुवे नमो नमः ।

रामकृष्ण शरणं रामकृष्ण शरणम्
 रामकृष्ण शरणं शरणम् ।

श्री गुरुस्तवाष्टक

भव-सागर-तारण-कारण हे, रविनन्दन - बन्धन - खण्डन हे ।
शरणागत किकर भीतमने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥१॥
हृदिकन्दर - तामस - भास्कर हे, तुमि विष्णु प्रजापति शंकर हे ।
परब्रह्म परात्पर वेद भणो, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥२॥
मन - वारण - शासन - अंकुश हे, तर त्राणतरे हरि चाक्षुष हे ।
गुण गान परायण देव गणो, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥३॥
कुल कुण्डलिनी - घुम - भञ्जक हे, हृदि - ग्रन्थि -
विदारण - नायक हे ।
मम मानस चंचल रात्रि - दिने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥४॥
रिपूसूदन मंगल - कारक हे, सुखशान्ति वराभय - दायक हे ।
त्रय - ताप हरे तव नाम गुणो, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥५॥
अभिमान प्रभाव विमर्दक हे, गति हीनजने तुमि रक्षक हे ।
चित शंकित वंचित भक्ति घने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥६॥
तवनाम सदा शुभ साधक हे, पतिताधम मानव पावक हे ।
महिमा तव गोचर शुद्ध भने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥७॥
जय सद्गुरु ईश्वर प्रापक हे, भव रोग विकार विनाशक हे ।
मन येन रहे तव श्रीचरणो, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥८॥



श्रीरामकृष्ण जयाष्टकम्

भव - भय - भंजन पुरुष निरंजन, रतिपति गंजन कारी ।
यति जन रंजन मनोमद खण्डन, जय भवबन्धन हारी ॥

जय जनपालक सुरदलनाथक जय जय विश्वविधाता ।
 चिर शुभसाधक मतिमल पावक जय चित्तसंशय त्राता ॥
 सुरनरवन्दन विजर विवन्धन चित्तमन नन्दनकारी ।
 रिपुचय मन्थन जय भवतारण स्थल जल भूधर धारी ॥
 शमदम मण्डन अभय निकेतन जय जय मंगल दाता ।
 जय सुखसागर नटवर नागर जय शरणागत पाला ॥
 भ्रमतमभास्कर जय परमेश्वर सुखकर सुन्दर भाषी ।
 अचल सनातन जय भवपावन जय विजयी अविनाशी ॥
 भक्त विमोहन वरतनु धारण जय हरिकीर्तन भोला ।
 गद गद भाषण चित्तमन तोषण टल टल नर्तन लीला ॥
 मति गति वर्धन कलिवल मर्दन विषय विराग प्रसारी ।
 जड चिन चेतक भवजल भेलक जय नरमानस चारी ॥
 जय पुरुषोत्तम अनुपम संयम जय जय अन्तर्यामी ।
 खरतर साधन नरदुःख वारण, जय रामकृष्ण नमामि ॥

आयस व लोल चाने, भगवान लोल चाने
 रामकृष्णदीव म्याने ।

आयस व होल चाने, भगवान लोल चाने
 रामकृष्णदीव म्याने ॥

पोषन व माल करान मालन ति लाल जरान
 लालन छु स्वक्त हरान प्रारान माथि चाने
 गजिसा व स्वक्त छाने भगवान लोल चाने ॥०

वजिनस ब मायि चाने रोजान च छायि छाये
बासान म्य जायि जाये छायेन ति लोल ग्राये
रज्ज्वस ब छायि लाने भगवान लोल चाने ॥०

सन्मुख च दिम म्य दर्शुन करतम म्य लोल वशुन
फोलिहे म्य लोल यावुन चानि अकि लोल ग्राये
लजिमच ब लोल लाने भगवान लोल चाने ॥०

यलि यलि लोल पथर प्यव जायि जायि वोथ वोपद्रव
संकट तुल भस्त्यव अद द्वाख च लीलाये
रूप चोन कुस ज्ञाने भगवान लोल चाने ॥०

श्रीराम रूप दोरुथ कौशल्यायि ललनोवुख
लोलुक तचर च्य होवुथ लोल नार सीताये
सीता त क्याजि माने भगवान लोल चाने ॥०

ओसुख च कृष्ण भगवान लोलुक बहार छावान
मथरायि गिन्दनावान राधा त गुर्यबाये
जलवान च्य अशि वाने भगवान लोल चाने ॥०

रामकृष्ण रूप प्रोवुथ चन्द्रायि हाल वोवुथ
लोल बल च्य पान होवुथ शक्ति माजि शारदाये
द्वैत - भाव सु कति ज्ञाने भगवान लोल चाने ॥०

चण्डी च पान दुर्गा सीता स्वरूप राधा
शारदायि रूप श्रद्धा सुय रूप छु कालिकाये
माजि रूप जगथ माने भगवान लोल चाने ॥०

शक्ति स्वरूप पानय शक्ति स्वरूप पानय
मुक्ती दिवान पानय भस्त्यन च जायि जाये
मन छल ब लोल बाने भगवान लोल चाने ॥०

व्योन-व्योन स्वरूप चऽनी वनि क्याह यि लोल वऽणी
चऽन्य रंग छि ना अजऽनी लोल रंग मायि छाये
लोल रंग न जांह ति प्राणे भगवान लोल चाने ॥०

ग्वड छुख च ग्रायि मारान पत छुख च छायि प्रारान
पोत छायि मायि तारान लोति लोति सानि राये
सूर गोम म्य अनजाने भगवान लोल चाने ॥०

तन मन त प्राण म्योनय सामान छुय यि चोनय
नत कुस कबील क्रोनय गंडिथ छु म्यानि काये
द्रायस कबील क्राने भगवान लोल चाने ॥०

क्याह - गछि क्रम खजानस अथ लोलकिस मकानस
बति वातहा मुकामस स्यजि नजरि अकि ग्राये
अछुय म्य गयम काने भगवान लोल चाने ॥०

नरकसर स्वकलावतम दर्शुन म्य पान हावतम
खोनि मंज पननि थावतम मरहा ब लोल चाने
गल जन ब शीन माने भगवान लोल चाने ॥०



कृष्ण भगवान रामकृष्ण भगवान म्योन कोतू गव
ब कस त्रऽवनस गलि गलि लोल मस चावनऽवनस ॥

लोल मस प्यालन लालन बर्यनम गलि गलि चावनऽवनस
लोल खण्ड त नाबद थालन बर्यनम फलि फलि ख्यावनऽवनस
ब लालन फलि फलि ख्यावनऽवनस लोल बोरनम म्य

होल कोरनम

श्रीरामकृष्ण रूप भगवान म्योन कोत गव
ब कस त्रऽवनसय गलि गलि०

यन गोम नीरिथ तन आम न फीरिथ । वति प्यठ
अऽविथ गोम

सुलि चीर्य नीरिथ वति वति फीरिथ वथ रावरऽविथ गोम
म्य बाले वथ रावरऽविथ गोम लल नोवुम मनि मंज सोवुम
श्रीरामकृष्ण रूप भगवान म्योन कोत गव
ब कस अऽवनसय गलि गलि०

प्रारोन प्रारान वेरि चानि रऽवम रऽवहंज न्यन्दर तय नेह
अछय म्य लोसम छारान त गारान लाल म्यानि वोत्र
यि त ब्यह

पान रोवुम चोन नाव प्रोवुम श्रीरामकृष्ण रूप भगवान
म्योन कोत गव

ब कस अऽवनसय गलि गलि०

ब ति कोत आवय दामान चोनय छुख च लोल आरय वोऽत्र
ब ति अदरावय सामान चोनय वज्जि म्य लोलुक पोत्र
म्य वज्जि वात्र लोलय सरकुय पोत्र पान भोवुम अभिमान त्रोवुम
श्रीरामकृष्णरूप भगवान म्योन कोत गव

ब कस अऽवनसय गलि गलि०

चोनय लोला च्यय छस भावान मशरावान छस पान
लोल मंज चोनय लोल ललनावान पुशरावान च्यय पान
ब वन्दहय पादन पननिय प्राण जलनोवुम अद ललनोवुम
श्रीरामकृष्णरूप भगवान म्योन कोत गव

ब कस अऽवनसय गलि गलि०

लोल छत्रोख बडनम मत वोत्र आवतम हावतम अन्द
वन्द गाश

लूख नत ह्वाडनम मत मन्दछावतम चऽनी छम म्य आश
जगथ गुरु चऽनी छम म्य आश लोल भोवुम चानि वेरि
भोवुम

श्रीरामकृष्णरूप भगवान् म्योन कोत गव
ब कस त्रऽवनसय
गलि गलि लोल मस चावनऽवनस ॥

विष्णु रूपय गदाधरय हरी हरय परमहंसो
कास असि यति कालत्र थरय — हरी हरय०

खुदीराम मोल ओसया ब्राह्मण

न्यतकर्मी त सत्यवादी

टोऽठ तस ओस श्रीरघुवरय — हरी हरय०

गयायि तस ब्रोन्ठ पान होवथ

स्वपनस मंज तस यि च्य भोवुथ

यिम जन्मस चोनुय घरय — हरी हरय०

माजि चन्द्रायि मंज स्वपनस

विजि विजे होवुथ दर्शुन

नोऽन च वुछनख लक्ष्मी वरय — हरी हरय०

फागन जून पछ दोयि प्रातः काल

ह्योतुथ जन्म कामारपुकुरय — हरी हरय०

शशि - पानय हऽवथ लीला

गाह च गोब गोख गाह च्य पोशा

यिम वुछान माऽज गया बेसुधय — हरी हरय०

लय यूगच प्रय च्य सऽतीय

बाल कालय तोरय असय
 ग्यवान नचान गछान बेसुरय — हरी हरय०
 भक्तिभाव नोन ओसया ग्वन
 दीव दीह तय म्वख प्रजत्वुन
 शान्तस्वरूप गगाधरय — हरी हरय०
 माऽज काली आदि च्य रटथम
 न्यथ च्य पूजाह तस करथम
 सो च्य प्रवथन दक्षिणेश्वरय — हरी हरय०
 पांछ साधनायि वैष्णव च्ये
 त्रे तान्त्रिक अद्वैत सत्य
 स्यद च्य करिथख शक्ति धरय — हरी हरय०
 पंचवटी गंग भट्टे
 रस्य रातन तप च्य सोदथम
 ओसुख अवतार त्यागीश्वरय — हरी हरय०
 गाह च चैतन्य नित्यानन्द
 गाह च गौरङ्ग गोवर्धन
 गाह च पानय शिव - शंकरय — हरी हरय०
 शारदा जी पान वरथन
 ह्यछि नऽवथन सो च्य भक्ति जन
 सो च्य करथन शक्ति सुरय — हरी हरय०
 मथ च्य सऽरिय अनुभऽविथम
 पांछ वेद सऽरिय सार च्य वनिथम
 गाल कर्मत्र असि अरसरय — हरी हरय०
 कलि कालय ह्यतुथ जन्म
 पान ईश्वर नोन च ओसुख

दासस हरू यमने थरय - हरी हरय०

रामकृष्ण कर दया वोत्र, तन मन हवाल म्योनय
मन हथ्य कथ शायि ब्यूठुख, क्याह छुय मलाल म्योनय ॥०
हे दयि ! वोत्र स ज़री चयय रोस्त कस व बनय
करयो आरज़रय क्याह छुय मलाल म्योनय ॥०

संसार छु आवलुनुय, यि छु सनि खोत सोनुय
यथ मंज आस व हयनय ॥०

चऽवनस सूद मस, रूदुम न ध्यान व्ययि ह्यस
वानमथ गोस तनय ॥०

होरुम म्य कष्ट हन हन, हरोहर छुख थाव कन
अचिर त आलवनय ॥०

सूक्ष्म निर्मल रटुम व्रथ, प्रत्यक्ष पाठिन व बुछहथ
सस्त्य ज्ञान लोचनय ॥०

चयतस सो कल करुम पूर, अज्ञानमल गछयम दूर
ही टाठि गधादरय ॥०

पादन तल व यिमयो, चऽनिय तोता व करयो
वार वार आर अनय ॥०

वासनायव नाल रोटहस, संकल्पन व चोटहस
कोडहस पन पनय ॥०

दिम सत्संग म्य हरदम, यियम शोती त शम - दम
अद दास चोन व बनय ॥०

दास थवतन समाधान, चलिहेस यि दीह अभिमान
मंगान छु क्षण क्षणय ॥०

आकाशि सिरियि प्रकाश नोन द्राव
गाश आव रामकृष्ण दशुंन म्य हाव ॥०

राथ गयि प्रभात आव फोलनस
वेल वोत प्राणस पान छलनस
न्यन्दरे हति मति अछय मुचराव ॥०

गुल पवोत्य वागन हिय वननय
दूर फलि म्योन गोयना कननय
लोल सस्त्य बोलनस बुलबुल त काव ॥०

बल सोन मस रोज ज्वल आविथ
कबोलबल वस कल मल आविथ
व्यचार जल सस्त्य तन मन नाव ॥०

चतुर्दल मंज्र छुय गोड गणपत
मूषक वाहन वल्लभा ह्यथ
गजम्बख मूलाधार पर्जनाव ॥०

षठदल ब्रह्मा षोडष थान
हम्सस खसिथ चोर वीद वखनान
परम प्वषस पम्पोश वथराव ॥०

दशदल मन्ज जाय विष्णस
लक्ष्मी सहिन गरुड वाहन यस
पंकज - पादन पान पुशराव ॥०

द्वादशान्त मण्डलस मन्ज शिवनाथ
ब्रेशिभस खसिथ उमा ह्यथ साथ
अनाहत नाद - बिन्दसय कन थाव ॥०

षोडशदल कुय वोज महिमा

तति छु जीव आत्मच प्रतिमा

विशुद्ध चक्रस शुद्ध - भाव प्राव ॥०

द्वादल मन्ज परम आत्मदीव

त्रयोदश मन्ज छुय पननुय जीव

ब्रह्मरन्ध्रस मन्ज सिरियि प्रभाव ॥०

महस्त्रदलसय प्रदक्षिण फेर

गुरु आज्ञायि तति वति वति नेर

जगतस मन्ज भगवद् गीत गाव ॥०

वेल वोत अमर्यथ वर्षनकुय

परमानन्दने दर्शनकुय

लक्ष्मणो लोल चे दारि मुचराव ॥०

युथ ना छचन गच्छख म्य अकिसँय क्षणसँय

ललनावथ मनसँय मन्ज ।

रामकृष्ण छाण्डथ दक्षिणेश्वरसँर

ललनावथ मनसँय मन्ज ॥

खगँ खय अवतार दारिथ

लूख तौरिथ सम्सारँकय

रुदखा रथँवान पानँ अर्जनसँय ॥०

असोर संसार सोर न स द्रामो

भय चामो संसारुक

क्याह छु ह्योन तँ छुन क्याह छु न्युन चन्दँसँय ॥०

लाज थवँथा द्रौपदी भाजे

खसँ चय आयिय पादन शरणँय

करिथ अम्बार तस चय वर्धनसय ॥०

किसि खोरुथ परबथ पानय
अकि आनय बालकन सज्य
क्याह करव अस्य गोवधनसंय ॥०

नादन म्यान्यन कन म्यति थावथम
वथ म्य हावतम सत्य धर्मच
छसया प्रारान शुभ दर्शनसंय
ललंनावथ मनसंय मन्ज ॥०

तुमि ब्रह्म 'रामकृष्ण', तुमि कृष्ण, तुमि राम ।
तुमि विष्णु, तुमि जिष्णु, प्रभविष्णु प्राणाराम ॥
तुमि आधेय-आधार, तुमि ब्रह्म निराकार ।
तुमि तर-रूप-धर, विजित-कनक-काम ॥
अपार-करुणा सिन्धु, तुमि देव दीनबन्धु ।
जाचे इन्दु कृपा बिन्दु चरणे करि प्रणाम ॥

रामकृष्ण-चरण-सरोजे मज रे मन मधुप मोर ।
कष्टके आवृत विषय-केतकी थेकोना थेकोना ताहे विभोर ॥
जनम-मरण-विषम-व्याधि, निरबधि कत सहिबे आर ।
प्रम-पीयूष पियरे श्रीपदे, भवेरि जातना रवे ना तोर ॥
धर्मधर्म-सुख-दुख-शान्ति-ज्वाला-द्वन्द-खेला

माझे नाहि निस्तार ॥
ज्ञान कृपाणे परम जतने काटोरे कटोरे करम डोर;
'रामकृष्ण' नाम बलो रे बदने, मोहेरि जामिनी हडबे भोर ।
दुःस्वप्न ज्वाला रवे ना रवे ना छुटे जावे तोर घुमेरि घोर ॥

(सुर—प्रेम मुदित मन से कहो राम राम... ..)

प्रेम भरे मन रे गाह रामकृष्ण नाम ।

श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम ।

आनन्द वर्षक नाम मम प्राणाराम

रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम ॥

अन्तरे जतने राखो मन रे अविराम

दीन कांगालेरइ धन रामकृष्ण नाम

रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम ॥

एकइ वृन्ते फुटिल रे राधा, कृष्ण, श्याम,

शिव, काली, ब्रह्मा, विष्णु, श्यामा सीताराम ।

नाम ब्रह्म, एकइ जेने मन रे गाह नाम

जनम मरण साथी रामकृष्ण नाम

रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम ॥

॥ श्री शारदा स्तोत्रम् ॥

प्रकृति परमामभयां वरदां

नररूपधरां जनतापहराम् ।

शरणागतसेवकतोषकरीं

प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥१॥

गुणहीनसुतानपराधयुतान्

कृपयाद्य समुद्धर मोहगतान् ।

तरणीं भवसागरपारकरीं

प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥२॥

विषयं कुसुमं परिहृत्य सदा

चरणाम्बुरुहामृतशान्तिमुधाम् ।

पिव भृंगमनो भवरोगहरां

प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥३॥

कृपां कुरु महादेवी सुतेषु प्रणतेषु च ।

चरणाश्रयदानेन कृपामयि नमोऽस्तुते ॥४॥

लज्जापटावृते नित्यं सारदे ज्ञानदायिके ।

पापेभ्यो नः सदा रक्ष कृपामयि नमोऽस्तुते ॥५॥

रामकृष्णगतप्रोणां तन्नामश्रवणप्रियाम् ।

तद्भावरञ्जिताकारां प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥६॥

पवित्रं चरितं यस्याः पवित्रं जीवनं तथा ।

पवित्रतास्वरूपिण्यै तस्यै कुर्मो नमो नमः ॥७॥

देवीं प्रसन्नां प्रसृतातिहन्त्रीं

योगीन्द्रपूज्यां युगधर्मपात्रीम् ।

तां सारदां भक्तिविज्ञानदात्रीं

दयास्वरूपां प्रणमामि नित्यम् ॥८॥

स्नेहेन बध्नासि मनोऽस्मदीयं

दोषानशेषान् सगुणीकरोषि ।

अहेतुना नो दयसे सदोषान्

स्वाङ्के गृहीत्वा यदिदं विचित्रम् ॥९॥

प्रसीद मातविनयेन याचे

नित्यं भव स्नेहवती सुतेषु ।

प्रेमैकबिन्दु चिरदग्धचित्ते

विषिञ्च चित्तं कुरु नः सुशान्तम् ॥१०॥

जननीं शारदां देवीं रामकृष्णां जगद्गुरुम् ।

पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥११॥

स्तवः

अनन्तरूपिणि अनन्तगुणवति
अनन्त - नाम्नि गिरिजे मा ।
शिवहृन्मोहिनि विश्वविलासिनि
रामकृष्णजय - दायिनि मा ॥
जगज्जननि त्रिलोकपालिनि
विश्वसुवासिनि शुभदे मा ।
दुर्गतिनाशिनि सन्मतिदायिनि
भोग - मोक्षसुख - कारिणि मा ॥
परमे पार्वति सुन्दरि भगवति
दुर्गे भामति त्वं मे मा ।
प्रसीद मातर्नगेन्द्र - नन्दिनि
चिरसुखदायिनि जयदे मा ॥

वंगला भजन

पतितपावनी शारदा देवी !
शोक नाशिनी, तापहारिणी,
शान्तिदायिनी, भवानी ।
नाहि जे तोमार भेदाभेद ज्ञान
सन्तान तोमार हिन्दु मुसलमान ।
पूजिछे तोमाय मार्किनवासी
नह कि तुमि ता देर जननी ॥
निजेरे तुमि करिया गोपन
साधिले मा गो कठोर साधन ।

त्रिगुणधारिणी विश्वजननी
मुक्तिदायिनी शंकरी ।

॥ विवेकानन्द गीतिस्तोत्रम् ॥

मूर्तमहेश्वरमुज्ज्वलभास्करमिष्टममरनरबन्धम् ।
बन्धे वेदतनुमुज्झितगहितकाञ्चनकामिनि बन्धम् ॥
कोटिभानुकरदीप्तसिंहमहो कटितटकौपीनवन्तम् ।
अभीरभीः हुंकारनादितदिगमुखप्रचण्डताण्डवनृत्यम् ॥
भुक्तिमुक्तिकृपाकटाक्षप्रेक्षणमघदलविदलनदक्षम् ।
बालचन्द्रधरमिन्दुवन्धमिह नमि गुरुविवेकानन्दम् ॥

विवेकानन्दपंचकम्

अनित्यदृश्येषु विविच्य नित्यं तस्मिन्समाधत्त इह स्म लीलया ।
विवेकवैराग्यविशुद्धचित्तं यासी विवेकी तमहं नमामि ॥१॥

विवेकजानंदनिमग्नचित्तं विवेकदानैकविनोदशोलम् ।

विवेकभासा कमनीयकांति विवेकिनं तं सततं नमामि ॥२॥

ऋतं च विज्ञानमधिश्चयन्निरंतरं चादिमध्यान्तहीनम् ।

सुखं सुरूपं प्रकरोति यस्य आनन्दमूर्तिं तमहं नमामि ॥३॥

सूर्यो यथान्धं हि तमो निहति विष्णुर्यथा दुष्टजनांश्छिनत्ति ।

तथैव यस्याखिलनेत्रलोभं रूपं त्रितापं विमुखीकरोति ॥४॥

तं देशिकेद्र परमं पवित्रं विश्वस्य पालं मधुरं यतीन्द्रम् ।

हिताय नृणां नरमूर्तिमतं विवेकं आनन्दमहं नमामि ॥५॥

नमः श्रीयतिराजाय विवेकानन्दसूरये-

सच्चित्सुखस्वरूपाय स्वामिने तापहारिणे ॥६॥

लल-वाख

आमि पन सोदरस नावि छस लमान
कति बोझि दय म्योन म्यति यियि तार
आम्यन टाक्चन पोत्र जन शमान

जुव छुम अमान घर गछ हा ॥१॥
लल बोह द्रायस लोल रे

छांडान लूसुम दान क्योह राथ
बुछुम पंडिथ पनजे घरे

सुय म्य रोटमस न्यछतर त साथ ॥२॥
दमाह दम कोरमस दमन-हाले

प्रजल्योम दीफ त ननेयम जाथ
अन्दर्युम प्रकाश न्यवर छोटुम

घटि रोटुम त करमस थफ ॥३॥
पर तय पान यम्य स्वम मोन

यम्य ह्युव मोन दान क्योह राथ
यमिसय अद्वय मन सपुन

तमिय ड्यूठुय सुर-गुरु-नाथ ॥४॥
भान गोल तय प्रकाश आव जूने

चन्दर गोल तय केह ति ना कुने
च्यथ गोल तय केह ति ना कुने

गयि भू भुर्वः स्वः व्यसजिथ कचथ ॥५॥
दीव वटा दीवर वटा

प्यठ-ब्वन छुय ईक वाठ

पूज कस करख हूट भटा !
 कर मनस पवनस संगठ ।६।
 मूढ ज्ञानिथ पशिथ त कोर
 कोऽल श्रुतवोन जड-रूपी आस
 युस यि दपिय तस लिय बोल
 योहय तत्त्वविदस छु अभ्यास ।७।
 शील त मान छुय पोत्र क्रंजे
 म्वछि यम्य रोट मालि योद वाव
 होस्त युस मसवाल गण्डे
 ति यस तगि तय सु अद निहाल ।८।
 इय वन चटिथ शशिकल वुजम
 प्रक्रथ होंजम पवन-सऽतिय
 लोलकि-नार वऽलिज बुजम
 शंकर लोबुम तमिय सऽतिय ।९।
 सहजस शम त दम नो गछे
 यछि नो प्रावख मुक्ति-द्वार
 सलिलस लवण जन मीलिय गछे
 तोति छुय दुर्लभ सहज-व्यचार ।१०।
 केंह छिय न्यन्दरि हतिय वुदी
 केंचन वृद्यन न्यसर प्ययी
 केंह छिय स्नान करिय अपूतिय
 केंह छिय गेह बजिथ ति अक्रय ।११।
 अकुय उोंकार युस नाभि धरे
 कुम्भय ब्रह्माण्डस सुम गरे
 अख सुय मन्थर च्यतम करे
 तस सास मन्थर क्याह करे ।१२।

गगन चय भूतल चय

चय छुख दान पवन त राथ

अर्ग चन्दुन पोश पोत्र चय

चय छुख सोरुय त लगिजिय क्याह ११३।

पानस लऽगिय रूदुख म्य च

म्य चे छांडान लूसुम दोह

पानस मन्ज यलि ड्यूठुख म्य-च

म्य चे त पानस द्युतुम छोह ११४।

कुश पोश तेल दऽफ जल ना गछे

सद्भाव ग्वर कथ युस मनि ह्यये

शम्भूहस स्वरि नित्य पननि यछे

सदा प्यजे सहज अक्रय ना ज्यये ११५।

लल बो लूसस छांडान त गारान

हल म्य कोरमस रसनि शतिय

वृन्दुन ह्योतमस ताय डीठिमस बरन

म्य ति कल गनेयि जि जोगमस ततिय ११६।

कन्दव गेह त्यज कन्दव वनवास

व्यफल मन ना रटिथ त वास

दान-राथ गन्जरिथ पनुन श्वास

यिथुय छुख त त्युथुय आस ११७।

यि यि कम कोरुम सु अर्चुन

यि रसनि वोश्चोरुम ति मन्थर

योहय लोगमो दिहस पर्चुन

सुय यि परम - शिवुन तन्थर ११८।

छांडान लूसस पऽनी पानस

दचपिथ ज्ञानस वोतुम न कांह

लय कोरमस त वञ्चस अल-थानस

बर्य-बर्य बान त चवान न काह ॥१६॥

शिव शिव करान हंस गथ स्वरिथ

रुज्जिथ व्यवहार्य छन क्योह राथ

लागि रोस अद्धय युस मन करिथ

तस्य न्यथ प्रसन्न सुरु-गुरु-नाथ ॥२०॥

ओंकार यलि लये ओनुम

बुह्य कोरुम पनुत पान

षु वोस्त अञ्चिथ सथ मार्ग रोटुम

त्यलि लल व वञ्चस प्रकाशस्थान ॥२१॥

ग्वरन वोन्नम कुनुय वचुन

न्यबर दोपनम अन्दरय अचुन

सुय गव ललि म्य वाख त वचुन

तवय म्य होतुम नंगय नचुन ॥२२॥

क्याह कर पांचन दहन त काहन

वोख-शुन यथ ल्येजि करिथ यिम गय

सञ्जरिय समहन यथ रजि लमहन

अद क्याजि राविहे काहन गाव ॥२३॥

देहचि लरि दारि-बर ओपरिम

प्राण-चूर रोटुम त द्युतमस दम

हृदयिचि कूठरि अन्दर गोण्डुम

ओं-कि चोबुक तुलमस बम ॥२४॥

अन्दरिय आयस चन्दरय गारान

गारान आयस हिह्यन हिह्य

चय, हे नाराण, चय हे नाराण

चय हे नाराण ! यिम कम विह ॥२५॥

चालुन छु वुजमल त त्रटै
 चालुन छु मन्दिन्यन गटेकार
 चालुन छु पान पनुन कडुन ग्रटै
 ह्यत मालि ! सन्तुष वाति पानै ॥२६॥
 टचोठ मोधुर तय म्यूठ जहर
 यस यूत छुनुख जतन बाव
 यम्य यथ करैय कलै तँ कहर
 सु तथ शहर वसतिथ प्यव ॥२७॥
 कव छुख दिवान अनिने वछ
 त्रुक हय छुख त अन्दरय अछ
 शिव छुय अत्य तय कुन मो गछ
 सहज कथि म्यानि करतो पछ ॥२८॥
 ख्यन - ख्यन करान कुन नो वातख
 न ख्यन गछख अहंकरी
 सोमुय ख्य मालि सोमुय आसख
 समि ख्यन मुचरनय बरन्यन तसरी ॥२९॥
 सोबूर छुय ज्युर मरच त नूनय
 ख्यन छुय टचोठ त ख्ययस कुस
 सोबूर छुय मालि सोन्सुन्द दूरय
 म्वोल छुय थोद त ह्ययस कुस ॥३०॥
 यहय मातृ - रूपी पय दिये
 यहय भार्या - रूपी करि विशेष
 यहय माया - रूपी अन्ति जुव ह्यये
 शिव छुय क्रूठ त चेन वोपदोश ॥३१॥
 केचन रसज छय शिहिज बूनी
 न्यवर नेरव शुहुल करव

कैचन रज्ज छय बर प्यठ हूनीं
 नेरव न्यबर त जंग ख्ययव
 कैचन रज्ज छय अदल - त - बदल
 कैचन रज्ज छय जदल छा़य ॥३२॥
 असिय अस्स्य त असिय आसव
 असिय दोर कर्य पतय वथ
 शिवस सोरि न ज्योन त मरुन
 रवस सोरि न अतय गथ ॥३३॥
 गुरु शब्दस युस यछ पछ भरे
 ज्ञान वगि रटि चयथ तोरगस
 इन्द्रिय शोमरिथ आनन्द करे
 अद कुस मरि तय मारन कस ॥३४॥
 छयन आयि त गछुन गछे
 पकुन गछे छन क्योह राथ
 योरय आयि त तूर्य गछुन गछे
 कैह न त कैह न त कैह न त क्योह ॥३५॥

-
१. गिन्दुनाह छा जिन्द मरुन
 पान रोस्त पान सोरुन
 सहज व्यचार करुन ... सहज व्यचार करुन
 २. श्रुत छे तस रोस्त छुन
 मूद युस सु लूस्त छुन
 ब दपुन फूस्त छुन ... सहज०
 ३. दीह त मन त बुद्ध ति छुन
 विध ऋध सिद्ध ति छुन
 मुह त भ्रम त मद ति छुन ... सहज०

४. वीदन वोनमुतुय
बुद्धव वनि ओनमुतुय
बुद्धव निश छ्योनमुतुय ... सहज०
५. शक्त वोनहस त शिवय
जाव कस त आव कवय
निश त द्यन शशि त रवय ... सहज०
६. सत चित आनन्दमये
वसतिथ मोयि मोये
वसतिथ यस न मुये ... सहज०
७. मनि दस्य कासवुनुय
असिथ आसवुनुय
नसिथ भासवुनुय ... सहज०
८. परमात्मा त अपर
दीश काल विन त सत - गुर
भोरमुत यम्य चराचर ... सहज०
९. वूजिथ वार पसठिय
त्रसिथ टसठच अटसठिय
पाखण्डी त पसठी ... सहज०
१०. चित्त स्वरुनुय चिदाकाश
सूर्य तति छुय स्वप्रकाश
अस्त - उदय छुस्त थित नाश ... सहज०
११. तति सोरुय छु श्रपान
तति मा पान व्यपान्
भगवान् तथ्य छि दपान ... सहज०

१२. सूर्यस मा छे छाये
चय वोथ अमि शाये
भायि चलनय च्य ग्राये ... सहज०
१३. यच गाट प्ययि घाटय
त्रऽविथ फुट फाटय
फुट क्याह जि तिय ब वाटय ... सहज०
१४. भगवान् अविनाशे
अविनाश आकाशे
घट अऽस्यत्तन त गाशे ... सहज०
१५. तस रोस्त यिय च ज्ञानख
तिय तिय ठोर च मानख
रोचख त भयानख ... सहज०
१६. शंकायि मनि त्रऽविथ
यिम युथ गयि प्रऽविथ
सऽविथ रूख सऽविथ ... सहज०
१७. प्रेम स्वर वहवने
रेह हेयि हनि हने
पोत्र लगि तील कने ... सहज०
१८. नव - दारि मन्दोरे
चोपऽर्ज्य मन दोरे
लयि तथ त्रपोरे ... सहज०
१९. वार यलि वुछि मन्दर
रोजि न तथ्य अन्दर
अन्दवन्द श्यामसोन्दर ... सहज०

२०. वछ अविथ त दारे
योर ज्ञानि तोर लारे
तस विन क्याह जि लारे ... सहज०

२१. ललि वोन छु ललवुनुय
बालगुपाल कुनुय
वोन थव छुख न ओनुय ... सहज०

२२. वोनमुत यि स्वात्म यछे
सहजस प्राव पछे
शम त दम नाव गछे ... सहज०

२३. परमानन्द वुन्दस
कृष्णस ति पान वन्दस
सोन्तस क्याह त वन्दस
सहज व्यचार करुन ॥

वेल वोत मेलनुक दर्शुन म्य हाव
प्रयम सरकिय पंपोश छाव ॥

अद्वैत - रूप छुख कुनुय आसवुन
अकि ज्योतिरूप सऽत्य न्यथ भासवुन
कुनुय छुख तवय छुय केवल नाव ॥प्रयम०॥

द्वय - लक्षण छुख शिव - शक्ति रूप

दुयी अविथ छुख प्रजलवुन दऽफ
द्वयि - हन्दि दय च्यय छुह रुत स्वभाव ॥प्रयम०॥

त्रैलोक्यनाथ छुख त्रिभुवन सार

त्रय - ग्वन सऽत्य छुख करान व्यवहार
त्रिनेत्र दारवनि नजराह आव ॥प्रयम०॥

चतुर्भुज वसतिथ छुख वाप च्वोर

चवन तरफन ह्यथ अवस्थायि चोर
चवन वीदन मंज छुख भक्ति - भाव ॥प्रयम०॥

पंच - म्वख आसवुन छुख शिव जी

पांचन प्राणन पसरवुन चय
यमि पांच तरनि तार अन धर्म - नाव ॥प्रयम०॥

शयि शयि छांडथ छुम चोन लोल

ष - म्वखिस कुमारजिय सुन्द छुख मोल
षडक्षर नाव चोन औषध द्राव ॥प्रयम०॥

सथ - संग सादन हुन्द सत्य - रूप

सत्यवादी छुख छुय न केह लीफ
सत् सदाशिव वथ म्य सतच हाव ॥प्रयम०॥

अष्टस्यज सज्य छय कर म्योन पाय

अष्टदल हृदयस मंज चञ्ज जाय
अष्टमूर्ति विष्णु छुख चय मोक्ष दाव ॥प्रयम०॥

नव्युम घर घमुंक चोन दर ध्यान

नव द्वार मुचरिथ रठ मन त प्राण
नव निदान बर्य बर्य छिय त्राव त्राव ॥प्रयम०॥

दशभुज नाव चोन नागिन्द्रहार

दहवनि दिशन हुन्द छुख चय सार
दहन इन्द्रियनय म्यति शमराव ॥प्रयम०॥

एकादश - रुद्र चञ्ज्य भक्तिय छिय

तिथुय कर्त यिथ पर्जनावोध चय
अद कति रावि असि काहन गाव ॥प्रयम०॥

बाहन बुर्जन मन्ज चोन व्यवहार

बाहन यज्ञन मन्ज चोन व्यस्तार

बाहन सूर्यन चोन तीज नोन द्वाव ॥प्रयम०॥

हेरच - नुवश हुन्द छुख रुत फल

राथ - द्यन अस्स्यतन म्य चऽनिय कल

त्रयोदश आत्म - सूर्य तीर्थ मन नाव ॥प्रयम०॥

चवदाह रत्न द्राख चय ओस भक्ति-भाव

चवदश हन्दि स्वामियो म्य ति मोकलाव

पुनिम हन्ज जून छचस मत मन्दछाव ॥प्रयम०॥

पुनिम त मावसि व्रथ दऽर्य दऽर्य

न्यथ करहाय पूज पोश चऽर्य चऽर्य

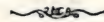
लोलक्यन पोशन करतम क्राव ॥प्रयम०॥

कृष्णस प्रेम चोन यन प्यठ जाव

चऽज सीव करने जन्मस आव

कऽल्य मेलि वावस सऽतिन वाव

प्रयम सरकिय पंपोश छाव ॥



टोठान चय छख भक्ति - भावस

श्याम - रूप लगयो राम - नावस ॥

सासि म्वख गीत छय ग्यवान शेषनाग

राथ - द्यन अस्स्यतन म्य चोनुय राग

जनक - राज चय करनोवथन त्याग

राज - भर्तृहरियस दितुथ वैराग

योग किज टोठचोख भुशुण्ड - कावस ॥श्याम रूप०॥

शंख - मंजु शब्द आवनस लगयो
 बोजवुन मोक्ष दावनस लगयो
 असवुन म्वख हावनस लगयो
 नाश - रस्तिस यौवनस लगयो
 लगयो सथ - रूपकिस स्वभावस ॥श्याम रूप०॥
 हे शिव केशव छुस चीन दास
 शिव - रूप बसवुन छुख च कैलास
 राम - रूप लंकायि करवुन डास
 कृष्ण - रूप किन्नर छुख खेलान रास
 तार दिम मोहनिस दरियावस ॥श्याम रूप०॥
 कति थैव्य समयन कसस जोर
 कति रुज रावणस तिछ दोर - दोर
 कति रुद्ध लंकायि बाह शथ पोर
 अज तात्र संसार कस रुद सोर
 कम्य दीप प्रजलोव मन्ज वावस ॥श्याम रूप०॥
 सर्वव्यागक छुख मन्ज मनस
 कृष्ण रूप दर्शय मन्ज वनस
 कल ह्यथ वामन - जीवनस
 आश्रय चय होवुथ अर्जुनस
 चात्रि भाक्तियि हुन्द छुम म्य हावस ॥श्याम रूप०॥
 रामचन्द्र शीतल छुय स्वभाव
 पुनिम - दोह शिव - आरती करनाव
 चन्द्रचूड सूर्य ह्युह दशुन म्य हाव
 कृष्णस शिव - लोल तिथ गनिराव
 थिय पार्थी करि दरि मावस
 श्याम रूप लगयो राम - नावस ॥

भय - रोस्त थावतम जय - सानो
दय रोटमय चोन दामानो ॥

ताप मन्ज कोत गछ अन्जानय

ब्रोठं छुम ज्यूठ स्यकि - मैदानय ।

न्यथननि सन्दि सायिबानो ॥०॥

मन्ज कंडिनय प्योस कमजोरय

पतकनि ह्यम छुस ननबोस्य ।

अर्जन दोवनि रथबाणो ॥०॥

साध - सन्त गयि पथ कुन म्य त्रऽविथ

हंस पखवय पान वुफनऽविथ ।

ओन त रोन छुस करान मानमानो ॥०॥

नाश - रसिति छुचम चऽनिय आशा

अनिसय अनि गटि - मंज गाशा ।

रनिसय क्युत लद त विमानो ॥०॥

मत वुछ त म्यानिस कर्मस कुन

धर्मस ब्राह्मणस छुय यि दपुन पोऽन ।

म्वकलाविथ निम भगवानो ॥०॥

धर्म - दान रोस्त छुस कर्म - ह्यूनय ।

ब्रह्म - जाँज रोस्त दूशलद क्षूनय ।

यिथि ग्वण छुस चय वर मगानो ॥०॥

आदीनन अवतार दारिथ

तार्य गामत्यन भवसर तऽरिथ ।

कृष्णस ति तार हा दयावानो

दय रोटमय चोन दामानो ॥०॥



सज्जन वन मन कर कैलासय
 बस्तिथि मन्त्र वनवासय रोज ॥
 चवतकुय - भस्म मल वल अतलासय
 साद प्रकृच सन्यासय रोज ।
 ॐ शिव शम्भो कर अम्यासय ॥बस्तिथि०॥
 विषय - त्यागुक दर माघ - सासय
 सत्संगकुय वोपवासय कर ।
 आत्म - तीर्थ मन नाव मोह - मस कासय ॥बस्तिथि०॥
 पान पर्जनविथ पान म आसय
 सर्व - संकल्पन ग्रासय कर ।
 तल - प्यठ त्राविथ त्राव तलवासय ॥बस्तिथि०॥
 श्रीकृष्ण महाराजन ह्यूल रासय
 गोपियि शुराह - सासय ह्यथ ।
 बाल - ब्रह्मचारिय तोति नाव दासय ॥ब०॥
 महामाया ह्यथ रछवुन दासय
 शिवनाथ हृदया वासय छुय ।
 तोति तस नाव द्राव साघ - सन्यासय ॥ब०॥
 कृष्ण अन्दरिमि त्याग मल सूर - सासय
 न्यबरिमि राग वोल्लोसय कर ।
 शुक्रदेवस यिय वनिथ गव व्यासय
 बस्तिथि मन्त्र वनवासय रोज ॥

होश दिम लमयो - पंपोश पादन
 हा साधन हन्दि साधो हो ॥
 यूगियन हन्दि यूग प्राणियन हन्दि प्राण
 ज्ञानियन हन्दि हा ज्ञानो ।
 चानि प्रसाद सज्ज्य स्यद छि तप साधन ॥हा०॥

अचयत चानि - सज्य चयतकुय चेनुन
 न - त गछि मेनुन क्रन्जित्यन पोत्र ।
 प्रेम - जल छुय वुज्जान भाव - नागरादन ॥१०॥
 ब्रह्म - जन्मस यिथ छुस न ब्रह्म - स्मरच
 वुछ म म्यानि राक्षस - प्रक्रच कुन ।
 चानि सज्य भक्ति च्यात्र कऽर प्रह्लादन ॥११॥
 पूरन - प्वरश छचम चऽनिय लादन
 प्रणव - पान वन्दहाय पादन चवन ।
 नाद - व्यन्द कन थाव सान्यन नादन ॥१२॥
 व्यचार - नेत्रन जऽत्र - गाश अन छि अत्र
 हर हरम्बख चयय दिमहाय वत्र ।
 निश्कल - मन निश्काम रामरादन ॥१३॥
 अनुग्रह चोन गछि आसुन साधन
 क्याह छु पापन कवन जथादन प्यठ ।
 दय छुव त क्षय कर सान्यन अपराधन ॥१४॥
 कृष्ण अय चानि कपटनि - तल नेरिहे
 अद कति पैरिहे जाम नव्य - नव्य ।
 पुशि कति प्ययिहेस होज्जन त रादन ॥१५॥
 छोंपि मन्ज आय तस छोचाह बनिहे
 अद कति बनिहे जेछर यूत
 याद अय रोजहस वुनि छुस आदन ॥१६॥



प्रबाथ हो आव अछि मुचराव
 न्यन्दर मो आव न्यन्दर मो आव ॥

छु चमकान आत्म - सिर्युक गाश
न्यबर अन्दर यि चयथ आकाश ।

मुचर अछि - दार्य मो त्रोपराव ॥०॥

छतत्र ह्यतिनय चय कृहनिय कीश
च चैनन कोन छुख बोगदीश ।

समय गव रंग बदलिथ आव ॥०॥

समय जन बांड - जशनाह जान
गछयस युथ त्युथ गंडन सामान ।

नोवुय नोव पथराह ह्यथ चाव ॥०॥

ज्ञानुक दीप प्रजलवन ज्ञान
व्यत्तार नेत्री वुछ शिव ध्यान ।

वुजिय युथ न ख्यालुक वाव ॥०॥

संगरमालन छत्र सांपुन
जगथ सोख्य ह्योतुन नांपुन ।

च म्वोख अद्वैत अजनस हाव ॥०॥

वोद्यूगाह कर्त स्वामी स्वर
स्यद्ध पानय दियिय ईश्वर ।

सु करिय युथ च करहस भाव ॥०॥

म कर चेर फेर होशस कुन
वोद्यूगकथ - ज्याम नजलिय छन ।

चयतस वुजनाव आलुछ साव ॥०॥

गछुन हुशार बड गथ छय
चय लागत्र क्वस लागथ छय ।

निराशन पानय गाश ही आव ॥०॥

कम ख्राव धर्म - पादन पाव

गछ आत्म - तीर्थ तन मन नाव ।

वखच - सर प्रेम पोण्याह छाव ॥०॥

खगन चवन मंज छु चूरुम जान

खयथ चयथ गछान छु खवश भगवान ।

पतिम पहरस छु युथ स्वभाव ॥०॥

खगण वन गछि करुन वोपवास

ग्रहस्थ त्यागुन वनुन वनवास ।

छ वुनि - क्यन बस कुनुय दय - नाव ॥०॥

खग - राजस छु जय - जयकार

योहय छु स्यद - दिनुक मोखतार ।

चह भूगन भूग मोक्षय प्राव ॥०॥

गनीमथ ज्ञान अमिसुन्द राज्य

कलस प्यठ थव व्यचारुक ताज ।

कमानाह तुल निशानाह पाव ॥०॥

दयस निश यलि चवनवय चाय

दिचन प्यठ कनि अमिसय जाय ।

असुन्द पानय वजर गंजराव ॥०॥

खगन हुन्द अनुग्रहकुय अन

तप - अगन पाकवन गय जन ।

यिवान छुस येथ्य खगस मंज छाव ॥०॥

शोन्गुन छुय खवश यिवान वुनिक्यन

स्यदथ छुय दय दिवान वुज - क्यन ।

यिथिस वेलस सु मो मशराव ॥०॥

यिवान छिय वुछिनि कम कम दीव

ह्यसस कुस आसि वुज - वचन जीव ।

स्यदच हन्दि यारबल छस नाव ॥०॥

फुलय लज्य भाववचन पोशन

मुबारक साहिबि - होशन ।

यिथिस वेलस करज ह्यज क्राव ॥०॥

करज ह्यन बूल्य जानावार

कृष्ण कर पोशनूलज कारः ।

प्रयम - सज्य कृष्ण गीथाह गाव

न्यन्दर मो आव न्यन्दर मो आव ॥

मनं पोश लागय शेरे, पूजा करय टाछि वेरे ।

आनन्दघन बोज दरे, सोऽहं शब्दावुम सोज ॥

इन्द्रिय करहय अर्पण, देह - तीर्थस प्यठ तर्पण ।

प्यतरन ति शर क्याह नेरे, सोऽहं शब्दावुम सोज ॥

शुर्य बँच बन्ध तय बांधव, सोर छम 'तत्-स्व' अनुभव ।

घरमँच फुट तव नेरे, सोऽहं शब्दावुम सोज ॥

प्रारब्धुक भार जोलुम, अभ्यास अनुभव पोलुम ।

चानि वेरि चानि अकि जेरे, सोऽहं शब्दावुम सोज ॥

जायि पथ जायि वुज वुछहय, मायि भरि मायि नाल रटहय ।

सोन वुगुन ति समिसँय, फेरे, सोऽहं शब्दावुम सोज ॥

वारँ वुछ वुछ, वारँ वुछहय, वुछ वुछ वुछहय तँ वुछहय ।

वुछवुन नोन क्याह नेरे, सोऽहं शब्दावुम सोज ॥

यिय छुख तँ तिय छुख पानस, यिय छुस तँ तिय छुस पानस ।

पौत्रपान पननिय वेरे, सोऽहं शब्दावुम सोज ॥

युसँ विज् यमि विजि आसे, सोय विज् तमि विजि भासे ।
 विजि विजि वुज् वुन चूरे, सोऽहं शब्दावुम सोज् ॥
 कर्य कर्य करवुन करि क्याह, पर्य पर्य परवुन परि क्याह ।
 करनस तँ परनस पूरे, सोऽहं शब्दावुम सोज् ॥
 पूर कर पवनस तँ पानस, शूभ क्याह यथ वाँत्रवानस ।
 फालव ति पाँत्रपान फेरे, सोऽहं शब्दावुम सोज् ॥

संसार छुय मुह जंजाल, वासना गाल वासना गाल ।
 अँस वहरिथ छु काल शाहमार, वासना गाल वासना गाल ॥
 वासना छय शोंगिथ शाहमार. वासना ज़न त यचकोल ब्यमार ।
 विषयन वुछिथ गछान हुशयार, वासना गाल वासना गाल ॥

अज्ञानँच छि गँज्य वुहवुज, काम क्रूथ छुख पाकँनावान ।
 भूगान छु तथ जीव कंगाल, वासना गाल वासना गाल ॥
 बाज् - गशँ फेर शिव - भाव प्राव, सोरुय जगथ म्य मंज् द्राव ।

प्रथमाभासँ परजनाव लाल, वासना गाल वासना गाल ॥
 अँथ्य थानस वनान छि श्मशान अति रोज़ान पान भगवान् ।
 वीद्य गँलिथ भस्मा मोचान, वासना गाल वासना गाल ॥
 अति नो रोज़ान छि छल बल, अति नो रूद कामुक बल ।
 अँथ्य जागि रोज़ रोज़ि नो काल, वासना गाल वासना गाल ॥
 विषयव सँत्य मेलि नो दय, नजि बनि अमि सँत्य पापन क्षय ।
 यि छि सौरय वासनायि हंज् चाल, वासना गाल वासना गाल ॥



जाफर्य पोशस छु लक्ष्मी अंग तय
 सोऽन सुन्द रंग तय पूजायि लाग ॥
 सऽत्य देव लक्ष्मी नारायण तय
 सर्व देव-जाथ कासि दुर्गथ
 पोश पूज कर तस भक्ति-भाव मंग तय ॥०
 मादलि हियि पंपोशन ढेर कर
 तुलसी छाऽव्य छाऽव्य शेरतस पान
 सोन्दर ड्यकसऽय ट्योक लाग कोंग तय ॥०
 सोय दियि मोक्ष व्ययि भक्ती-भाव
 धारणा ध्यान ज्ञान यूग व्यचार
 वसनस नाव खसनस क्युत प्रंग तय ॥०
 सत्स्वरूपन निशि ह्यछ करुन भक्ति-भाव
 पान थव दास-भाव तिम बरहंग तय ॥०
 यूत जानख त्यूत पूजि मंज लीन बन
 भक्ति-भावस मज्ज अऽधीन बन
 सुय छय रत साथ सोऽय रऽच जंग तय ॥०
 सोऽय दया मंगतस भक्ति-भावस सान
 योऽस कासि राग देह-आभिमान
 व्यवहारन छख ओनमुत टंग तय ॥
 ज्ञान कुलिसँय छिय शम दम लंग तय
 शान्ती मूल मोक्ष त्युहुय छस
 स्थित भक्ति-भाव रस भरिथय टंग तय ॥०
 ब्रह्मांड पान ज्ञान वाए सैरस नेर
 सारिनय तीर्थ-यात्रायन फेर
 जोर मुचराव व्यथ-तोरगस डंग तय ॥०

कचाह हचक वनिथ ज्यवि प्यठ अनिथ
 सुय ज़ानि यस युथ वनिथ आव ॥
 घरिय ओसुस छचनिथ त छटिथ
 यादय प्योमो तस म्योन नाव ।
 मस गोस कस हचक अन्दरिम प्रनिथ ॥०
 च्यथ बुद्ध मन प्यव वतिय छचनिथ
 दृश्युक छुय अत्यन्त अभाव ।
 तति कचाह मन स्वरि ज्यव ह्यकि वनिथ ॥०
 यिय गोम सानिथ तिय गोस वनिथ
 कचा म्य रोस्त नय अख हवाव ।
 सन्तन त साधन यहय कथ छि ननिथ ॥०
 केह मुननय केह मुनन छि छटिथ
 केचन वुर वुगरह केचन पुलाव
 तस त्युथ मज युस युथ ह्यकि रनिथ ॥०
 तन मन धन छुन ग्वरन कऽनिथ
 परवाय न केह लूख तुल्यतन ति टाव ।
 मालूम तस युस छु दीह निश तनिथ ॥०
 गोवेन्दन वोन वनिथ त सीनथ
 अद नैज पऽठिय बाजार द्वाव ।
 म्वोल कम न गछान किबरय छाँनिथ ॥०
 आहमो रोगे रागे, जोगे मति मस्तानय ॥
 जन हा ओस अभिज्यथ साथय
 कोरथम च्य शक्तिपातय ।
 नत ना ओस मोकलन पायिय
 जोगे मति मस्तानय ॥०

गंगा जटि छय जऽरी

करथम चय पननिय यऽरी ।

पादन लगय पार्य पारिय ॥०

भक्तिवत्सल ही निर्मलय

चऽनी कल छि निष्कलय ।

मूक्षदात सर्वमंगलय ॥०

डचकसय छुय चन्द्रमय

सुय वुछिथ चोलमो म्य गमय ।

हृदयस आव परम शमय ॥०

गटिसँय कोरथम म्य नाशिय

प्रथ तरफ गाश छु गाशिय ।

दासन छि चऽनिय आशिय ॥०

कोरथम चय मे प्रसादय

सोव चऽत्र पम्पोश पादय ।

सीवै वँत्र छि संत तय साधय ॥०

चानि दर्शन चोल म्य होलुय

चँय म्यऽत्र मऽज्य तय मोलुय ।

चयय हवाल गोवेन्द कोलुय

जोगे मति मस्तानय ॥

दय नो वुछान यालि चालि ग्राये

वुछान सु अन्दरिमि राये कुन ।

दय नो वुछान अथ बुथ छलनस

वुछान सु मनि दँय चलनस कुन ।

वुछान न दय प्रनि - क्रेहनि कायाये ॥०

दय नो बुद्धान वननस त प्रननस
 बुद्धान सु सननस त सोरनस कुन ।
 दय नो बुद्धान धन - ध्यार - दाये ॥०
 दय नो बुद्धान कम - ज्याद परनस
 बुद्धान सु तथ अमल करनस कुन ।
 दय खोश स्यजरस पजरस माये ॥०
 दय छु न बुद्धान वणाश्रमस
 बुद्धान सु मिटनस भ्रमस कुन ।
 संशय गलनस व्ययि वासनाये ॥०
 दय छु न बुद्धान रँच कथ करनस
 सु बुद्धान जिन्दय मरनस कुन ।
 धर्मव मंज बुद्धान छय अहिंसाये ॥०
 दय नो बुद्धान जाऽच तय नावस
 बुद्धान सु भक्ति - भावस कुन ।
 माये बुद्धान खोऽत पूजाये ॥०
 दय नो बुद्धान ह्यनस त चनस
 दय बुद्धान छियो मनस कुन ।
 यस टोठि तस बुद्धिने कर्मलीखाये ॥०
 दय नो बुद्धान ब्रथ न्यति धरनस
 बुद्धान छ सुय शरणस कुन ।
 गोवेन्द वोरणो दयि सन्जि दयाये ॥०



रंध मो दि अथ गंध पानस
 अमि साबनि मल नो चलिय

अथ तस्वी वलिथ जन्दै
 अमि फन्दै सु नो मेलिय
 असलस कमीनस खसलथ नने
 कावस क्रहन्यार चलिनो जांह
 काव ते छलिहे सऽत्य साबने
 कावस क्रहन्यार चलिनो जांह ।



कष्ट कास्तम भगवान हरे
 सन्तुष्ट रोजतम गऽरि गरे ॥

भ्रमचे वुनले वुअरोवस, मोह छटि अनिगटि वति रोवुस ।
 चयय रोस्त कुस म्य अथ रोट करे ॥०॥

भवसर क्रिमनय रटिनम खोऽर
 कमजोर लऽगिथ गोस कमजोर ।

छाम्बरि लोगमुत छुस छाम्बरे ॥०

वेरि बो लागय शेरि पम्पोश

गद् गद वाऽणिय थावतम गोश ।

वद्य वद्य यच् छम म्यच् मा हरे ॥०

वैकुण्ठ प्यठ यित ननैवोरुय

गरुडस खसिथ अऽविथ सवाँरिय ।

म्वकलावतम संकटचे थरे ॥०

संकट मंज तस प्रह्लादस

कन थाव तस अऽचंर नादस ।

हिरण्यकल्यप अद मद उत्तरे ॥०

हंग आख द्रौपदी नंग रछथस

नंग वुछुन तस सामरथ कस ।

रंग रंग आव बरनें जाम तस हरे ॥०

लक्ष्मण छारुन परमानन्द

चराचर युस पोशि अन्द - वन्द ।

लोलो करान नेरि ओऽन लोलरे ॥०



घरि घरि पूज कर गुरु पादन तय

भट्ट इकवटँ रठ मन तय प्राण ॥०

गुरु छुय ब्रह्मा जी आसन तय

गुरु छुय सत् किज श्री भगवान ।

गुरु छुस महेश्वर आस मानन तय ॥०

गुरु शब्दस प्यठ वारें थाव कन तय

तारें तर च मारसर पननुय पान ।

जरि जेरि क्याह आसि नाव नेरन तय ॥०

सोऽहं हम पजि रजि लमुन तय

बाल रठ च नाव छुय वावें अज्ञान ।

लबि रोज आसख तार लबन तय ॥०

सुलि च बोथ प्रथ प्रभातन तय

करतँ कर च वर त थाव पय लय सान ।

खय कास मनकिस आईनस तय ॥०

पार दिस नख तल यलि रोजि सोऽन तय

रऽविथ आसख मोख्त लभान ।

म्वचि पथ कुन म्वचि रूप बदन तय ॥०

काम क्रूध लूभ ब्ययि मूहन तय
 राजस ताराज करिहे जान ।
 पानें दातें अस्सिथ छुख बेछन तय ॥०
 ब्रह्मण जन्म कित्र छुख च भ्रमन तय
 ब्रह्म अख तें माया ब्याख जानान ।
 पनस सज्य डीज ज्ञान डेंजि सज्य पन तय ॥०
 परमानन्दसय गोन्दि लक्ष्मण तय
 वन्दतस वन्द ज्ञव तय जान ।
 तव आसि परमानन्द प्रावन तय ॥०

—*—
 यस निश सु प्रकाश द्राव नोनय
 तस जानि जानस दू वोनय ॥
 हरदम ओमस लय च कर
 चयथ नाम तोरगस तय च कर
 दोर त्राव ब्रौठ तोत छु वातनुय ॥०
 ओमस त पानस लय च कर
 ओम पद सज्य पान सर च कर
 ओम रोस्त केह छुन लारनुय ॥०
 हरम्बख तस गछि लारनुय
 गुरुम्बख सुय गछि धारणुय
 सार छुनें संसारस युनुय ॥०
 मन्ज मयखान गछि मय चोनय
 पय ह्यथ थानस वातनुय
 जाम छिय ब्योन ब्योन त मय कुनुय ॥०

ज्ञान कर च पानस छुख च क्याह
ओसुख क्याह तय आस क्याह
हाह ज्ञान तोत छा तूनुय ॥०

ह्यकखय च लाय डुंग सोदरस
अथि ह्यथ दुर्दान वोऽठ च खस
यछि कस लालस मेलनुय ॥०

वासुदीव सखी प्राव मनस
न्यथ छुसय प्रारान दर्शनस ।

ओऽन क्याह ज्ञानि जग तय प्रोनय ॥०



सोऽख शब्द दर्शन चाने
आनन्दधन टाठि म्याने
राथ - दान करान छुस चयन्तन
क्षण - क्षण छुम म्य चंचल मन
ईश्वर दूर्यर चाने ॥०

राग चोन युस म्य छुम मनसय
सात सात रातस दानसय
म्यऽत्र दुःख चय रोस कुस ज्ञाने ॥०

राजन हन्दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखिथ म्य क्याह ओस लाने ॥०

योदवय च म्यात्र कथ बोझख
दूरि दूरि चूरि क्याजि रोजख
रोज चूरि हद् - गुफायि म्याने ॥०

यच्चकोल चय तँ म्य दूर्यर
 किथ जोरुथ यथ कोरुथ न पूर्यर
 अद कर यि जट यलि प्राने ॥०
 ओसुस जलँ बँय निमल
 मूह कठकशि कोरनम म्य छल
 वचिनम कचि शीनँ माने ॥०
 त्रेशि हतिस मनसँय त्रेशा
 अमृत वरुन बँ डेशा
 गलि शीन अकि कटाक्ष चाने ॥०
 कर्म किअ वेश कस्त्य दसरिम
 गर्दभ बुधि भाँयँ ससरिम
 वृषभ वीश तलँ अलबाने ॥०
 कामनायि ओतुर कोरँनस
 अमृत भास्योम दोहँ रस
 ओपँरोवुम म्य दानि दाने ॥०
 कन थोवुम नँ सत्गुरु शब्दन
 जर चोनुम खोस्ट्य प्रारब्धन
 कर्मव कोडुस परनि छाने ॥०
 अर्तिस चाव अमृत रस
 संसार निशि बनि मूक्ष तस
 बनि नोजन अनुग्रह चाने ॥०

— ० —

शोकरो डंग लाय सोदरस
 महरंम गच्छख दुरदान सय

दुरदान बँ ति कोताह ज़रय
 सूर गोम चाने दूर्यरय ॥०
 अथ दर्द बागस अछतो अन्दर
 च्वशवँय तरफव त्राव नज़र
 बेसर छि फेरान दर-बँ-दरय ॥०
 अथ दर्द बागस अछतो अन्दर
 च्वशवँय कूँजव त्राव नज़र
 नज़राह त्रविथ जल नेर न्यबर ॥०
 दोऽद छुम म्य जिगरस हाव कस
 दऽर छम न मुचरिथ हाव तस
 अंदरिम दोऽद गोम अन्दरय ॥०

शरीर ज़ोलनम अम्य हा लोलनारन
 बे आरस आर नो छुये
 शरीर ज़ोलनम अम्य मदनवारन
 बे आरस आर नो छुये ॥
 प्राण ज़ोलनम पवनैकि नारन
 शशिकलि हुन्द म्य नार छुये
 समाह कोरनम म्य उँकारन ॥०
 लँयि लोसम म्य तोसँ चारन
 रुम चार्यमस म्य मोये मोये
 दमकिय पन जन छस खारन ॥०
 बडि मनसर यार छुस बँ गारन
 मा ईश्वर अथ मन्ज छुये

काम - क्रूध - लूभ - मूह छुस बँ थारन ॥०

वुछत मारँ कऽत्य कर्य अहंकारन

नार गोंडनम हा मोये मोये

फान कोरनस अनफासँवय नारन ॥०

बदन जौलनम अभ्य मदनवारन

हय व्यसि यार यियम नये

व्यचार मनसर गारहोन व्यचारन ॥०

शास्तर बल छुसया गारन

नाँत्य दासस शास्तर मा छये

शास्त्र बरसर ताज दीन दारन ॥०



अज वाति बूजुम मोल म्योन कोसम वतन वथरावसय ।

लछ जन डविथ सन्ताप पाप अन्तःकरण घरँनावसय ।

ठोकुर कुठिस मन्ज रंग रत प्रंग आदरुक पैरावसय ।

सोम्बरिथ रसित्य रऽत्य कर्मफल मस खाँस्य बर्य बर्य थावसय ।

अशि गंग वाने खोर छलस रुमालि गुमँ वथरावसय ।

तिम पाद हृदयस मंज रटिथ द्रख दऽद्य जन्मकि बावसय ।

भावुक घन्यर लोलुक सन्यर वऽलिज मुचरिथ हावसय ।

नोवँ नागरादस सोन्य जन श्रेह मायि हुन्द वुजनावसय ।

ग्वर - भावनाये सऽत्य शेर नोमरिथ खोरन तल त्रावसय ।

घरँ - बार तय आसुन बसुन सोरुय पनुन पुशरावसय ।

गट - पछि चन्दर जन नाम रूप अख अख कला व्यगलावसय ।

सिरियस अन्दर लय प्रावि जून सार्यय बनन त्यच मावसय ।



वृद्धिम गथ चाँत्र दैवागथ चय व्यन दय नो सरय लो लो
 म्य अन्दर कर पनुन मन्दर वँ चयय पूजाह करय लो लो ।
 वँ चाने वेरि सोम्बरावय अछव किन्य रंग रूपुक रस
 कनव कित्र शब्द - साजुक मस अनिथ खास्यन भरय लो लो ।
 म्य कुन बुछ बुछ असान छूख दूरि रुजिथ आसमानन मंज
 गुपिथ छूख दास्तानन मज् यि दूर्यर नो जरय लो लो ।
 फिजा त्राऽविथ म्य खनित्मय जिश्य जमीनस तल तँ पूरँत्र छिम
 स्यठा देवार लूरँत्र छिम चय रोस्तुय क्याह करय लो लो ।
 वँ छुस पोंपुर चय दीपस पथ चटिथ यिम जाम करहा गथ
 दिहमनय जाम चटनस वथ कयोमा ह्यू मा मरय लो लो ।
 नितम पम्पोश पादन तल तिमन हुन्द बम्बुरा सूजिथ
 कंडचन प्यठ छुस मरे रुजिथ वँ चाने आसरय लो लो ।
 जमीनस जन्मकिस वविमँत्य अशिकि दुर्दान कँह बविमत्य
 अछिन मंज छिम रछिथ थविमँत्य तिमय खूवे जरय लो लो ।
 यिमन जोयन अन्दर योदवय छु चाने सहज धर्मुक जल
 बठचन हुन्द छुस सम्योमुत मल म्य चावुम आगरय लो लो ।
 पनुन मे तीजकुय आगुर यिमन जरँन अन्दर भासुम
 कुन्यर भाऽविथ यि दँय कासुम घटे हन्दि गाशरय लो लो ।



स्मरण पनत्र दिचऽनम लोलुक निशान व्यसिये
 रखरुन तोगुम न रोवुम ओसुम नँ बानँ व्यसिये ।
 पथँ कालि छुम न द्युतँमुत स्वनँ म्वोक्त दान व्यसिये
 अनि सारि क्याह लबख वोऽत्र तिम म्वोक्त दान व्यसिये ।
 वाऽलिजि मन्ज थवून गोऽछ हावूम थोवम अथस प्यठ

राह कस छु कोऽर म्य पानस नोक्सान पानें व्यसिये ।
 हावुन छु रावरावुन चाबुक समर छु खामें
 थावान छि छाव बापथ बानन जि ठान व्यसिये ।
 यनं सुय निशान रोवुम तनं मच गामेंच त फलवा
 न्युन ह्योन न केंह ति फेरान छस वान वान व्यसिये ।
 यछ पछ म हार व्याखा ह्यथ योर वाति कांछाह
 तस छा कमी निशानन भय भयें खजान व्यसिये ।
 डोलान कोहन वनन मंज शोलान छि गुलशनन मंज
 जोतान छि तारकन मंज कऽत्याह निशान व्यसिये ।
 व्यसरिथ डलिथ पथर प्यथ बुथ क्याह दिमव तमिस निश
 पथ फेरनुक पकान छा यथ ह्यू बहान व्यसिये ।
 मानव जि अस्य ह्यमव पथ छोर्या तसुन्द मुहब्बत
 पैबन्द यि आदनुक छा शुर्य दोस्तान व्यसिये ।
 दिल फुटिमत्यन सु तोशान यञ्च गरिमत्यन छु रोशान
 गछ वरिमत्यन सोदामन पृछ गाथिबान व्यसिये ।
 अन्ध पश्य तती छु आसान बोऽद्ध बोर सूरदासुन
 बोजान छु माय लाऽगिथ लोलुक तरान व्यसिये ।



पानय म्य पान हाऽविथ आशायि धारनाऽविथ
 तनहा चोलुख म्य त्राऽविथ कस म्यानि जूगिरायो ।
 वुछनाऽवथस मनुक मल स्वोन म्योन द्राव सरतल
 वुछमख न वार कोरथम चस म्यानि जूगिरायो ।
 ह्यकखय वुछिथ च तिम छोऽख मुचरिथ यि सीन हावय
 चय वन चयय रोस भावय कस म्यानि जूगिरायो ।

यव किन्त्य बेस्वम छि कोमल हृदयस कठोर वाणी
 ग्रावन दिमव यती छचन वसेँ म्यानि जूगिरायो ।
 लोबमख त वोअर मँ रावूम बालन कोहन मँ छावूम
 सत्संग प्याल चावूम मस म्यानि जूगिरायो ।
 भगवान सोन बूजिन असि चाअन्य आशि रुजिन
 हथ वांसि माजि माअलिस लस म्यानि जूगिरायो ।
 न्यथ इष्टदीव सन्धन पम्पोशि पादनैय तल
 बोम्बुर बनिथ चवान गछ मस म्यानि जूगिरायो ।
 दयि सुन्द प्रसाद सत्जन भक्त्यन छि बाअरावान
 लोलुक चवान त चावान मस म्यानि जूगिरायो ।
 पजि लोलके प्रभावय भूगान स्वख त सावय
 नीरूग राज यूगस खस म्यानि जूगिरायो ।
 वोपकार म्यानि बापथ थोद योग पीठ त्राअविथ
 असि निश ति क्यूँच कालाह वस म्यानि जूगिरायो ।
 यवँ किअ च परम त्यागी लोग छुख न राजदारन
 यथ फुटिमतिस मनस मंज वस म्यानि जूगिरायो ।
 भाषण मोधुरच मोधुर्य कर फुटराव शक्करसेँ म्वल
 अभिमान कोसमन हर अस म्यानि जूगिरायो ।

आमच मनस रँच वासना ईश्वर सफल करिना सना ।
 एकान्तकिस गहलिस अन्दर उपरामकिस शिहिलिस अन्दर
 पम्पोष पादन द्वन मलान पननिस ग्वरस बो आसहा ॥०
 पूजायि व्यध केँह जान मा लोलस निषध केँह मान मा
 छचपि चूरि कुनि म्पूठा दिवान लोतेँ तथ खोरस बो आसहा ॥०

यचँ लोल अछ वछ थाववुन अछ टींटी रोस्त ओश त्राववुन
मुन्दर मोखच कान्ती बुछान तस सोन्दरस बो आसहा ॥०

वाणी तसज विज्ञानमय जन साम ग्यवनस पानँ दय
तन मन बनिथ कन बोजवुन मधुरिस स्वरस बो आसहा ॥०

सत् शब्द नोन व्यस्तारिहे उद्गोथ स्वर योद खारिहे
करवुन मनन सादुल चवान श्रवणुक सु रस बो आसहा ॥०

वृजिथ श्रवण पादन प्योमुत संसार निश म्वकलिथ गोमुत
पुशिरिथ पनुन सोरुय जगत परमेश्वरस बो आसहा ॥०

वुज तात् ! वन्य वन्य गारिहम करपद्य हृदयस सारिहम
जल - बिन्दु जन मीलिय गोमुत सोख सागरस बो आसहा ॥०



पांछ दोह यावननि श्रावणनि सूरी ।

यो बूल त्याग कस्तूरीये ॥

मतँ वुछत ससारचि शोभायि कुन

मत वुछत देह स्वन लंकायि कुन

वद्य वद्य गयि लद्य लद्य लूर्य लूरी — यो बूल०

ससार वन छु कस लारि क्याह यस छु तस

जेठुन छु ब्रेठुन बस कर बस

यति प्यव सारिनय पुशि पूर्य पूरी — यो बूल०

व्यवहार बोझ सोस्त अन धन द्यार सोस्त

गाटजार सोस्त ब्रह्म व्यचार रोस्त

मूत्र हिव्य गयि हूत्र जन वूर्य वूरी — यो बूल०

त्याग वैरागुक बन अधिकाऽरी
 संकल्प विकल्प साऽरिय त्राव
 ममता पतं थाव वथ युथ न दूरी —यी वूल०
 मोह जाल मंज नेरनुक वोपया
 कर, राज हंसुन साया त्राव
 अमर नाथचिय जानवर जूरी —यी वूल०
 क्रिययि खोऽत छुय शुद्ध वासनायि फल
 पूजायि खोत प्रेमस तं मायि फल
 कृष्णस रायि चानि आयि मन्जूरी —यी वूल०

—०—

हे दय ! बोज कनय चयय रोस्त कस ब वनय ।
 करयो अरचनय चयय रोस्त कस ब वनय ॥
 संसार आवलुनुय यि छु सनि खोत सोनुय
 अथ्य मन्ज आस ह्यनय चयय रोस्त कस ब वनय ॥
 चोवनस मोह मसय रुदुम न ध्यान ह्यसय
 वोनमथ गोस तनय चयय रोस्त कस ब वनय ॥
 हरुम म्य कष्ट हन हन हरि - हर छुख थवुम कन
 आऽरचर आलवनय चयय रोस्त कस ब वनय ॥
 सूक्ष्य निर्मल करुम वथ प्रत्यक्ष पाऽठिन ब वुछहथ
 सऽत्य ज्ञान लोचनय चयय रोस्त कस ब वनय ॥
 चयतस सोय कल करुम पूर अज्ञान मल गछ्चम दूर
 हे टाठि निरञ्जनय, चयय रोस्त कस ब वनय ॥
 पादन तल ब प्यमय चाऽनिय तोता करय
 वार वार आर अनय चयय रोस्त कस ब वनय ॥

वासनायव नाल रोटहस संकल्पव ब चोटहस
 कोडहस पन पनय, च्यय रोस्त कस ब वनय ॥
 दितम सत्संग म्य हरदम यियम शान्ती त शम-दम
 बनिथ आजाद बनय च्यय रोस्त कस ब वनय ॥
 विष्णु थवतन समाधान चलयसद्यव देह अभिमान
 मंगन छुय क्षण क्षणय, च्यय रोस्त कस ब वनय ॥



यियि कति भक्तिस मनि मन्त्र भाव
 दियि नय दात यस मंगने द्राव ॥

अनुग्रह पननिय अनुभव रूप
 अनिस अनिगटि क्याह करि दसप
 वुछि सुय यस दपि अछ मुचराव ॥०
 स्वर्गस छि मुचरिथ दारि त बर
 अछ रछ नचवनि तथ्य अन्दर
 हरि युस थरि गुल सुय करि क्राव ॥०
 दयि लोन जोन कम्य कस पर्जनसविथ
 ह्योकमुत छु कम्य कस सीर भसविथ
 सोदरय मज वाव तार्यस नाव ॥०
 चन्दकुय रावि तस यस न दियि दय
 द्रल्यदस संचित पोशस न वय
 रोऽनमुत अन् कति तस ह्ययि छाव ॥०
 करवुन हरजुव पात्र पानय
 पजि युथ समयस सामानय
 कर्म छुर यस यियि तस क्याह गाव ॥०

परमानन्द वन्तं सुदामुन
दोऽदरिथ कुलिसय यिया बामुन
हरदय सदी गोश फुलनाव ॥०



रामकृष्ण मनसंय मन्ज वथरावय
भावय पननिय गोसं तं गम
पम्पोश बागस मन्ज वथरावय ॥०

चतुर्दल छुख गणपत नावय
मूषक वाहन दुर्ग नासम
मूलाधारी दार वथरावय ॥०

षष्ठदल ब्रह्मा बडि प्रभावय
हम्सस खसिथ छुम चोन आश्रम
षोडश थान थान वथरावय ॥०

दशदल कृष्ण छुख बडि चिकंचावय
गरुडावाहन निश न वेश भ्रम
मन पूरख पूरय वथरावय ॥०

द्वादश दल निर्मल स्वभावय
वृषभवाहन अलख तं आगम
अनाहत मण्डलस मन्ज वथरावय ॥०

षोडशदल मन मूढ स्वभावय
दीव छिय वखनान जीव आत्म
विशुद्ध चक्रस मन्ज वथरावय ॥०

द्विदल [द्वादल] परम आत्म गुण गावय
यूगी छि तति करवेत्र शम त दम
आज्ञा शिखरस मन्ज वथरावय ॥०

सहस्रदल सैय शेर पादन तल त्रावय
गुरु - वाक्य सऽतिन वथ म्य हावतम
ब्रह्मरन्ध्रस मन्दरस वथरावय ॥०

जऽज हन्दि जल सऽत्य थलरावनावय
सर जन पम्पोश मन म्य फोलिहेम
मन म्योन मन्जुल लोति लोति अलरावय ॥०

हाल म्योन भऽव्यतव तस रामकृष्णस
आरकऽच दाँसी प्रारान छस
लछनावि मन मन्जलिस वथरावय ॥०

शेछथ म्यऽज नियितोस बुलबुल तँ कावय
अछबल बागस मन्ज यियिहेम
लछनावि गछ कुठि मन्ज वथरावय ॥०

परमानन्द प्राव सोख तय सावय
गुरु - म्बोख मानुन बुय सोऽहम्
मान - अवमान निश रोज निर्मावय ॥०

कर्म भूमिकायि दिजि घर्मुक बल ।
संतोष व्यालि भवि आनन्द फल ॥

द्वयि प्राण दान्द - जूर्य दन त राथ वाय
कुम्भक कर जोर तिम नँय लाय
हिल कर युथ न बीठ रोजि कांह र्यल ॥—सं०

लोल के अलफाल तुल नऽविथ

घैर यट फुरि दत फुटरऽविथ

वैरक सैह युथ न रौजस तल ॥—सं०

व्यचार बऽथ त बेर लऽदित कथ
 श्रुच यन द्यव शोजरऽविथ वथ
 समदृष्टिपात जन पद फेरि जल ॥—सं०
 सोन्थ छुय दोह तारें मोऽत यावुन
 पजि नजि साथा रावरावुन
 वव ब्योल मव प्रार करु मंगल ॥—सं०
 त्रपुरिथ स्फुरनायि नाऽम्य वुडर
 सुरके रवि चख सऽतिन भर
 इन्द्रिय गगरन करु वटुल ॥०—सं०
 भक्तच हजि न्यदि फेरि साधनायि खीत्य
 ह्यलि नेरि तपके पप सग सऽत्य
 संभावनायि फोऽलि पंपोष डल ॥०—सं०
 विषये पऽश वऽर रछिनावख
 तिमनय अथि युथ न खीत्य ख्यावख
 भावचि रावछि नेर निष्कल ॥—सं०
 ह्येलि यलि नेरि त्यलि संपन्यस क्राव
 वैराग द्राति सऽत्य लून्य लून्य त्राव
 संबन्ध रोस्त मऽव्य लाव्यन वल ॥—सं०
 मटि खसँनचि रजि मटि मटि सार
 साधनि अनँ भऽय बन्ध तँ यार
 न्यति नेम सुमरिथ अद समि खल ॥—सं०
 त्रिगुण त्याग नोम अख ग्वणि लद
 निर्मान प्रावख निर्वान पद
 शम सऽत्य तम दित त कर कुशल ॥—सं०

ध्यान धारणायि वान मुड विस्तार
 ज्ञान दान खास खास घास निश चार
 मनके अनुभाव वार दित छल ॥ सं०
 त्यागके अर्थ सज्य वार छोम्बनाव
 प्रोजन तँ जग भ्योन भ्योन फुट जन थाव
 जागि रोज लागनयि अविथ ज्वल ॥ सं०
 तूलिथ अद थव अम्बरस माल
 सोऽहम् हायक सज्य नख वाल
 लोति भार वातनविथ खनबल ॥ सं०
 शम दम यम नेम घाट वात नाव
 शान्ति श्रद्धायि जल पकनाव नाव
 पानस शिहलिथ मानसबल ॥ सं०
 लागनयि वालि माल आगस तार
 खाज्य युथ न रोजि हाज्य जागीरदार
 फाजिल त बाज्की नेरि कस तल ॥ सं०
 चौरिथ ब्ययि ब्ययि सन्च्यथ थव
 सोन्थ येलि यियि त्यलि फलि फलि वव
 उपकार वोपदिय नोव नोव थल ॥ सं०
 योग मायायि हुंद भुगी आस
 यी छय दुय तस सज्य तिय कास
 साधु नाव प्योय तय स्वादँ मो डल ॥ सं०
 कर्मफल सोरिय गुरुशब्दय
 संच्यथ क्रियमान प्रारब्धय
 कर्मकांड वनि नेरि ज्ञान वुज्जमल ॥ सं०

स्वयं प्रकाशिकि विज्ञानय
 त्राऽविथ मान भियि अभिमानय
 प्राऽविथ रोज द्वादशान्त मण्डल ॥स०
 परमानन्द ओस जमीन्दार
 हूरिथ धन चार सूरिथ लार
 वांगऽज वारिच चजिस गांगल
 संतोष ब्यालि बवि आनन्द फल ॥

पांच त्रे भागलिस करारदादस
 वादस ज्याद न जि कम ॥
 फिक्रि टोंगें मनकिस नागयरादस
 जिक्रि नेरि आबि जमजम
 शीरिनि पत गोऽल पान फरहादस ॥०
 करखय गंगुल नव आबादस
 प्रानि हाचि तुलनय न नम
 ख्वद आबाद कर मो प्रार कादस ॥ स०
 कमविथ करिजि होश दीशि फसादस
 ऋषि अमि रऽशि चम निशि
 कऽमित्यो कमविथ वातख स्वादस ॥०
 चख त्राऽविथ चख त्राव कमादस
 नयि मंज लबख जोर बम
 तुल कदम स्वम पख वातख मुरादस ॥०
 गऽलिथ गरिजि फाल किन्न पौलादस
 सिन्न हालि जोर जोर दम
 मो खार शाह वात खार उस्तादस ॥०

म्य दप्योव बहाव वात्यम दादस
 करिहेम छोकन मरहम
 यस दिन तस यिन तोरय नादस ॥०
 दिमँ क्याह जवाब करिमँतिस वादस
 लोसुन दोह ह्योतनम
 गछिमय बखशिथ वछम इरादस ॥०
 दिलसऽफी छय मदि आज्ञादस
 नंदस छे बंदगी कम
 फरियाद-रस वात म्याऽनिस दादस ॥०



अर्ध रातन गुल्य गण्डिथ बोजि जार म्योन
 माऽज्य भवज्जी अज करतय चारँ म्योन
 आदि म्योन तय अन्त म्योन, आधार म्योन
 सायि म्योन तय सार म्योन शेहजार म्योन ॥
 अहमका तय अन् पढा तय जऽहिला
 गाँफिला तय शर्मिसारा नाँदिमा
 होल जिगस्क कास, ब्ययि अन्धकार म्योन ॥०
 जान्-निसारा ददि-दिल ह्यथ दर जिगर
 पापँ-कर्मव अऽर करँमँच छम मगर
 पापँ-घटि अर्थ रोटँ करुम, सरदार म्योन ॥०
 हांऽगिन्या छस म्वल म्योनय छुय पता
 अख कतरा चाऽअ नजराह छम स्यठा
 चय गोहर चय दोरँ शेहजार म्योन ॥०

रूस्यकैटा नाफ ह्यथ छस दर-बै-दर
 असलचिय माँज्य मा म्य छम बुनि केंह-खबर
 चँय ज्ञान तय चँय ह्य स्वक्तय - हार म्योन ॥०
 तंग - दस्ती शर्मि - सौरय तय हचर
 सोरबुन दोह अन्त रोस्तुय छुम सफर
 आद्य - शक्ती जान वोत्र इसरार म्योन ॥०
 साधवँय तय सन्तवँय तय ज्ञानियव
 यूगियव तय पण्डितव व्ययि पौटियव
 माँज्य लगयय कांसि नय रोस्ट भार म्योन ॥०
 दोह कलस प्यठ योर बै वाञ्चस शामनय
 मुर वऱ्हारिथ त्रिथ बै लाँयिथ जामँनँय
 खाऽलय बै नेरा यति भरिथ दरबार चोन ॥०
 दामनस तल माँज्य रछतम परदै सान
 लूक - पामन युथ न लगियय म्योन पान
 चँय सम्पत चँय ह्य भवसर तार म्योन ॥०
 साँयिला छुस शान्तरूपी वोत्र सदा
 अर्थ छोऽन तय न्यथनोन आमुत गदा
 शक्तिरूपी वोत्र चय यियिनय आर म्योन ॥०
 सर पथर पादन तल म्य त्रोवमय
 होल जिगरुक हाल पननुय भोवमय
 दयारूपी जय चय छुय बारबार म्योन ॥०



ईकुत म्य भास्योम पननिस पानस
 जानस जुव कियँ हवाल गव ॥

सरैं कोऽर यि संसार, कुनि छुस न बोठ तें तार
अपजुय छु बाज्ज्यगार बाज्जि खेलान

कील मो रावराव डाल धू पानस ॥०

दृश्यमान जगथ भान सोख्य छु अनजान

कर अनुसन्धान रठ मन त प्राण
सज्जलि डल करिथ सोनें लांकि ब्यह ठिकानस ॥०

सत्संग सबि ब्यह डबि डालानस

निः सग भाव बोज साज्ज सेतार

कल थाव छल मा गछि बेगानस ॥०

सोज बोज दिलकुय रोजू ठिकानस

न्यबरिमि राग रोज जाग ह्यथ न्यथ

पानय खबर ह्यू पतनिस पानस ॥०

संसार ज्यन द्वार सोख्य षठ व्यकार

गुण भागयि निशि छुस न मोकजार

चित विकास फोलैराव चित धू पानस ॥०

नेर न्यबर अछ अन्दर हेरि बोन कर नजर

जेर जबर युथ न गछि बेखबर

बोन धू पानस साँजल कर जहानस ॥०

मस्तान प्योमुत देवान गोमुत

लूकन निशि बेकैल बन्योमुत

गाऽर जाऽज ह्यू आस जान थाव पानस ॥०

लोकचार छु रावान असनैय तें गिन्दनैय

यौवनस मंज कति रिन्दनय छु होश

बुजरस वन्त क्यथ तीर खसि कामनस ॥०

दोऽर त्राव जोरव लारू ठिकानस
 मनसर मानसबल वुछ जाय
 राय नःथ ! यिय छय, त्राय थाव च पानस
 जानस जुव कयथ हवाल गव ॥



च शमा छख ब छुस परवान चोनुय
 म्य रोटमुत माऽज्य छुम दामान चोनुय ॥
 चवान छस लोल मस रातस दोहस बो
 बँ कोऽत गछ त्रऽविथँय मयखान चोनुय ॥०
 सिरिय चन्द्रम छु प्रजलान क्याह मुकुट चोन
 छु गाह त्रावान दोहय दस्तान चोनुय ॥०
 छु ब्रह्मा विष्णु महेश दस्त - वस्तय
 छु गणपत डेडि प्यठ दरवान चोनुय ॥०
 कृपा दृष्टि च करतम क्याह गछिय कम
 छु बोऽड दरबार आऽलीशान चोनुय ॥०
 चलान छिख दाऽद्य दुःख मुक्ती बनान छख
 यिमन अनुग्रह छु सपदान चोऽन भवऽनी ॥०
 बँ शरमन्द छस च्य अर्पण क्याह करय बो
 छु सोरय पान व्ययि जुव - जान चोनुय ॥०
 पराँवय गीत चाऽनी माऽज्य भवाऽनी
 परान कमि लोल छिय मस्तान चोनुय ॥०

जीवो संसार सोरय भ्रम छुय
 दम छय गनीमथ तँ छारुन दय,

हशानह यि जन्म तँ मशानह रावँवुन तँ
 वुनि छुय यावुन द्यवँ बनि तिय ॥
 ललछदि कल कऽर प्यठ रामँ - नावस
 अर्थँ लोल भावस वुछ क्वाह छु फल ।
 मन बुद्ध छि जँय यार मो मशरावुन तँ ॥०
 स्यदँमाऽल्य बुद्ध कऽर रुद इक् - आसन,
 वासना माऽरँन तँ छाऽरुन जल
 तमि लोलँ भावय किज दय छु छाऽरुन तँ ॥६
 कामँदीव जीनिथ पामन लगँ न
 तगिनँ पथ कुन बुजरस छल
 लूक सोन्त बोऽड गछि यलि यियि श्रावुण तँ ॥०
 दोह गछि नीरिथ फीरिथ यियि नँ
 भक्ती छि मुक्ती रोजा निष्कल ।
 आदन यार छय सु मो राव रावुन तँ ॥०
 कँह कुन गछि न यछि गछि छाऽरुन
 दारुन छु मनि मज्ज दय न्यमल ।
 क्वम कर वोम सय सु मो कल रावुन त ॥०
 पथ कालि वोवमुत छु अज छुख ति होरन
 सोरन छिन जाँह यिम कर्म फल ।
 कुज लाग वाऽणिअ डबि मुचरावुन त ॥०
 हान छम म्य कमन हज छस वनन
 खनन मन वाजि द्यव गलि मल ।
 श्री कृष्ण कव ह्योतथम छल रावुन त ॥०
 लूक हुन्द गेलुन वनान तस क्वा करि
 स्वरि युस अमर पान ओजँल ।
 लोति खोस्त लोस्त छय भोर लोऽचरावुन त ॥०

थरि पोश फवलनावतन यथ ज्ञनमस
वन कस जीवुन छु मन चंचल ।
दाऽद्वलद मटि छुय चयय बलरावुन त ॥०

द्वैत वोपशम शान्त शिव शाय ।
शिव छुस म्य क्चा छुम परवाय ॥
वैराग राग छुम मनसय
सन्तोष व्रच सज्य सनसय
ब्रह्म ऐक्युक छुम अभिप्राय — शिव०
हर - म्वख फेरनुक अभ्यास
व्यश्च साऽर करनुक अध्यास
त्रिभुवननाथ छुस न्यरमाय — शिव०

न्यरद्वन्द्व भस्मा मलिथय
द्वन्द्व रोस्त न्यरभय बनिथय
दचक अम्बर बे परवाय — शिव०
ग्वणत्रयि अव्यद्यायि निश दूर
काम, क्रूध, कति पोरन चूर
चयथ स्फार गाशस छुम न छाया — शिव०

सत् व्यचार दून्य छुम दजवन्य
चयथ व्यकास जोत छुस व्रजवन्य ।
संकल्प ज्युन दजान बेवाय — शिव०

त्रिगुणात्मचक माया त्रिशूल
समतायि तमि ताप त्रय छि दूर
अजपाजप डाँबर बजाय — शिव०

त्रिन्यथर दोखुन भैरव
 व्यश्चरूप छुस विरूपाख्य शिव
 पर - शक्ति संव्यव-हुन्द पाय - शिव०
 न्यवैर आसन दाखरिथ
 राग रोस शसन करिथ
 त्याग के त्याग सस्य न्यर् वोपाय - शिव०
 अभ्यास बंग चीटय चीटिय
 अनुभव नश सस्य ससतिथ
 छुम खुमार - स्वात्म - संव्यत् पाय - शिव०
 वृषबय व्यवीक छम वाहन
 फेरान साजलन त सालन
 सिंह - वाहन मायायि - छाया - शिव०
 छुस जटाजूट बय भैरव
 वृत्पथ, ध्यत्, लय त प्रणव
 छुम अनर्गल प्रवाह गगायि - शिव०
 विज्ञान बालुक छुम गरुड
 स्यद स्वरूप - संव्यत् छम अशीष,
 क्षीम-कुमार बाण ह्यय जायि-जाय-शिव०
 साक्षात् कीवल तें न्यर्मल
 ब्रह्मास्मीति भावना अचल
 शान्तस्वरूप प्राप्त प्रथम तें माय-शिव०

पोस्तं बूने मोस्तं वृज्जनोवुम
 ललनोवुम नारायण ॥

प्रयि तसँञ्जे हियितन म्यँ नाऽवँम
 पोश वथरोस अन्द गोशान ।
 रोशि यियिना होश रावँरोवुम ॥०
 वालँ पान तस पथ रावँ रोवुम
 हालँ कमि सुय नाव रटहन
 शिव-शम्भो शून्य बोलँनोवुम ॥०
 कामँ दीवस नाम लेखँ नोवम
 पामँ थऽविनम कर डेशन
 रुम रुम सुय राम रमनोवुम ॥०
 दारँ पथ दारँ वारँ वुछनोवुम
 जूनि छान्डुम मन्ज तारकन
 मारकन मंज लाल मऽचरोवुम ॥०
 लोल मंजले लाल ललनोवुम
 बोल नोवुम सुब शामन
 चीर्य सोवुम सुलि वुज्जनोवुम ॥०
 जीरवम कुय सीर वुज्जनोवुम
 फेर नोवुम तति हेरि बोऽन
 वेरि तसँञ्जि शेरि वातनोवुम ॥०
 ज्यव नार सँत्य वार छलनोवम
 तव लोलन नार शोलान
 अछव बूजुम कनव वुछनोवुम ॥०
 कन्द नाबद आरदनोवुम
 फन्द करिथ यूय अन्तन
 अन्द लोबमुत वोन्द फोलनोवुम ॥०

हंस दारय पान पर्जनोबुम
 प्रारि प्रारोस राम् रादन
 ब्रह्मसर पान सर करनोबुम ॥०
 अथवासय रास खेलनोबुम
 श्वास-ओश्वास नोऽन छु भासन
 सास भास्कर व्यकास भास नोबुम ॥०



लगय पादन बँ पाऽरी, राजिर्यनि रानिब्राऽरी ॥०
 वोथहा सुलमुले राज्ञा छि तुलमुले ।
 दोऽध हय भावस डुलि-डुले ॥राजिर्यनि०
 केह वसान डूंग नावन,
 रऽत्य रऽत्य फल छि प्रावन ।
 केह यिवान ननवाऽरी ॥राजिर्यनि०
 अलम चानि लछि बजय,
 केह छि लोचि केह छि थजय ।
 स्वर्ग बोनि अन्ध अन्दी ॥राजिर्यनि०
 साम छिय स्वनँ सन्दिय,
 भक्त्य छिय अन्ध अन्दिय ।
 लागय ब पोश गन्दी ॥राजिर्यनि०
 शाहमार छय च्य हटे,
 प्रजा छय च्य मटे ।
 यिमँ हा ब लटि लटे ॥राजिर्यनि०
 म्य छयना चाऽनी कल,
 जाय दिम म्य पादन तल
 वथरावय ब मखमल ॥राजिर्यनि०

चन्दन कुल मञ्ज नागस,
 बाँह्थ छख पोश बागस ।
 पम्पोश पूजि लागस ॥राजिर्यनि०
 दोधरहामि द्युत म्य तारा,
 बोजतम जार पारा ।
 कास्तम म्य लाचाँरी ॥राजिर्यनि०
 यस चोऽन नाव मशे,
 तस छय पश पशे ।
 नरकन मन्ज सु केशे ॥राजिर्यनि०
 युस चोन नाव स्वरे,
 तस क्या यम करे ।
 जाय चाऽज म्यानि घरे
 राजिर्यनि रानि बाँरि ॥

माऽज भवाऽज सँहस प्यठ सवार
 वन्तम चँ कोऽत दोराऽनी ।
 ठहराव कदम अख साथ
 हाल म्योन गछ त बोजाऽनी ॥
 यन प्यठ च्य निशि माऽज्य छचन व गोस
 तनेँ वोतुम च्य प्राराऽनी
 चानि दादि चटिमय कोह त बाल
 च्यय पथ बैँ गोस वऽज दिवाऽनी ॥माऽज्य०
 ओसुस बुछान चाने वतय
 लूसुस च्य पथ बैँ छाराऽनी
 छांय चाऽज प्ययम ना बुथि म्य माऽज्य
 ओसुस तऽथ्य बैँ प्राराऽनी ॥ मा०

चानि दादि वऽद्य वऽद्य अछिन म्य लऽज्य
 जून खून ओसुस हाराऽनी
 चानि डेशन बापत बँ माऽज्य
 पान ओसुस बँ माराऽनी ॥ मा०
 लाऽगिथ स्यठा संगदिल च्य माऽज्य
 अमि मंज क्याह च्य नेराँनी
 क्याह यिय छा माजि हुन्द स्वभाव
 छा दूर शुरिस सो त्रावाऽनी ॥०
 चाने ख्याल माऽज्य चोन स्वरूप
 ओसुस बँ ठीकरावाऽनी
 तथ कुन वुछ वुछ शर करम
 अज ताज ब गोस दान कडाऽनी ॥ मा०
 वोऽज गयोम योद मिलचार च्य सऽत्य
 अडँ खोर च क्याजि ठहराऽनी
 शोकसान बँ आसय ब्रोंठकुन
 दकँ दिथ च कोऽत छल चलाऽनी ॥ मा०
 छुस वनान च्य माऽज्य गुदरुन पनुन
 बूजिथ च ढाल कोऽत दिवाऽनी ?
 दक जद ब छुस प्योमुत पथर
 फक - होऽत च्य पथ ब लाराऽनी ॥०
 समयाह् स्यठा गोम माऽज्य च्य पथ
 पऽक्थ पऽक्थ ब गोस वोऽज थकाऽनी
 वोऽज च्य रोस अख क्षण यमि अपोर
 ठहरिथ छुसय न केहं ह्यकाऽनी ॥ माऽज्य०

वोत्र मँ गछ् म्य बालकस नजरि दूर
 ओरुत चय रोस छुस बनाऽनी
 बेकस तँ बेबस छुस बँ माऽज्य
 चयय रोस छुसय बँ तम्बलाऽनी — माऽज्य०
 या रोज म्य सऽत्य सऽत्य नतं म्य निम
 तोतँ तोतँ योतँ च फेराँनी
 पादन तल रठ म्य युथ चय सऽत्य
 बँति आसँ शोलँ माराऽनी — माऽज्य०
 अदँ चलयम चानि विरहुक म्य नार
 शेहजार गछ्चम म्य वाताऽनी
 चलनम दुख तँ दाऽच दूर गछ्चन
 सर्व सुख रोजय प्रावाऽनी — माऽज्य०

ॐ

तव च का किल न स्तुतिरम्बिके !
 सकलशब्दमयी किल ते तनुः ।
 निखिलमूर्तिषु मे भवदन्वयो
 मनसिजासु बहिः प्रसरासु च ॥
 इति विचिन्त्य शिवे ! शमिताशिवे !
 जगति जातमयत्नवशादिदम् ॥
 स्तुतिजपार्चनचिन्तनवर्जिता
 न खलु काचन कालकलास्ति मे ॥

—आचार्य अभिनवगुप्त



संख्यासमय दीप (चोंग) जॉलिथ

चांगि चांगि जग जूवन्ति

स्वर्ग पुण्यमाप्ति

इन्दैराजेंत्र कूर

चन्दरैनिस तख्तस प्यठ

म्बक्त वुरान ।

योतें योतें गछख

तति तति करिजि

म्याँनिय रँचय कथा ।



दीप (चोंग) छयतें करुन

क्षमस्व मम दीप त्वं

शम्भोर्नेत्रसमुद्भव !

तावत् शिवपुरीं गच्छ

यावत् प्रज्वालयते पुनः ॥



पतें कर ईश्वर - ध्यान ॥

154

—साभार—‘कमल’

